॥ श्रीः ॥

मन्त्रविद्या

मुद्रक व प्रकाशक—

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

—"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" प्रेस, कल्याण-बम्बई

[सन् १९५

॥ श्री ॥

देवादिदेवमहादेवप्रणीत-

मन्त्रविद्या ।

मुरादाबादनिवासिकात्यायनगोत्रोत्पन्नमिश्र
सुखानन्दसूरिसूनुपण्डितकन्हैयालाल
मिश्रकृतभाषाटीकासहित ।

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष-" लक्ष्मीवेंकटेश्वर " स्टीम्-प्रेस
कल्याण-मुंबई

संवत् २०१२, शके १८७७



मुद्रक और प्रकाशक-

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,

मालिक " लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर " स्टीम्-प्रेस, कल्याण बम्बई



ठकगण ।

युगमे एकमात्र तन्त्रही मनुष्योंको धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्त करानेवाले हैं, स्वयं भगवान् महादेवजी मुक्त कंठसे ऐसा कहगये हैं । तन्त्रोक्त मन्त्रोंके बलसे पूर्वकालिक ऋषिगण जो जो अद्भुत कार्य करगये हैं, उनका वर्णन करना कठिन है। जगत्में ऐसा कोई कार्य नहीं है जो शिवमुखविनिर्गत मन्त्रके बलसे सिद्ध न हो सके ! किन्तु सब कार्योंमेंही योग्य गुरुसे दीक्षित होकर उनकी आज्ञानुसार कार्य करना चाहिये, तब अवश्य सिद्धि प्राप्त होगी। पुस्तक तो केवल उपलक्षणमात्र है । इसी कारण मैंने सब साधारणके हितार्थ अनेक तन्त्रोंसे अनेक प्रकारके मोहिनीमन्त्र और विविध साधना इत्यादि संग्रह करके 'मन्त्रविद्या' नामक यह पुस्तक प्रकाशित की है और साथही सबके समझने योग्य प्रतिश्लोककी भाषाटीका भी लिखी है । तथा शुद्धतापरभी विशेष दृष्टि रक्खी गई है ।

अब यह पुस्तक सर्वस्वसहित अपने परम हितैषी, परमादार माननीय मुम्बईस्थ "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम प्रेसके मालिक तथा कल्याणस्थित लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेसके मालिक श्रीमान् सेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीके करकमलमें अर्पण करता हूं

यदि साधकमंडलीको इसके द्वारा कुछभी लाभ पहुँचा तो मैं अपना श्रम सफल समझूँगा । विनीतनिवेदक-

कन्हैयालालमिश्र मोहल्ला दानगरपुरा, मुरादाबाद सिटी

ज्येष्ठशुक्लपूर्णिमा सं० १९६८, रविवार ११।६।११

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ मन्त्रविद्याविषयानुक्रमणिका ।



विषया	पृष्ठांका
मंगलाचरणम्	१
कर्माणि	४
षट्कर्मणां लक्षणम्	५
षट्कर्मणां देवता	६
षट्कर्मणां दिङ्नियम	,,
षट्कर्मणामृतुकालादिनिर्णय	,,
षट्कर्मणां तिथिवारनियम	८
षट्कर्मणां नक्षत्रनियम	११
कालविशेषनिरूपणम्	१२
षट्कर्मणां लग्ननिरूपणम्	,,
षट्कर्मणां तत्त्वनियम	१३
षट्कर्मणां दिङ्नियम	१४
षट्कर्मणां वर्णभेद	१५
षट्कर्मणां सात्विकादौ	,,
वर्णविशेष चिन्तनम्	१
देवतानामुत्थितादय	,,
मन्त्रस्याधिष्ठातृदेवता	१६
मन्त्राणां वर्णसंख्याभेदे संज्ञा	१७
कार्यविशेषे योजनपल्लवादि निर्णय	१९
कर्मविशेषे हुँफट्वषडादीनि	२२
मन्त्राणां स्त्रीपुनपुंसकादि-निरूपणम्	२३
आसनानि	२५
विकटकुक्कुटासनयोर्लक्षणम्	२६
षण्मुद्रा	२७
देवध्यानम्	२८
षट्कर्मणां कुण्डनिर्णय	२९
षट्कर्मणां प्राधान्य निरूपणम्	३१
षट्कर्मणां कुम्भस्थापनम्	३२

्या	पृष्ठांका	विषया	पृष्ठांका
कुम्भ पूजानियम	३३	वशीकरणम्	६९
मालानिर्णय	३६	**स्तम्भनम् ।**	
वर्णमाला	४२	आसनस्तम्भनम्	७३
मालाया मणिनिर्णय	४६	अग्निस्तम्भनम्	७४
जपाङ्गुलेर्नियम	५२	शस्त्रस्तम्भनम्	,,
जपदिङ्नियम	५३	सैन्यस्तम्भनम्	७५
जपलक्षणम्	,,	सैन्यविमुखीकरणम्	७७
षट्कर्मजपनियम	४	जलस्तम्भनम्	७८
षट्कर्महोमकुण्डनियम	,,	मन्त्रस्तम्भनम्	,,
षट्कर्महवनद्रव्यनिरूपणम्	५५	नौकास्तम्भनम्	७९
वह्निजिह्वा	६०	मनुष्यस्तम्भनम्	,,
ह्वानामानि	६२	निद्रास्तम्भनम्	,,
होम व्यवस्था	६३	गोमहिष्यादिस्तम्भनम्	८०
स्रुक्स्रुवनियम	६४	मोहनम्	,,
होममुद्रा	६६	विद्वेषणम्	८२
शांतिकर्म ।		उच्चाटनम्	८४
ज्वरशांति	६८	आकर्षणम्	८५
कृत्याशांति	,,	मारणम्	८६

विषया॰	पृष्ठाङ्का	विषया	पृष्ठाङ्क
भूतिनासाधनम्	८८	षण्ढीकरण सुस्थीकरणच	१२०
अष्टनगिनीसाधनम्	९६	पादुकासाधनम्	१२३
किन्नरीसाधनम्	१०४	गुटिकासाधनम	१२८
मनोहारिणीसाधनम्	१०६	मृतसजीवनीविद्या	१२?
सुभगासाधनम्	१०७	रसायनविद्या	१३३
विशालनेत्रासाधनम्	१०८	सर्वौषधिकथनम्	१३७
सुरतप्रियासाधनम्	,,	विविधमत्रा	१३८
सुमुखीसाधनम्	१०९	मतवत्सादोषशांति	,,
दिवाकरमुखीसाधनम्	११०	वन्ध्यागर्भधारणम्	१३९
शवसाधन वा श्मशान साधनम्	१११	काकवंध्यादोषशांति	१४०
योगिनीसाधनम्	११३	वीरसाधनम्	१४१
दुष्टदमनम्	११८	पूजा याद्दि	१४२
चौरभयनिवारणम्	,	चितालक्षणम्	१४३
व्याघ्रराजभयादिनिवारणम्	,	अधिकारिनिरूपणम्	,,
युद्ध शत्रुदमनम्	११९	वीरार्दनमत्र	१४८
गजभयनिवारणम	,	जपनियम	१५२
व्याघ्रभयनिवारणम्	,,	जयदुर्गामत्र	१५३
		पुरश्चरणम्	१५६

विषया	पृष्ठाङ्का
अष्टनायिकासाधनम्।	
जयासाधनम्	१६०
विजयासाधनम्	,,
रतिप्रियासाधनम	१६१
कांचनकुण्डलीसिद्धि	,,
स्वर्णमालासिद्धि	१६२
जयावतीसिद्धि	,,
सुरंगिणीसिद्धि	१६२
विद्याविणासिद्धि	,,
डाकिनीसिद्धि	१६४
भूतसिद्धिप्रेतसिद्धि	,,
पिशाचपिशाचीसिद्धि	१६५
मृत्युकालज्ञानम्	१६६
आत्मारक्षा	१६७
वृश्चिकदूरीकरणम्	१६८
सर्पदूरीकरणम्	,,
मक्षिकादूरीकरणम्	,,
मूषकदूरीकरणम्	१६९
मशकदूरीकरणम्	१६९
भूतविघ्ननिवारण बालग्रहदूरीकरण च	१७०
सुखप्रसवमन्त्र	१७१
अदृश्यम्	१७२
जलोपरि भ्रमणम्	१७३
मनस्कामनासिद्धि	१७४
परिशिष्टम्।	
वशीकरणम्	,,
ध्यानम्	१७४
गुप्तमन्त्रा।	
शूकरशब्दज्ञानम्	१८५
श्वशब्द ज्ञानम् —	१८६
खञ्जनसिद्धि	१८७
शृगालसाधनम्	,,
भकसाधनम्	१९१
ग्रीवासाधनम्	१९२
गोसाधनम्	१९३

विषया	पृष्ठाङ्का	विषया	पृष्ठाङ्क
मृगशब्दज्ञानम्	१९४	षोडशाकवचम्	,,
मेषशब्दज्ञानम्	१९५	सर्व याधिविघ्नप्रशमन कवचम्	२१०
कङ्कालसिद्धि	१९६	गृहगण्डीगृहरक्षा	२११
काकशब्दज्ञानम्	१९८	क्रोधशांति	,,
जलचरपाक्षिसिद्धि	१९९	द्वारोद्घाटनम्	२१३
मयूरसिद्धि	२००	हिंस्रजन्तुस्तम्भनम्	,
विद्याधरसिद्धि	२०२	नारीसौभाग्यकरणम्	२१४
ककशब्दज्ञानम्	२०३	आपन्निस्तारणम्	,
चटकशब्दज्ञानम्	,,	इच्छानुसारदेहपरिवर्त्तनम्	२१५
शुकसिद्धि	२०४	द्रव्यविनाशनम्	२१६
सारससिद्धि	२०५	नष्टद्रव्यलाभ	,
कपोतासिद्धि	,,	गुरुदर्शनम्	२१७
वीर्यामोघकरणम्	२०७	त्रिकालदर्शनम्	,,
बालकक्रन्दननिवारक कवचम्	२०८	द्रव्यशोधनम्	२१८
देवविद्यालाभ	,,	शब्दसाधनम्	२१९

इति विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीहरि ।

देवाधिदेवमहादेवप्रणीत—

मन्त्रविद्या ।



दोहा ।

ज्योति जागती जगतमें, जननि जयाजयकार ।
काली कर नरकर उबर, भक्त प यो मँझधार ॥
जय जय अम्बे सुखकरन, विघ्नविनाशनहार ।
मिश्र कन्हैयालालकू, सकल बीज नार ॥
कर प्रणाम तुव चरनमें, हरि गुरु गौरि मनाय ।
ग्रन्थरचनके समयमें, सब मिलि करहु सहाय ॥

मङ्गलाचरणम् ।

क्रोधाज्ज्वलन्ती ज्वलनं वमन्ती सृष्टिं दहन्तं दितिजं ग्रसन्तीम् । भीमं नदन्ती प्रणमामि कृत्या रोरूयमाणा क्षुधयोग्रकालीम् ॥ १ ॥

जो मारे क्रोधके जल रही है, जिनके मुखसे निरन्तर अग्नि निकलती रहती है जो सृष्टिके भस्म कर देनेको उद्यत है जो दानवकुलको ग्रास करती है, जिनका गर्जन अत्यन्त भयंकर है, जो भूखके मारे रोती रहती है उन उग्रकाली कृत्या देवीको नमस्कार करता हूं॥ १॥

शाम्भवाज्जामलाच्चैव तथा कालोत्तरादपि।
काकूलाद्राजतन्त्राच्च उड्डीशाद्धातुलात्तथा॥
सिद्धयोगीश्वरीतन्त्रान्मौलाच्च सिद्धशाबरात्।
स्वच्छन्दान्मालिनीतन्त्राद्भूतडामरकात्तथा॥
सर्वतन्त्रात्समाकृष्य मन्त्रविद्या मयोच्यते॥ २॥

शाम्भव, जामल, कालोत्तर, काकूल, राजतन्त्र, उड्डीश, धातुल, सिद्धयोगीश्वरी, मौल, सिद्ध, शाबर, स्वच्छन्द, मालिनीतन्त्र, भूतडामर और अपरापर समस्त तंत्रोंसे संग्रह करके यह मोहिनी मन्त्रविद्या कही जाती है॥ २॥

इत्येवमागमोक्तञ्च वक्त्राद्वक्रेण यच्छ्रुतम्।
एतत्सर्वं समुद्धृत्य दध्नो घृतमिवादरात्॥
साधकाना हितार्थाय मन्त्रखण्डमिहोच्यते॥ ३॥

अनेक तन्त्र और आगममे जिस प्रकार वर्णित है और परस्पर सिद्ध पुरुषोके मुखसे जैसा सुनागया है, वह सब दहीसे घृत निकालनेकी समान उद्धृत करके साधकजनोंके हितार्थ कहा जाता है ॥ ३ ॥

वश्यमाकर्षणं मोहस्तथोच्चाटनमारणे ।
विद्वेषो व्याधिकरणं पशुसस्यार्थनाशनम् ॥
कौतुकचेन्द्रजालञ्च यक्षिणीमन्त्रसाधनम् ।
चेटकञ्चाञ्जनं दिव्यमदृश्यं पादुकागतिः ॥
गुटिका खेचरत्वञ्च मृतसञ्जीवनादिकम् ।
सुसाध्यं प्रत्ययोपेतं साधकानां हितं प्रियम् ॥
सर्वशास्त्रात्समाकृष्य प्रकटीक्रियते मया ॥ ४ ॥

मैं समस्त तन्त्रशास्त्रोंमे संग्रह करके साधक जनोंको हित और प्रिय साधन करनेके योग्य वशीकरण, आकर्षण, मोहन, उच्चाटन, मारण, विद्वेषण, व्याधिकरण, पशु सस्य (धान्य) और अर्थनाश, कौतुक, इन्द्रजाल यक्षिणीसाधन और चेटिकासाधन, दिव्य अञ्जनादि अदृश्यकरण, पादुकासिद्धि, गुटिकासिद्धि आकाशमें गमन, मृतसञ्जीवनी विद्या और अन्यान्य जो प्रत्ययके योग्य हैं, उनको प्रकाशित करतेहैं ॥ ४ ॥

पुस्तके लिखिता विद्या येन सुन्दरि जप्यते ।
सिद्धिर्न जायते देवि कल्पकोटिशतैरपि ॥
गुरु विना न शास्त्रेऽस्मिन्नधिकार कथञ्चन॥५॥

श्रीमहादेवजीने श्रीपार्वतीजीसे कहा है कि सुन्दरी ? जो पुरुष पुस्तकमे लिखी विद्याको देखकर मन्त्र जपता है, उसका करोड कल्पमेभी सिद्धि मिलनेकी सभावना नहीं है, गुरुका उपदेश विना लिये इस शास्त्रमे अधिकारी नहीं हो सकता ॥५॥

अग्रेऽभिधास्येशास्त्रेऽस्मिन्सम्यक्षट्कर्मलक्षणम्।
सर्वतन्त्रानुसारेण प्रयोगफलसिद्धिदम् ॥ ६ ॥

सबसे पहिले, सर्वतन्त्रानुसार षट्कर्मके लक्षण प्रकाशित होते है, यथाविधि प्रयोग करनेसे कार्यकी सिद्धि होती है ॥ ६॥

अथ कर्माणि ।

शान्तिवश्यस्तम्भनानि विद्वेषोच्चाटने तथा ॥
मारणान्तानि शंसन्ति षट् कर्माणि मनीषिण ७॥

शांतिकर्म, वशीकरण, स्तम्भन, विद्वेषण, उच्चाटन और मारण बुद्धिमान् पुरुष इ ही छ कार्योको षट् कर्म कहते है ॥ ७॥

अथ षट्कर्मणां लक्षणम्।

रोगकृत्याग्रहादीनां निरासः शान्तिरीरिता।
वश्यं जनानां सर्वेषां विधेयत्वमुदीरितम्॥
प्रवृत्तिरोधः सर्वेषां स्तम्भनं समुदाहृतम्।
स्निग्धानां द्वेषजननं मिथोविद्वेषणं मतम्॥
उच्चाटनं स्वदेशादेर्भ्रंशनं परिकीर्तितम्।
प्राणिनां प्राणहरणं मारणं समुदाहृतम्॥
स्वदेवतादिकालादीन् ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ८

जिसके द्वारा रोग, कृत्या और ग्रह इत्यादिके दोषकी शांति होती है उसको शांतिकर्म कहते है। जिसके द्वारा जीवोंको वशीभूत कियाजाता है उसका नाम वशीकरण है, जिसके द्वारा जीवोंकी प्रवृत्तिका रोध होता है, उस कार्यको स्तंभन कहते है। आपसमें मित्रभावापन्न पुरुषोंकी प्रीति नष्ट करनेमें उस प्रक्रियाको विद्वेष कहते है। जिसके द्वारा किसी मनुष्यको अपने देश इत्यादिसे दूर किया जाय उसको उच्चाटन कहते है। जिसके द्वारा जीवका प्राणनाश किया जाय उसका नाम मारण है। यदि यह सब कार्य करने हों तो

देवता काल और दिक् इत्यादिको जानकर फिर कार्यम प्रवृत्त होना चाहिये ॥ ८ ॥

अथ षट्कर्मणा देवता ।

रतिर्वाणी रमा ज्येष्ठा दुर्गा काली यथाक्रमात् ।
षट्कर्मदेवता प्रोक्ता कर्मादौ ता प्रपूजयेत ॥९॥

रति शांतिकर्मकी, वाणी वशीकरणकी, रमा स्तंभनकी, ज्येष्ठा विद्वेषणकी, दुर्गा उच्चाटनकी और भद्रकाली मारण कमकी देवता कही गई है, कर्मके आरम्भमें इसकी पूजा करनी चाहिये ॥ ९ ॥

अथ षट्कर्मणा दिङ्नियम ।

ईशचन्द्रेन्द्रनिर्ऋतिवाय्वग्नीना दिशो मता ।
यथाक्रम षट्क्रियासु प्रशस्ता दिश ईरिता १०॥

ईशानदिशा शांतिकममे उत्तरदिशा वशीकरणमें, पूर्व दिशा स्तंभनमे नैऋतदिशा विद्वेषणम, वायुकोण उच्चाटनम और अग्निकोण मारणकायम प्रशस्त है ॥ १ ॥

अथ षट्कर्मणामृतुकालादिनिर्णय ।

सूर्योदयात्समारभ्य घटिकादशक क्रमात् ।
ऋतव स्युर्वसन्ताद्या अहोरात्र दिने दिने ॥

वसन्तग्रीष्मवर्षाश्च शरद्धेमन्तशैशिरा ॥ ११ ॥

एक अहोरात्र (दिनरात) मे अरुणोदयसे आरभ करके दश दश घडीके हिसाबसे वसन्तादि छ ऋतु होती है, अर्थात् सूर्योदयसे आरभ करके दश घडीतक वसन्त, फिर दश घडी ग्रीष्म, फिर दश घडी वर्षा, फिर दश घडी शरद, फिर दश घडी हेमन्त और सबसे अतकी दश घडी शीत ऋतु कही गई है ॥ ११ ॥

अन्यच्च।

वसन्तश्चैव पूर्वाह्णे ग्रीष्मो मध्याह्न उच्यते।
वर्षा ज्ञेया पराह्णे तु प्रदोषे शिशिरः स्मृतः ॥
अर्द्धरात्रौ शरत्काल उषा हेमन्त उच्यते।
अन्ये च ऋतवः सर्वे सायाह्नादौ प्रकीर्तिताः ॥१२॥

अन्य प्रकारसेभी ऋतुका नियम वर्णित है। दिनका पूर्व भाग वसन्त कहा गया है। इसी प्रकार मध्याह्न ग्रीष्म, पराह्ण वर्षा, सन्ध्याकाल शीत, आधीरात शरत् और उषाकाल हेमन्त ऋतु कही गई है ॥ १२ ॥

हेमन्तः शान्तिके प्रोक्तो वसन्तो वश्यकर्मणि।

शिशिरं स्तम्भने ज्ञेयो ग्रीष्मे विद्वेष ईरितः ॥
प्रावृडुच्चाटने ज्ञेया शरन्मारणकर्मणि ॥ १३ ॥

शांतिकर्म हेमंतमें, वशीकरण वसंतमें, स्तंभन शिशिरमें विद्वेषण ग्रीष्ममें, उच्चाटन वर्षामें और मारण कर्म शरद् ऋतुमें करना चाहिये ॥ १३ ॥

अथ षट्कर्मणां तिथिवारनियमः ।

प्रयोक्तव्यानि विधिना तच्च सम्प्रोच्यतेऽधुना ।
द्वितीया च तृतीया च पञ्चमी सप्तमी तथा ॥
बुधेज्यकाव्यसोमाश्च शान्तिकर्मणि कीर्तिताः ।
गुरुचन्द्रयुता षष्ठी चतुर्थी च त्रयोदशी ॥
नवमी पौष्टिके शस्ता चाष्टमी दशमी तथा ।
पुष्टिर्धनजनादीनां वर्द्धनं परिकीर्तितम् ॥ १४॥

अब षट्कर्मकी तिथिवारका नियम कहा जाता है। शांतिकार्यमें द्वोयज, तीज, पंचमी और सप्तमी तिथि, एवं बुध, बृहस्पति, शुक्र और सोमवार प्रशस्त है। पुष्टिकर्ममें गुरु वा सोमवारसे युक्त छठ, चौथ, तेरस, नौमी, अष्टमी वा दशमी तिथि उत्तम है। जिससे धन जन इत्यादिकी वृद्धि हो उसका नाम पुष्टिकर्म है ॥ १४ ॥

दशम्येकादशी चैव भानुशुक्रदिने तथा ।
आकर्पणे त्वमावस्या नवमी प्रतिपत्तथा ॥
पार्णमासी मन्दभानुयुक्ता विद्वेषकर्मणि ।
षष्ठी चतुर्दशी तद्वदष्टमी मन्दवारका ॥
उच्चाटने तिथि शस्ता प्रदोषे सुविशेषत ॥१८॥

आकर्पणकार्यम दशमी, एकादशी, अमावस्या, नवमी वा पडवा तिथि एव रवि वा शुक्रवार प्रशस्त है। शनि वा रवि वारयुक्त पूर्णिमा तिथिमे विद्वेषण कार्य करना चाहिये। उच्चाटनकर्म शनिवारमे एव छठ, चौदश आर अष्टमी तिथिमे करना चाहिये। विशेषकर उच्चाटनकर्ममे प्रदोषकाल प्रशस्त है ॥ १८ ॥

चतुर्दश्यष्टमी कृष्णा अमावस्या तथैव च ।
मन्दारार्कदिनोपेता शस्ता मारणकर्मणि ॥
बुधचन्द्रदिनोपेता पञ्चमी दशमी तथा ।
पार्णमासी च निज्ञया तिथि स्तम्भनकर्मणि १६॥

मारणकर्ममे कृष्णा चौदश, अष्टमी वा अमावस्या तिथि, एव शनि, कुज (मगलवार) आर रविवार प्रशस्त है।

स्तम्भनकर्म बुध वा सोमवारसे युक्त पंचमी, दशमी वा पूर्णिमा तिथिमे करना चाहिये ॥ १६ ॥

शुभं शुभोदये कुर्यादशुभान्यशुभोदये ।
रौद्रकर्माणि रिक्तार्के मृत्युयोगे च मारणम् ॥ १७ ॥

जिस समय शुभग्रहका उदय हो तब शान्तिपुष्टि इत्यादि शुभकर्मका अनुष्ठान करै और जब अशुभ ग्रहका उदय हो तब मारणादि अशुभ कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये । रविवार रिक्तातिथिमे विद्वेषण और उच्चाटनादि क्रूर कर्म और मृत्युयोगमें मारणकर्म करना चाहिये ॥ १७ ॥

अथ षट्कर्मणां नक्षत्रनियमः ।

स्तम्भनं मोहनं चैव वशीकरणमुत्तमम् ।
माहेन्द्रे वारुणे चैव कर्तव्यमिह सिद्धिदम् ॥
ज्येष्ठा चैवोत्तराषाढा चानुराधा च रोहिणी ।
माहेन्द्रमण्डलं ह्येतत्सर्वकर्मप्रसिद्धिदम् ॥
स्यादुत्तराभाद्रपदा मूला शतभिषा तथा ।
पूर्वभाद्रपदाश्लेषा ज्ञेया वारुणमध्यगा ॥
पूर्वाषाढा तु तत्कर्मसिद्धिदा शम्भुना स्मृता ॥ १८ ॥

माहेंद्र और वारुणमण्डलमध्यगत नक्षत्रमें स्तंभन, मोहन और वशीकरण कार्य करने पर वह सिद्ध होता है । ज्येष्ठा, उत्तराषाढा, अनुराधा और रोहिणी यह चार नक्षत्र माहेन्द्रमण्डलमध्यगत एवं उत्तरभाद्रपदा, मूल, शतभिषा, पूर्वभाद्रपदा, आश्लेषा यह पांच नक्षत्र वारुणमण्डलस्थ है । परंतु श्रीमहादेवजीने कहा है कि इनके अतिरिक्त पूर्वाषाढा नक्षत्रमेंभी यह सब कार्य करनेपर वे सफल होते है ॥ १८ ॥

विद्वेषोच्चाटनं वह्निवायुयोगे च कारयेत् ।
स्वाती हस्तो मृगशिरा चित्रा चोत्तरफाल्गुनी ॥
पुष्य पुनर्वसुर्वह्निमण्डलस्था प्रकीर्त्तिता ।
अश्विनी भरणी आर्द्रा धनिष्ठा श्रवण मघा ॥
विशाखा कृत्तिका पूर्वफाल्गुनी रेवती तथा ।
वायुमण्डलमध्यस्थास्तत्तत्कर्मप्रसिद्धिदा ॥१९॥

वह्निमण्डलगत और वायुमण्डलगत नक्षत्रमें विद्वेषण और उच्चाटन कर्म करे । स्वाती, हस्त, मृगशिरा, चित्रा, उत्तरफाल्गुनी, पुष्य और पुनर्वसु यह सात नक्षत्र अग्निमण्डलमध्यगत है और अश्विनी, भरणी आर्द्रा धनिष्ठा श्रवण, मघा, विशाखा, कृत्तिका पूर्वफाल्गुनी और रेवती यह दश नक्षत्र वायुमण्डलमध्यगत

कहेगये है। जिस जिस कर्ममे जो जो कर्म प्रशस्त है वह वह कर्म उसी उसी नक्षत्रमे करना चाहिये। ऐसा होनेसेही कार्य सफल होता है ॥ १९ ॥

अथ कालविशेषनिरूपणम् ।

वश्यं पूर्वेऽह्नि मध्याह्ने विद्वेषोच्चाटनं तथा ।
शांतिपुष्टी दिनस्याते संध्याकाले च मारणम् २०

वशीकरणकर्म दिनके पूर्वभागमे, विद्वेषण और उच्चाटन मध्यभागमे शांति और पुष्टिकर्म शेषभागमे और मारण कर्म संध्याकालमे करसकता है ॥ २० ॥

अथ षट्कर्मणां लग्ननिरूपणम् ।

कुर्याच्च स्तम्भनं कर्म हर्यक्षे वृश्चिकोदये ।
द्वेषोच्चाटादिकं कर्म कुलीरे वा तुलोदये ॥
मेषकन्याधनुर्मीने वश्यशान्तिकपौष्टिकम् ।
मारणोच्चाटने चासौ रिपुभेदविनिग्रहे ॥ २१ ॥

स्तंभनकर्म सिंह वा वृश्चिक लग्नमे विद्वेषण और उच्चाटन कर्म कर्कट वा तुला लग्नमे, वश्य कर्म मेष, कन्या, धनु वा मीनलग्नमे, शांतिपुष्टिकर्म मारण उच्चाटन और शत्रुनिवारण इत्यादि कर्म मेष, कन्या, धनु और मीनलग्नमे करे ॥ २१ ॥

अथ षट्कर्मणां तत्त्वनियम ।

जलं शान्तिविधौ शस्तं वश्ये वह्निरुदीरित ।
स्तम्भने पृथिवी शस्ता विद्वेषे व्योम कीर्तितम्॥
उच्चाटने स्मृतो वायुर्भूम्यग्निर्मारणे मत ।
तत्तद्भूतोदये सम्यक् तत्तन्मण्डलसंयुतम् ॥
तत्तत्कर्म विधातव्यं मन्त्रिणा निश्चितात्मना॥२२॥

शांतिकर्म जलतत्त्वके उदयमें, वश्यकर्म अग्नितत्त्वके उदयमें स्तंभन पृथ्वीतत्त्वके उदयकालमें, विद्वेषण गगनतत्त्वके उदयमें उच्चाटन वायुतत्त्वके उदयकालमें, एवं मारणकर्म पृथ्वीतत्त्व वा अग्नितत्त्वके उदयकालमें करना चाहिये । इस प्रकार तत्त्वोदयका विचारकरके जिस तत्त्वके उदयमें जो जो कार्य कर्तव्य है उस उस तत्त्वके उदयकालमें उस उस कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये । कार्यके समय तत्कालीन तत्त्वका मण्डल करके अनुष्ठान करे ॥ २२ ॥

परचक्रभयादौ वा तीव्ररूपे महाभये ।
न कालनियमो गम्यः प्रयोगाणां कदाचन॥२३॥

१ तत्त्वके विषयको भावना हो तो "पवनविजयस्वरोदय" नामक ग्रंथ श्रीवेंकटेश्वर स्टीम् प्रेस मुंबईसे मंगाकर पढिये ।

शत्रुका भय अथवा अन्य किसी प्रकारका महाभय उपस्थित होनेपर उसको दूर करनेके लिये कालाकालका विचार न करे। इस प्रकारकी विपदूके उपस्थित होनेपर तत्काल शांतिका विधान करे ॥ २३ ॥

अथ षट्कर्मणां दिङ्नियमः ।

तन्त्रान्तरे ।

इन्द्रे स्तम्भनमुच्चाटमग्नौ सर्वाभिचारकम् ।
याम्ये रक्षसि विद्वेषं शान्तिर्वारुणवायवे ॥
कुलोत्सादो मरुद्भागे यक्षे कलहविग्रहौ ।
कुर्वीत नोदितं कर्म यच्चान्यद्ब्रह्मण पदे ॥ २४॥

किसी किसी तन्त्रमें वर्णित है कि स्तम्भन उच्चाटनकार्यमें पूर्वदिशा, समस्त अभिचार कार्योंमें अग्निकोण, विद्वेषणमें दक्षिण और नैर्ऋत, शांतिकर्ममें पश्चिम दिशा और वायुकोण, कुलोच्छेदमें वायुकोण और कलहविग्रहादि (लडाइ) इत्यादिमें नैर्ऋतकोण प्रशस्त है। जिस जिस कर्मका विषय इस श्लोकमें नहीं कहा है, उस उस कर्मको ईशानकोणमें करना चाहिये ॥ २४ ॥

अथ षट्कर्मणां वर्णभेदः ।

वश्ये चाकर्षणे क्षोभे रक्तवर्णं विचिन्तयेत् ।
निर्विषीकरणे शान्तौ पुष्टौ चाप्यायने सितम् ॥
पीतं स्तम्भनकार्येषु धूम्रमुच्चाटने स्मृतम् ।
उन्मादे शक्रगोपाभं कृष्णवर्णं तु मारणे ॥ २९ ॥

वश्यकर्म, आकर्षण और क्षोभ इन तीन कार्योंमें देवताको लोहित वर्ण, शांति विषदूरीकरण और पुष्टि इन तीन कार्यमें शुभ्रवर्ण, स्तंभनमें पीतवर्ण, उच्चाटनमें धूम्रवर्ण उन्मादमें लोहितवर्ण और मारण कर्ममें देवताका कृष्णवर्ण ध्यान करना चाहिये ॥ २९ ॥

अथ देवतानामुत्थितादयः ।

उत्थितं मारणे ध्यायेत्सुप्तमुच्चाटने प्रभुम् ।
उपविष्टं सुरेशानि सर्वत्रैव विचिन्तयेत् ॥ २६ ॥

मारण कर्ममें देवताको उत्थित, उच्चाटनमें निद्रित (सोया हुआ) और अपरापर कार्योंमें तत्तत् देवताको बैठा हुआ ध्यान करे ॥ २६ ॥

अथ षट्कर्मणां सात्त्विकादिवर्णानुरोधश्चिन्तनम् ।

आसीनं श्वेतरूपं तु दामोत्तिक्रमसुत्तमम् ।

राजसे पीतवर्णं तु रक्त श्याममुदाहृतम् ।
यानमार्गस्थितं तूर्णं कृष्णं तामस उच्यते ॥२७॥

सात्त्विककर्ममें समाासीन और शुभ्रवर्ण, राजस कर्ममें पीत, लोहित, वा श्याम और तामस कार्यमें यानमार्गगत और कृष्णवर्ण कथित है ॥ २७ ॥

सात्त्विकं मोक्षकामानां राजसं राज्यमिच्छताम् ।
तामसं शत्रुनाशार्थं सर्वव्याधिनिवारणम् ॥
सर्वोपद्रवशान्त्यर्थं तामसं तु विचिन्तयेत् ॥२८॥

मुक्तिकी कामना करनेवाला मनुष्य सात्त्विक कर्मका और राज्यकी अभिलाषा करनेवाला मनुष्य राजस कर्मका अनुष्ठान करे । शत्रुका नाश करनेके लिये और समस्त पीडाओंकी शांतिके लिये तथा सब प्रकारका उपद्रव निवारणके निमित्त तामस कर्मका आचरण करना चाहिये ॥ २८ ॥

अथ म त्रस्याधिष्ठातृदेवता ।

रुद्रार्कताक्ष्र्यगन्धर्वयक्षरक्षोऽहिकिन्नराः ।
पिशाचभूतदैत्येन्द्रसिद्धाः किंपुरुषासुराः ॥
सर्वेषामपि मन्त्राणां एते पञ्चदश स्मृताः ।
केचिदष्टादश प्राहुः समग्राणां नृणां मताः ॥२९॥

रुद्र मङ्गल, गरुड, ग धव, यक्ष, रक्ष, भुजग, किन्नर, पिशाच, भूत, दैत्य, इन्द्र, सिद्ध, विद्याधर असुर यह प द्रह त्वतामन्त्राक अधिष्ठाता हे । काइ २ अठारह त्वना बतात हे ॥२९॥

अथ म त्राणा वणमरयाभदे सज्ञा ।

एकमन्त्रात्मको वर्ण कर्तरी समुदाहृत ।
वर्णाभ्यां सूचिका प्रोक्ता गमसरव्यैस्तु मुद्गर ॥
चतुर्भिर्मुसल रव्यातो म त्रसरव्याविचारणे । -
क्रर ानि पञ्चवर्णैं षटभिर्वर्णैस्तु शृरवल ॥
क्रकच सप्तभि शूलश्चाष्टभिर्नवभि पवि ।
शक्तिश्च दशभिश्चैकादशभि परशु स्मृत ॥
चक्र द्वादशभिर्वर्णे कुलिश स्यात्त्रयादशे ।
चतुर्दशैस्तु नाराचो भुशुण्डी पश्चवर्णक ॥
पद्म षोडशभिर्वर्णैर्मन्त्रच्छेदे तु कर्त्तरी ।
भेदे तु कथिता सूची भञ्जने मुद्गर स्मृत ॥
मुसल आभगे । र शृरवल क्रकचश्छिदि ।
पात शूल पवि स्तम्भ शक्तिबन्ध च कर्मणि ॥

विद्वेषे परशुचक्र सर्वकर्मसु योजयेत् ।
उत्सादे कुलिश शस्तो नाराच सैन्यभेदने ॥
भुशुण्डी मारणे पद्म शान्तिपुष्टयादिकर्मणि ।
चक्रतु रञ्जक कर्म सर्वत्रैव प्रयोजयेत् ॥
क्वचिदेव दर्शितन्तु वामाचारविरोधनम् ।
सहस्राक्षरमन्त्रादे प्रयोगो विधिदर्शनात् ॥ ३० ॥

एक वर्णात्मक मन्त्रको कर्तरी, द्व्यक्षर मन्त्रको सूची, त्र्यक्षरको मुद्गर, चतुरक्षरको मुसल, पञ्चाक्षरको क्रूर, षडक्षरको शृंखल, सप्त वर्णात्मक मन्त्रको क्रकच, अष्टाक्षरको शूल, नवाक्षरको वज्र, दशाक्षरको शक्ति, एकादशाक्षरको परशु, द्वादशाक्षरको चक्र त्रयोदशाक्षरको कुलिश, चतुर्दशाक्षरको नाराच, पञ्चदशाक्षरको भुशुंडी, और षोडशाक्षर मन्त्रको पद्म कहते है । मन्त्रच्छेदमे कर्तरी, भेदकर्ममे सूची भंजनमे मुद्गर, क्षोभणमे मुसल, बन्धनमें शृंखल, छेदनमे क्रकच, घातकर्ममे शूल, स्तम्भनमे वज्र बन्धनमे शक्ति विद्वेषमे परशु सर्वकर्ममे चक्र उत्सादनमे कुलिश, सैन्यभेदमे नाराच, मारणमे भुशुंडी एवं शक्ति और शान्ति पुष्टि इत्यादि कर्ममे पद्म मन्त्र प्रशस्त है रञ्जक कर्ममे चक्र प्रशस्त है इन सब कर्मोंको वामचारविरोधी जानना, सहस्र अक्षरवाले मन्त्रादिक प्रयोगमे विधि दर्शनम ॥ ३० ॥

अथ कार्यविशेषे योजनपल्लवादिनिर्णय ।

पञ्चाशद्वर्णरूपात्मा मातृका परमेश्वरी ।
तत्रोत्पन्ना महाकृत्या त्रैलोक्यभयदायिनी ॥
यथाकामो जप कार्यो मन्त्राणामपि मे शृणु ॥३१

मातृका देवी पञ्चाशद्वर्णरूपिणी है, इन सब वर्णोंसे उत्पन्न मन्त्रोंके द्वारा तीनों लोकोंका भय होता है । और मनुष्यगण जिस इच्छासे मन्त्र जपते हैं वह उसी इच्छासे सिद्ध होती है ॥ ३१ ॥

मन्त्रादौ योजन नाम्न पल्लव परिकीर्त्तित ।
मारणे विश्वसंहार ग्रहभूतनिवारणे ॥
उच्चाटने च विद्वेषे पल्लव परिकीर्त्तित ।
मन्त्रान्ते नामसंस्थान योग इत्यभिधीयते ॥
शान्तिके पौष्टिके वश्ये प्रायश्चित्तविशोधने ।
मोहने दीपने योग प्रयुञ्जन्ति मनीषिण ॥
स्तम्भनोच्चाटनोच्छेदविद्वेषेषु स चोच्यते ॥३२॥

समस्त मन्त्र दो प्रकारके हैं पल्लव और योजन । जिस मन्त्रके आदिमें नामकी योजना हो, उसका नाम पल्लव है। मारण,

सहार, ग्रहभूतवारण, उच्चाटन और विद्वेषण इन सब कार्यामे पल्लव म त्रही प्रशस्त है जिस म त्रके अ तमे नामकी योजना हो उसको योजन मत्र कहते है । शा ति, पुष्टि, वशीकरण, प्रायश्चित्त मोहन और दीपन इन सब कार्योंमे योजन मत्रही प्रशस्त है । इनके अतिरिक्त स्तभन, उच्चाटन, उच्छेद और विद्वेषणमे भी योजन म त्रका प्रयोग करे ॥ ३२ ॥

नाम्न आद्यन्तमध्येषु मन्त्र स्याद्रोधसञ्ज्ञक ।
मन्त्राभिमुख्यकरणे सर्वव्याधिनिवारणे ॥
ज्वरग्रहविषाद्यार्त्तिशान्तिकेषु स चोच्यते ।
सम्मोहने स एवाथ मन्त्राणामक्षराणि च ॥३३॥

नामके प्रथम, मध्य और अ तमे म त्र होनसे उसका नाम रोध है । अभिमुखीकरण, सब प्रकार पीडाविदूरण और ज्वर, ग्रह विषादिकी शा ति इन सब कार्योंमें यही म त्र प्रशस्त है । समोहन कर्ममें भी रोधमत्रका प्रयोग करे ॥ ३३ ॥

एकैकान्तारित यत्त ग्रथन परिकीर्तितम् ।
तच्छान्तिके विधातव्य नामाद्यन्ते यथा मनु ॥
तत्सपुट भवेत्तत्त कीलने परिभाषितम् ।
स्तम्भे मृत्युञ्जये इच्छद्रक्षादिषु च सपुटम् ॥३४

नामके एक एक अक्षरके पीछे मन्त्र आनेसे उसको गर्भ नाम मन्त्र है । शान्तिकर्ममें इस मन्त्रका प्रयोग करना चाहिये । नामके प्रथम अनुलोम और अन्तमें प्रतिलोममें मन्त्र होनेसे उसको सम्पुट कहते हैं । कीलनकार्यमें इसका प्रयोग करै । इस सम्पुट मन्त्रको स्तम्भन मृत्युनिवारण और रक्षादि कार्यमें भी प्रयोग करना उचित है ॥ ३४ ॥

मन्त्रमादौ वदेत्पश्चात्साध्यसंज्ञामनन्तरम् ।
विपरीतं पुनश्चान्ते संपुटः स स्मृतो बुधैः ॥ ३५ ॥

पण्डितजन कहते हैं । प्रथम मन्त्रवर्ण उच्चारण करके फिर साध्यनाम उच्चारण करै । इसके पीछे समस्त मन्त्रके अक्षर विलोम क्रमानुसार उच्चारण करनेपर सम्पुट होता है ॥ ३५ ॥

मन्त्रार्णं द्वन्द्वमेकैकं साध्यनामाक्षरं क्रमात् ।
कथ्यते स विदर्भस्तु वश्याकर्षणपौष्टिके ॥ ३६ ॥

मन्त्रके दो दो अक्षर और साध्यनामके दो दो अक्षर क्रमानुसार उच्चारण करनेपर वह विदर्भ मन्त्र कहा जाता है । वशीकरण, आकर्षण और पुष्टि कार्यमें इसका प्रयोग करना चाहिये ॥ ३६ ॥

अथ कर्मविशेषे हुँफटवषडादीनि ।

बन्धनोच्चाटने द्वेषे सकीर्णे हुपद जपेत् ।
फट्कार छेदने हुँफट् रिष्टिग्रहनिवारणे ॥
पुष्टौ चाप्यायने वौषट् बोधने मलिनीकृता ।
अग्निकार्ये जपेत्स्वाहा नम सर्वत्र चार्चने ॥ ३७॥

बधन, उच्चाटन, विद्वेषण और सकीर्णमे हुँ, छेदनमे फट्, रिष्टिग्रहशान्तिमें हुफट्, पुष्टि कर्म, आप्यायन, बाधन कर्म, मलिनीकरण कर्ममे वौषट्, होम करनेमें स्वाहा और अर्चना (पूजा) मे नम शब्द प्रयोग करना चाहिये ॥ ३७ ॥

शान्तिपुष्टिवशद्वेषाकृष्टयुच्चाटनमारणे ।
स्वाहा स्वधा वषट् हुँच वौषट् फट् योजयेत्क्रमात् ॥
वश्याकर्षणसन्ताप ज्वरे स्वाहो प्रकीर्त्तयेत् ।
क्रोधोपशमने शान्तौ प्रीतो योज्य नमो बुधै ॥
वौषट् सम्मोहनोद्दीपपुष्टिमृत्युञ्जयेषु च ।
हुकार प्रीतिनाशे च च्छेदने मारणे तथा ॥
उच्चाटने च विद्वेषे वौषट् चान्धीकृतो वषट् ।
मन्त्रोद्दीपनकार्येषु लाभालाभे वषट् स्मृतम् ३८॥

स्वाहा यह मंत्र शान्तिकर्म और पुष्टिकर्ममें, स्वधा वशीकरणमें, वषट् विद्वेषणमें, हुँ आकर्षणमें वौषट् उच्चाटनमें और फट् यह मंत्र मारण कर्मकी पूजामें प्रयोग करे। वशीकरण आकर्षण और ज्वर दूर करनेमें भी स्वाहा मंत्र प्रशस्त है। पण्डितजन कहते हैं कि नमः शब्द क्रोधशान्ति, शान्तिकर्म और प्रीतिवर्द्धनकार्यमें प्रयोग करना चाहिये। वौषट् यह मंत्र संमोहन, उद्दीपन पुष्टि और मृत्युनिवारण इन सब कार्योंमें हुँ यह मंत्र प्रीतिभंजन छेदन और मारणमें, वौषट् यह मंत्र उच्चाटनमें और आकर्षणमें, फट् वषट् यह मंत्र अधाकरणमें, मंत्रचैतन्यमें और लाभालाभादिकर्मोंमें प्रयोग करना चाहिये ॥ ३८ ॥

अथ मन्त्राणां स्त्रीपुंनपुंसकादिनिरूपणम्।

स्त्रीपुंनपुंसकत्वेन त्रिधा स्युर्मन्त्रजातयः।
स्त्रीमन्त्रा वह्निजायान्ता नमोऽन्ताश्च नपुंसकाः ॥
हुंफडन्ताः पुमांसः स्युर्वश्यशान्त्यभिचारके।
क्षुद्रक्रियाद्युपध्वंसे स्त्रियोऽन्यत्र नपुंसकाः ॥३९॥

मन्त्र तीन प्रकारके हैं। स्त्री, पुरुष और नपुंसकभेदसे। जिन मंत्रके अंतमें स्वाहा पद रहता है, वे स्त्रीमंत्र हैं। जिनके

शेषमें नम शब्दका प्रयोग होता है, व नपुंसक और जिनके अन्तमें हुं फट् रहता है उनको पुरुषसंज्ञक जानना चाहिये पुरुषमन्त्र वशीकरण, शान्ति और अभिचार कार्यमें, स्त्रीमन्त्र क्षुद्रक्रियादिके नाशमें और नपुंसक मन्त्रको इनसे अतिरिक्त कर्मामें प्रयोग होता है ॥ ३९ ॥

ताराऽन्त्याग्निवियत्प्रायो मन्त्र आग्नेय उच्यते ।
सौम्याश्च मनवः प्रोक्ता भूयिष्ठेन्द्वमृताक्षराः ॥
आग्नेयमन्त्राः सौम्याः स्युः प्रायशोऽन्ते नमोऽन्विताः
मन्त्रः शान्तोऽपि रौद्रत्वं हुंफट्पल्लवितो यदि ॥
सुप्तः प्रबुध्यमानोऽपि मन्त्रः सिद्धिं न गच्छति ।
स्वापकालो वामवहो जागरो दक्षिणावहः ॥
स्वापकाले तु मन्त्रस्य जपो न च फलप्रदः ।
आग्नेयाः संप्रबुध्यन्ते प्राणे चरति दक्षिणे ॥
वामे चरति सौम्याश्च प्रबुद्धा मन्त्रिणां सदा ।
नाडीद्वयगते प्राणे सर्वे बोधं प्रयान्ति च ॥
प्रयच्छन्ति फलं सर्वे प्रबुद्धा मन्त्रिणां सदा ॥४०॥

जिस मंत्रके अन्तमें [illegible] हैं, उसका नाम आग्नेय है। जिस मंत्रमें ठं और अमृताक्षर विद्यमान रहते हैं, उसको सौम्य मंत्र कहते हैं। और आग्नेय मंत्रके अन्तमें नम शब्दका प्रयोग होतो वह भी सौम्य मंत्रमेंही गिनाजायगा। और सौम्य मंत्रभी फट्शब्दसे पल्लवित होतो वह रुद्रभावको भजता है अर्थात् वहभी आग्नेयपद होजाता है। सुप्त मंत्र किसी समयमेंभी सिद्धिप्रदान नहीं करता। जबतक वाम नासिकामें स्वास चलता है तबतक मंत्रको निद्रावस्था जाननी चाहिये और जब दाहिनी नासिकामें स्वास चलने लगे, तब मंत्रको जाग्रदवस्था जाननी। निद्रित अवस्थामें मंत्र जपनेसे वह विफल हो जाता है। जबतक दाहिनी नासिकासे स्वास चलता है उस काल आग्नेयमंत्र जागता है और जब बाँई नासिकासे स्वास चलता है उस काल सौम्यमंत्र जागरित रहता है और जब दोनो नासिकासे स्वास चलता है तब सबही मंत्र जागरित रहते हैं। जागते हुए मंत्रको जपनेसे अवश्य सिद्धि प्राप्त होती है, इसमें संदेह नहीं ॥ ४० ॥

अथ आसनानि।

आसनानि प्रवक्ष्यामि कर्मणा विहितान्यपि।
पद्मासनं पौष्टिके तु शान्तिके स्वस्तिकासनम् ॥
आकृष्टे पौष्टिके तद्वद्विद्वेषे कुक्कुटासनम्।

अर्द्धस्वस्तिकमुच्चाटे अर्द्धंस्थापनपार्ष्णिकम् ॥
मारणे स्तम्भने तद्वद्विकटं परिकीर्त्तितम् ।
वश्ये भद्रासनं तेषां कथ्यते चाथ भावना ॥४१॥

अब षट्कर्म साधनमे आसनोका विषय कहाजाता है पद्मासन बांधकर पुष्टिकर्म स्वस्तिकासनसे शांतिकर्म, कुक्कुटासनसे आकर्षणकर्म, पुष्टिकर्मऔर विद्वेषणकर्म करना चाहिये। इनके अतिरिक्त अर्द्धस्वस्तिकासनद्वारा उच्चाटन, अर्धस्थापन पार्ष्णिकासनसे मारण विकटासनद्वारा स्तंभन एवं भद्रासन बांधकर वशीकारणकार्य सम्पन्न करना चाहिये ॥ ४१ ॥

अथ विकटकुक्कुटासनयोर्लक्षणम् ।

जानुजंघान्तरालेषु भुजयुग्मं प्रवेशयेत् ।
विकटासनमेतत्स्यादुपविश्योत्कटासने ।
कृत्वोत्कटासनंचैव समपादद्वयं ततः ॥
वश्ये मेषासनं प्रोक्तं आकृष्टिर्व्याघ्रचर्मणि ॥
उष्ट्रासनं तथोच्चाटे विद्वेषे तुरगासनम् ।
मारणे माहिषं चर्म मोक्षे गजाजिनं भवेत् ॥
अथवा कम्बलं रक्तं सर्वकर्मसु कारयेत् ॥ ४२॥

अब विकटासन और कुक्कुटासनके लक्षण कहेजाते है। जानु और जंघाके बीचमें दोनों भुजा प्रवेशित करनेसेही उसको विकटासन कहते हैं। इस प्रकारसे विकटासन करके दोनों पैरोंको समान भागमें स्थापनपूर्वक जानुमें दोनों हाथ प्रवेशित करे। इसीका नाम कुक्कुटासन है। मेषचर्ममें वशीकरण, व्याघ्रचर्ममें आकर्षण, उष्ट्र (ऊंट) चर्ममें उच्चाटन अश्वचर्ममें विद्वेषण, महिषचर्ममें मारण और हाथीके चर्मपर बैठकर मोक्षसाधनकर्मका अनुष्ठान करना चाहिये। एक लवणके कम्बलासनपर बैठकर सबही कार्य साधन करसकता है॥ ४२॥

अथ षण्मुद्रा ।

षण्मुद्रा क्रमशो ज्ञेया पद्मपाशगदाह्वया ।
मुसलाशनिखड्गाख्या शान्तिकादिषु कर्मसु४३

षट्कर्मसाधनमें छः प्रकारकी मुद्राका होना आवश्यक है। यथा पद्म पाश, गदा, मूसल, वज्र और खड्ग पद्ममुद्राकी सहायतासे शांतिकर्म पाशमुद्रासे गदामुद्रासे वशीकरण स्तंभन मुसलमुद्रासे विद्वेषण, वज्रमुद्रासे उच्चाट। और खड्ग मुद्राकी सहायतासे मारणकर्म करना चाहिये। जिस कर्ममें जिस मुद्राका विषय लिखागया है उस मुद्राकी सहायतासे उसी करनेपर कार्य सिद्धि होती है॥ ४३॥

अथ देवध्यानम् ।

शान्तिपौष्टिकवश्येषु सौन्दर्यातिशयान्विता ।
सर्वाभरणसदीप्ता प्राक्कालमनोरथा ॥
ध्यातव्या देवता सम्यक्सुप्रसन्नाननाम्बुजा ।
आकर्षणेऽपि तद्वच्च बडिशैरिव मत्स्यकान् ॥
साध्यमाकर्षणे द्रष्टे भत्स्यमान जनैरिव ।
वध्यमानो जनैर्दण्डैर्दारितस्तस्करो यथा ॥
उलूको वा यथारिष्टैर्मन्तव्योच्चाटने रिपु ।
यत्किञ्चिच्छवमारुह्य सन्दष्टोष्ठपुट क्रुधा ॥
कर्म कुर्यात्ततो मन्त्री यथा क्रूरेषु कर्मसु ॥ ४४ ॥

षट्कर्मका जिस कार्यमें किस भावसे देवताका ध्यान करे सो कहा जाता है । शांति, पुष्टि, वशीकरण और आकर्षण इन चार कार्योंका साधन करना हो तो देवताका अति सुन्दर सब गहनोंसे विभूषित, नवयौवनसम्पन्न और प्रसन्न वदन ध्यान करना चाहिये । वशीके द्वारा जिस प्रकार मत्स्य (मछली) को खैंचलिया जाता है ऐसेही आकर्षण कर्मके द्वारा अभिल षितमनुष्यको अपनी ओर खैंचलिया जाता है । यदि अभिचार

कर्म करना हो शवारूढ (मुरदेपर बैठकर) होकर कायर अनुष्ठान करना चाहिये ॥ ४४ ॥

अथ षट्कर्मणां कुण्डनिर्णय ।

विद्वेषे चाभिचारे च त्रिकोणेण कुण्डमिष्यते ।
द्विमेखलं कोणमुखं हस्तमात्रंतु सर्वत ॥
उच्चाटनंतु नैर्ऋत्यां शत्रुपक्षस्य कारयेत् ।
उत्सादनंतु वायव्यां देवानामपि कारयेत् ॥
शत्रूणां तापने शस्तं योन्याख्यमग्निकोणगम् ।
अर्द्धचन्द्रन्तु याम्यायां शत्रूणां मारणे स्थितम् ।
त्रिकोणं नैर्ऋते कुण्डं रिपूणां व्याधिवर्द्धनम् ।
दाहायाग्नौ च विद्वेषे कुण्डं पूर्णेन्दुसन्निभम् ॥
चतुरस्रं वा कर्त्तव्यं द्वपादौ तु विचक्षणे ।
कुण्डं सुलक्षणं कृत्वा तत्र कर्माणि साधयेत ॥
चतुरस्रे भवेद्वश्यमाकृष्टिस्तु त्रिकोणके ।
कर्षणस्तम्भने देवि विद्वेषेच त्रिकोणके ॥
अथैवोच्चाटनं प्रोक्तं षट्कोणे मारणं स्मृतम् ।

उदीच्यां पौष्टिके कुण्ड वारुण्यां शान्तिकादिषु ॥
उच्चाटे चानिले कुण्ड याम्ये च मारण भवेत् ।
मानहीनादिक दोष नास्ति कुण्डेऽभिचारके ॥
शुभेषु स्युर्विवाहान्ता क्रियास्ता क्रूरकर्मणि ।
मारणान्ता समुद्दिष्टा वह्नेरागमवेदिभि ॥४८॥

अब षट्कमके साधन करनेमे कैसे कुण्डकी आवश्यकता है सो कहते हे । यदि विद्वेषण कमका अनुष्ठान करना हो तो कुड बनावे । इस कुण्डकी दो मेखला हों और कुण्डको एक हाथकी बराबर करे । नैऋतकोणम इस कुण्डका मुख रक्खे । यदि शत्रुपक्षका उच्चाटन करना हा तो नैर्ऋतकोणमें और देवोच्चाटन करना हो तो मडपके वायुकोणमे कुड बनावे । योनिकुण्डमे अरितापन कमका अनुष्ठान करना चाहिये । मण्डपके अग्निकोणम इस कुण्डका हाना आवश्यक है । यदि शत्रुका मारण काय साधन करना हो तो अर्द्धचद्रकुड निमाण कर मण्डपके दाहिन भागमे यह कुड स्थापन करना चाहिये। यदि शत्रुकी पीडाका बढाना हा तो त्रिकाण कुण्ड करे और इस कुडको मण्डपके नैऋतकोणमें रहना उचित है । विद्वेषणमे पूणचद्रकी समान कुण्ड करना चाहिये । और इस

कुण्डका मण्डपके अग्निकोणमे क०। इसके अतिरिक्त विद्वेषणादिमे चतुरस्र (चौकोन) कुण्डभी कर सकते है। कुंडको सब सुलक्षणासे युक्त करके कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये। वशीकरण चतुरस्र (चौकोन) कुंडमे आकर्षण स्तम्भन और उच्चाटन त्रिकोण कुंडमे, और मारण कर्म षट्कोण कुण्डमे करे। पुष्टि कर्म साधन करना हो तो पश्चिम दिशामे उच्चाटन कार्य वायुकोणमे, और मारण कार्य साधन करना हो तो दक्षिण दिशामें कुण्ड बनाना चाहिये। अभिचार कर्ममे कुण्डके परिमाणमे न्यूनाधिक (कमजादा) होनेसेभी कोई दोष नहीं होता। आगमके जाननेमे चतुर बुद्धिमान् पुरुष विवाह इत्यादि कर्मको शुभ और स्तंभनसे लेकर मारणतक कर्मोंको क्रूर कर्म कहते है॥ ४९॥

अथ षट्कर्मणां प्राधान्यनिरूपणम्।

वश्यात्स्तम्भनमुत्कृष्टं स्तम्भनान्मोहनं महत्।
मोहनाद्वेषणं श्रेष्ठं द्वेषादुच्चाटनं वरम्॥
उच्चाटनादपि महन्मारणं सर्वतो महत्।
मारणादधिकं कर्म न भूतं न भविष्यति॥

तत्रैव दक्षिणे चित्त कृत्वा मारणमारभेत् ।
शान्तिपुष्टी दिनस्यान्ते सन्ध्याकाले तु मारणम् ४६

स्तमनकर्म वशीकरणमे श्रेष्ठ है, स्तम्भनसे मोहन, माहनसे विद्वषण, विद्वषणमे उच्चाटन और उच्चाटनसे मारण कर्म श्रेष्ठ कहा गया हे अत एव छहो कर्ममे मारणही सबसे श्रेष्ठ है। इसकी अपेक्षा श्रेष्ठ कार्य न कभी हुआ और न आगे होगा। दिनके शेष अशमे शांति और पुष्टि कर्म एव सध्याकालम मारण कार्यका अनुष्ठान करना चाहिये ॥ ४६ ॥

अथ षट्कमणा कुम्भस्थापनम् ।

शान्तिके स्वर्णकुम्भच नवरत्नैर्विभूषितम् ।
तदभावे रौप्यकुम्भ ताम्र वापि सुलक्षणम् ।
अभिचारे लौहकुम्भ स्थापयेत्सुसमाहित ॥
उत्सादे काचकुम्भच मोहने रैत्यकुभकम् ॥
उच्चाटने च मृत्कुम्भ कालमण्डलसस्थितम् ।
सर्वकर्मणि वा कुर्यात्कुम्भ ताम्रमय तथा ॥४७॥

अथ षट्कर्म साधनमे कैसे कुम्भकी आवश्यकता है सो कहते है यदि शातिकर्म साधन करना हो तो अनेक रत्नासे विभूषित सुवर्णका कुभ स्थापन करे उसके न मिलने पर चादीर

कुभ ओर चादीका कुमभी यदि न मिल तो सुलक्षण युक्त तावेका कुम, स्थापन करक काय करे। इसी प्रकार अभिचार कायम लोहेका कुभ, उत्साद कायमे काचका कुभ मोहन कार्यमे पीतलका कुभ और उच्चाटन कायमे मट्टीका कुभ स्थापन करना चाहिय। तावेके कुभमे सब काय सिद्ध हो जात हे ॥ ४७ ॥

अथ कुम्भे पूजानियम ।

तत्कुम्भचाथ सस्थाप्य रुद्रं देवीश्च पूजयेत् ।
उपचारक्रमेणैव देव ध्यायेद्यथाविधि ॥
शूलहस्त महारौद्र सर्ववैरिनिषूदनम् ।
पूर्णचन्द्रसमाभास रुद्र वृषभवाहनम् ॥
अथवान्यप्रकारेण ध्यान कुर्यात्समाहित ॥
काश्मीरस्फटिकप्रभ त्रिनयन पञ्चानन शूलिन
खट्वाङ्गासिवरप्रसादडमरूचक्राब्जबीजाभयम् ॥
बिभ्राण दशदोर्भिरक्षजटिल वीरासने सस्थितम्
गौरीश्रीसहित सदैवमखिल ध्यायोच्छिन्न चार्मिणम्॥
रुद्रमन्त्रेण कुर्याच्च उपचारान्पृथग्विधान् ।
भद्रकालीश्च सपूज्य नैवेद्यैश्च पृथग्विधै ॥

पट्टवस्त्रैरलङ्कारैर्बलिदानै पृथग्विधै ।
यत्र न स्यादुपायोऽन्य शत्रोर्भयनिवृत्तये ॥
तदानन्यगतित्वेन मारणादीनि कारयेत् ॥ ४८ ॥

यथाविधि कुम्भस्थानपूर्वक अनेक प्रकारके उपचारसे रुद्र और भद्रकाली देवीकी पूजा करे । रुद्रका जिस प्रकार ध्यान करना चाहिये अब वही कहा जाता है रुद्रदेव शूलहस्त, महाभयकरस्वरूप, सर्व शत्रुनाशक, पूर्णचन्द्रकी समान आभा युक्त और वृषभवाहन है इस प्रकारसे रुद्रदेवका ध्यान करके पूजा करनी चाहिये । मतान्तरमे अन्य प्रकारका ध्यान कर सकता है । यथा काश्मीर स्फटिक सम शरीरकान्ति, त्रिलोचन, पञ्चमुख और दशहस्त है इन हाथोमें शूल, खट्वाग (अस्त्रविशेष), असि, वरमुद्रा, प्रसादमुद्रा डमरू, चक्र, पद्म, बीज और अभयमुद्रा विद्यमान है । उनके मस्तकपर जटाजूट, वे वीरासनसे विराजमान और उनक दोना पार्श्वमें गौरी और लक्ष्मीदेवी विराजमान है । इस प्रकार ध्यान करके ' त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धि पुष्टिवर्द्धन उर्वारुकमिव बन्धना मृत्योर्मुक्षीय मामृतात ' इस रुद्रमन्त्रसे देवताकी पूजा करे । इसके पीछे पृथक् नैवेद्यादि उपचारसे भद्र कालीकी पुजा करे इन देवी देवताकी पूजामें पट्टवस्त्र (रेशमी वस्त्र) विभूषण और बलिदानादि समस्त उपचार भिन्न भिन्न रीतिसे देवे ॥ ४८ ॥

दीपादग्निं समानीय धूपाद्वा चान्त्यजादपि ।
विद्वेषणाभिचारे च क्रव्यादश्च न सत्यजेत् ॥
अत्र चैव विधायाग्निं परिस्तीर्य शरैस्तृणै ।
बिभीतकपरिध्या च कल्पयेद्वस्य मारणम् ॥
जुहुयान्निम्बतैलाक्तै काकोलूकैश्च पिञ्जकै ।
दारयैन शोषयैन मारयेत्यभिधाय च ॥
अष्टोत्तरशतेनैव मनसा जुहुयादृचा ।
होमान्ते विधिवत्कृत्यामाराध्याग्नेश्च सन्निधौ ॥
यो मे च कण्टक दूराद्दूर वा चान्तिकेऽपि च ।
पिब हृद्यमसृक्क तस्य इत्युक्त्वा च निवेदयेत् ॥
सरक्ष्याग्निं विधानेन नवरात्रिं समापयेत् ।
मृनास्तिष्ठति ज्ञात्वैव तावदस्य रिपोर्मृति ॥
वसन लोहित प्रोक्तमुष्णीष लोहित स्मृतम् ।
जपहोमादौ सङ्कल्प्य तद्दाचरणमारभेत् ॥४१॥

जहा शत्रु भयके दूर होनेका कोई दूसरा उपाय नहीं है, वह विवश होकर मारण कर्मका अनुष्ठान करना चाहिये । शत्रु

घरकी दीपाग्नि वा कूपाग्नि लाकर उसके द्वारा अभिचार कर्म करना चाहिये । विद्वेषणादि अभिचारिक कर्मके होमसमयमे कृत्यादृश परित्याग न करे। यथाविधि अग्निस्थापन करके शर तृण द्वारा अग्नि परिस्तरण करे । फिर नीमके तेलमे सनेहुए कौएके परव और उल्लूके परवोसे होम करे । फिर जिसके नाश करनेकी अभिलाषासे कर्म करे उसको लक्ष्य करके एन दारय एन शोषय एन मारय इस प्रकार वाक्य उच्चारण करके मानसिक मन्त्रसे एकसौ आठ वार होम करे । होमके पीछे अग्निके निकट कृत्या देवीकी पूजा करके ' दूरम अथवा समीपमे मेरा जो कोइ शत्रु है, उसका मांस भक्षण करो ' यह कहकर निवेदन करना चाहिये। इस प्रकारके नियमसे अग्निकी रक्षा करताहुआ नव रात्रितक जप होम इत्यादि करके कर्म समाप्त करनेपर शत्रुका नाश हो जाता है । मारण कार्यमें वस्त्र और पगडी इत्यादि लाल वर्णकी होनी चाहिये। जप होम इत्यादिके प्रथम संकल्प करके कार्य करे ॥ ४९ ॥

अथ मालानिर्णय ।

सनत्कुमारसंहितायाम् ।

तर्जनी मध्यमानामा कनिष्ठा चेति ता क्रमात् ।
तिस्रोऽगुल्यस्त्रिपर्वाणो मध्यमा चैकपर्विका ॥

पर्वद्वय मध्यमाया मेरुत्वेनोपकल्पयेत् ॥

तत्र क्रममाह सनत्कुमारसहितायाम् ।

अनामा मध्यमारभ्य कनिष्ठादित एव च ।
तर्जनीमूलपर्यन्त दशपर्वसु सजपेत् ॥

तथा ।

अनामामूलमारभ्य कनिष्ठादित एव च ।
तर्जनीमध्यपर्यन्तमष्टपर्वसु सजपेत ॥

एतद्वचन तु अष्टोत्तरशतादिविषयम् ।

शक्तिविषये पुन ।

अनामिकात्रय पर्व कनिष्ठायास्त्रिपर्विका ।
मध्यमायाश्च त्रितय तर्जनीमूलपर्वणि ॥
तर्जन्यग्रे तथा मध्ये यो जपेत्स तु पापकृत् ॥

इति नारदवचनात् ।

तथा हसपरमेश्वरे ।

पर्वद्वयमनामाया परिवर्तेन वै क्रमात् ।
पर्वत्रय मध्यमायास्तर्जन्येक समाहरेत ॥

पर्वद्वयच तर्जन्या मेरु तद्विद्धि पार्वति ।
शक्तिमाला समाख्याता सर्वतन्त्रे प्रदीपिका ।

तथा ।

अनामामूलमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण च ।
मध्यमामूलपर्यन्तमष्टपर्वसु सजपेत् ॥

इदमप्यष्टोत्तरशतादिविषयम् ।

श्रीविद्याविषये पुन ।

अनामामध्यमायाश्च मूलाग्रच द्वय द्वयम् ।
कनिष्ठायाश्च तर्जन्यास्त्रय पर्व सुरेश्वरि ॥
अनामामध्यमायाश्च मेरु स्याद्वितय श्रुतम् ।
प्रादक्षिण्यक्रमाद्देवि जपेत्त्रिपुरसुन्दरीम् ॥

इति यामलवचनात् ।

कनिष्ठामूलमारभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण च ।
तर्जनीमूलपर्यन्तमष्टपर्वसु सजपेत् ॥

इदमप्यष्टोत्तरशतविषयम् ।

मुण्डमालातन्त्रे ।

अनामिकाद्वय पर्व कनिष्ठादिक्रमेण तु ।

तर्जनीमूलपर्यन्तं करमाला प्रकीर्तिता ॥
अगुलीर्न वियुञ्जीत किञ्चिदाकुञ्चिते तले ।
अगुलीना वियोगाच्च छिद्रे च स्रवते जप ॥

अ यत्रापि ।

अगुल्यग्रेषु यज्जप्त यज्जप्त मेरुलघने ।
पर्वसन्धिषु यज्जप्त तत्सर्व निष्फल भवेत् ॥
गणनाविधिमुल्लङ्घ्य य। जपेत्तज्जप यत ।
गृह्णन्ति राक्षसास्तन गणयेत्सर्वथा बुध ॥

विश्वसारे ।

जपसख्या तु कर्तव्या नासख्यात जपेत्सुधी ।
न सख्याकारकस्यास्य सर्व भवति निष्फलम् ॥

तन्त्रे ।

हृदये हस्तमारोप्य तिर्यक्कृत्वा कराङ्गुली ।
आच्छाद्य वाससा हस्तौ दक्षिणेन जपेत्सदा ॥
॥क्षतैर्हस्तपर्वैर्वा न धान्यैर्न च पुष्पकै ।

न चन्दनैर्मृत्तिकया जपसंख्यां तु कारयेत् ॥
जपते यादृशी माला संख्यानेऽपि च तादृशी ॥

अत्र मालाका निर्णय किया जाता है । सनत्कुमारसंहितामें लिखा है । करमालामें तर्जनी अनामा और कनिष्ठाके तीन ३ पर्व एवं मध्यमांगुलीका एक पर्व ग्रहण करे और मध्यमाके अन्य दो पर्व मेरुरूपमें कल्पित करे । करमालाके सब धर्म जो क्रम है, वह सनत्कुमारसंहितामें वर्णित है । यथा अनेक मध्यपर्वसे कनिष्ठादिक्रमसे तर्जनीके मूलपर्यन्त जो दश पर्व है, उनमें जप करे । जब अष्टोत्तरशतादि जप तब पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जप पूरा होनेपर अनामिकाके मूलपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादिके क्रमानुसार तर्जनीके मध्य, पर्वतक अष्टपर्वमें आठ बार जप करे । शक्तिमन्त्रके जपनेका नियम यह है कि अनामाके तीन पर्व, कनिष्ठाके तीन पर्व मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका मूलपर्व इन दश पर्वमें जप करे । जो मनुष्य तर्जनीके अग्र और मध्यपर्वमें शक्तिमन्त्र जपता है, वह व्यक्ति पापकारी होता है, यह श्रीनारदजीके वचनसे प्रकाशित है । इसपरमेश्वर ग्रन्थमें कहा है । अनामाके मध्यपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादिसे क्रमानुसार मध्यमाके तीन पर्व और तर्जनीका एक पर्व इन दश पर्वमें जप करे । हे पार्वती ! तर्जे

ऊपर स्थित दो पर्वको मेरु जानना चाहिये। इसीको समस्त तन्त्रशास्त्रमे शक्तिमाला कहा है। अष्टोत्तरशतादि संख्यक यदि शक्तिमन्त्र जपना हो तो पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जपकर अनामिकाके मूलपर्वसे आरंभ करके कनिष्ठादि क्रमसे मध्यमाके मूलपर्वमे आठ वार जप करे। श्रीविद्याका मन्त्र जपनेके विषयमे अनामाका मूल और अग्र यह दो पर्व, मध्यमाका मूल और अग्र यह दो पर्व कनिष्ठाके तीन पर्व और तर्जनीके तीन पर्व इन दश पर्वमे जप करे। हे देवि! अनामा और मध्यमाके दो पर्वको मेरु जानना चाहिये। श्रीविद्याके अष्टोत्तर शतादि संख्यक जपमे पूर्वोक्त नियमानुसार शतादि संख्यक जप कर कनिष्ठाके मूलपर्वसे आरंभ करके तर्जनीके मूलपर्वतक अष्टपर्वमे प्रदक्षिणके क्रमानुसार आठ वार जप करे। मुण्डमाला तन्त्रमें कहा है। अनामाके मध्य पर्वमे आरंभ करके कनिष्ठादि क्रमसे तर्जनीके मूलपर्वतक इन दश पर्वको करमाला कहते है। जपके समय अंगुली अलग न करके हाथ कुछेक सिकोडकर जप करना चाहिये। अंगुली अलग न करनेसे अंगुलीके छिद्रद्वारा जपके फलकी हानि होती है। अन्य ग्रंथमेभी कहा है कि अंगुलीके अग्रभागमे अथवा मेरुको उल्लंघकर जो जप कियाहै और पर्वसन्धिमे जो जप कियाजाता है वह विफल हो जाता है।

जिस जिस मन्त्रके जप विषयमे जिस प्रकार गणनाकी विधि लिखी है, उसको उलांघकर जो पुरुष मन्त्र जपते है, उनके जपका फल राक्षस ले लेते है, अत एव बुद्धिमान् पुरुष सदा गणनाकी विधिके अनुसार मन्त्रका जप करे। विश्वसारतन्त्रमें कहा है कि, पंडितजन जपकी संख्याके नियम करके जप करे। जो पुरुष विना संख्या नियत किये जप करता है उसका सब जप निष्फल होता है। अन्यान्य तन्त्राम कहा है हृदय (छाती) पर हाथ रखकर अंगुलियाको कुछेक टेढा करके दोना हाथ वस्त्रसे आच्छादन पूर्वक दाहिने हाथसे जप करे। अक्षत (चावल) हस्तपर्व, धान्य, पुष्प, चन्दन और मट्टीके द्वारा जपकी संख्या नियत न करे। जिस स्थानमे जिस मालाका जप कहा है उस स्थानमे उसी मालामे संख्या नियत करे॥

अथ वर्णमाला।

सनत्कुमारीये।

क्रमोत्क्रमगतैर्माला मातृकार्णैः क्षमेरुके।
सबिन्दुकैः साष्टवर्गैरन्तर्यजनकर्मणि॥
आदि कु चु टु तु पु यु शावोऽष्टौ प्रकीर्त्तिता।

तन्त्रान्तरमथ।

अकारादिवर्णान् प्रत्येकं सबिन्दुं कृत्वा शत

सजप्य अकारादीना वर्णानां कवर्गादीनाञ्चान्त्य वर्ण सानुस्वार कृत्वा पूर्वमुच्चार्य जप कर्त्तव्य अनेन प्रकारेणाष्टोत्तरशतसख्यजपो भवति। अन्तर्यजन इत्युपलक्षणम् ॥

तथा च।

सबिन्दुं वर्णमुच्चार्य पश्चान्मन्त्र जपेद्बुध ।
अकारदीक्षकारान्त बिन्दुयुक्तं विभाव्य च ॥
वर्णमाला समाख्याता अनुलोमविलोमिका ॥

इति नारदवचनात्।

प्रकारान्तर विशुद्धश्वर।

अनुलोमविलोमेन वर्गाष्टकविभेदत ।
मन्त्रेणान्तरितान्वर्णान्वर्णेनान्तरितान्मनून् ॥
कुर्याद्वर्णमयी माला सर्वतन्त्रप्रकाशिनीम् ।
चरमार्णं मेरुरूप लङ्घन नैव कारयेत् ॥

तथा मालिनीविजये सूत्रनियम ।

अन्तर्विंद्रुमभासमानभुजगी सुप्तोत्थवर्णोज्ज्वला ।
मारोहप्रतिरोहत शतमयी वर्गाष्टकाष्टोत्तराम् ॥

अत्र वैशम्पायनसंहितायाम् ।

प्रलयानलत पूर्वं रुद्ररूपेण मूर्त्तिना ।
उद्धृत पृथिवीबीजमतोऽन्ते त नियोजयेत् ॥
प्रलयोद्धरित बीज लकारमनलात्पुन ।
द्विलकारविधावत्र पुनरन्ते नियोजयेत् ॥

एतेन लकारद्वय ज्ञेयमिति ।

अत्र वर्णमालाका निर्णय किया जाता है । सनत्कुमारतन्त्रम लिखाहै आकारादिसे क्ष तक सब अक्षरोंको वर्णमाला कहते है इन इक्यावन अक्षरकी अकारसे हतक पञ्चाशद्वर्णमाला और क्ष उसका मेरु है इन सब अक्षरोंमें अनुस्वार जोडकर क्रमानुसार अर्थात् अकारसे आरंभ करके ह तक और हकारसे आरंभ करके अकारतक इस प्रकार अनुलोम विलोमके क्रमानुसार जप करे यह माला अन्तर्यजनके कार्यमें प्रशस्त है । वर्णमाला अष्ट वर्गमे विभक्त है यथा अवर्ग, कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग,

पवर्ग, यवग, शवर्ग अ आ इ इ उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अ अ यह सोलह वण अवग है क ख ग घ ङ कवग, च छ ज झ ञ चवग, ट ठ ड ढ ण टवग, त थ द ध न तवर्ग, प फ ब भ म पवग, य र ल व यवग,, श ष स ह शवग इस वर्णमालाके जपनेका क्रम यह है। अकरादिवर्णके प्रत्येक वणमे अनुस्वार जोडकर एक एक वणके पीछे एक एक वार म त्र उच्चारण पूवक जप करे इस प्रकार एक सौ आठवार जप करना उचित है। कवल अ तयजनकायमे इस वणमालाकी उत्तमता पुवम कहीगई है, यह उपलक्षणमात्र है, वाह्य पूजादिमेंभी वणमालाका जप करसकता है। प्रथम ता अ यह वर्ण उच्चारण करके एक वार मूलम त्रका जप करे। इसी प्रकार हतक अनुस्वारयुक्त एक एक वर्णके पीछे एक एक वार मत्र जपकर पुनवार हसे आरभ करके अ पर्यंत एक एक वणके पीछे एक एक बार म त्र जपना चाहिये, इसीका वर्णमालाजप कहते हे। विशुद्धेश्वर त त्रम लिखा है अकरादिसमस्त वण अष्टवर्गभेदसे अनुलाम विलोमम वर्णद्वारा मन्त्र और म त्रद्वारा वण अ तरित करके वर्णमयी मालासे जप करे। सब त त्रामही इस मालाकी विधि है। समस्त वर्णोंका जो अ तिम अक्षर क्ष है वही मालाका मेरु है अत एव

जपके समय मेरुका उल्लाघना ठीक नहीं है । मालिनी विज यत त्रमे वर्णमालाके सूत्रका (डोरेका) नियम कहा है, यथा विद्रुम अथात् प्रवाल (मूगा) की ममान प्रकाशमान् सूत्ररूपा निद्रिता जो सर्पाकार कुलकुण्डलिनी शक्ति है वही वणमालाका सूत्र है । उनके आरोहण और अवरोहणम शत सख्या एव अष्टवगमे अष्टसख्या होती है । वैशम्पायनसहि तामें लिखा है कि, पूवकालमें रुद्ररूपी श्रीमहादेवजीने नि समय पृथ्वीका उद्धार किया उस समय पृथ्वीके साथ पृथ्वी बीज लकारकाभी उद्धार किया था, इसी कारण वर्णमालाम दो लकार विद्यमान है सुतरा वर्णमालाकी गिनतीमें हकार वर्णके पीछे फिर लवणका पाठ करना चाहिये ।

अथ मालाया मणिनिर्णय ।

पद्मबीजादिभिर्माला बहिर्योगे शृणुष्व ता ।
रुद्राक्षशखपद्माक्षपुत्रजीवकमौक्तिकै ॥
स्फाटिकैर्मणिरत्नैश्च सौवर्णैर्विद्रुमैस्तथा ।
राजतै कुशमूलैश्च गृहस्थस्याक्षमालिका ॥
अगुलीगणनादेक पर्वण्यष्टगुण भवेत् ।
पुत्रजीवैर्दशगुण शत शखै सहस्रकम्

प्रवालैर्मणिरत्नैश्च दशसाहस्रिकं स्मृतम् ।
तदेव स्फाटिके प्रोक्तं मौक्तिकैर्लक्षमुच्यते ॥
पद्माक्षैर्दशलक्षं स्यात् सौवर्णैः कोटिरुच्यते ।
कुशग्रन्थ्या कोटिशतं रुद्राक्षैः स्यादनन्तकम् ॥
सर्वैर्विरचिता माला नृणां मुक्तिफलप्रदा ॥

कालिकापुराणे ।

रुद्राक्षैर्वा यदि जपेदिन्द्राक्षैः स्फाटिकैस्तथा ।
नान्यन्मध्ये प्रयोक्तव्यं पुत्रजीवादिकं च यत् ॥
यद्यन्यत्तु प्रयुञ्जीत मालायां जपकर्मणि ।
तस्य कामं च मोक्षं च न ददाति भियङ्करी ॥

मुण्डमालायाम् ।

श्मशानजातधुस्तूरैर्माला धूमावतीविधौ ।
नरांगुल्यस्थिभिर्माला ग्रथिता सर्वकामदा ॥
नाड्या संग्रथनं कार्यं रक्तेन वाससा प्रिये ।
सदा गोप्या प्रयत्नेन जनन्या जारवत्प्रिये ॥

कामानाभेन्द्रे ।

पद्माक्षैर्विहिता माला शत्रूणा नाशिनी मता ।
कुशग्रन्थिमयी माला सर्वपापप्रणाशिनी ॥
पुत्रजीवफलै क्लृप्ता कुरुते पुत्रसम्पदम् ।
निर्मिता रौप्यमणिभिर्जपमालेप्सितप्रदा ॥
प्रवालैर्विहिता माला प्रयच्छेद्विपुल धनम् ॥

भैरवीविद्याया तु वाराहीतन्त्रे ।

सुवर्णमणिभिर्माला स्फाटिकी शंखनिर्मिताम् ।
प्रवालैरेव वा कुर्यात्पुत्रजीव विवर्जयेत् ॥
पद्माक्षंचैव रुद्राक्ष भद्राक्षचै विशेषत ॥

त्रिपुरामन्त्रजपादौ तु रक्तचन्दनबीजादिभि प्रशस्ता ।

तथा च तन्त्र ।

रक्तचन्दनमाला तु भोगमोक्षप्रदा भवेत् ॥

तथा ।

वैष्णवे तुलसीमाला गजदन्तैर्गणेश्वरे ।
त्रिपुराया जपे शस्ता रुद्राक्षै रक्तचन्दनै

मुण्डमालायाम् ।

महाशखमयी माला नीलसारस्वते विधौ ॥

महाशखस्तु तन्त्रे ।

नृललाटास्थिखण्डेन रचिता जपमालिका ।
महाशखमयी माला ताराविद्याजपे प्रिये ॥
कर्णनेत्रान्तरस्थास्थि महाशख प्रकीर्तित ॥

मणिनियमस्तु मुण्डमालायाम् ।

अन्योन्यसमरूपाणि नातिस्थूलकृशानि च ।
कीटादिभिरदुष्टानि न जीर्णानि नवानि वै ॥

तथा च गौतमीये ।

पञ्चाशन्मणिभिर्माला त्रिंशद्भिर्धनसिद्धये ।
सर्वार्था सप्तविंशत्या पञ्चदश्याभिचारिके ॥
पञ्चाशद्भि काम्यसिद्धि स्यात्तथा चतुरोत्तरै ।
अष्टोत्तरशतै सर्वसिद्धिरुक्ता मनीषिभि ॥

अब बाह्यपूजामे विहित मालाकी मणियोंका निर्णय किया जाता है । बाह्यपूजामे पद्मबीजादिकी माला प्रशस्त है । रुद्राक्ष, शंख, कमलगट्टा, जीवपुत्रिका (जियापोता) मोती

स्फटिक (फटिकमणि), मणि, रत्न सुवर्ण, मूँगे, चादी और कुशमूल इनमे किसी एकके द्वारा गृहस्थ व्यक्ति जपमाला बनावे । अगुलीसे जप करनेपर एक गुना फल होता है, और अगुलीपर्वमे जप करनेपर अठगुना, जीवपुत्रिका (जियापोता) की मालासे दशगुना, शखकी मालासे सौगुना, मूगेकी मालासे हजारगुना मणि और रत्नकी मालासे दशहजार गुना, स्फटिककी मालासे दशसहस्रगुण मोतियोकी मालासे लक्षगुण, कमलकी मालासे दशलक्षगुण सुवर्णनिर्मित मालासे करोडगुण, कुशमूलनिर्मित मालासे सौ करोड गुण और रुद्राक्षकी बनी मालासे जप करनेपर अनन्तफल मिलता है । जिन सब मालाओका विषय कहागया यह सबही माला मनुष्यको मुक्तिफल प्रदान करती है । कालिकापुराणमें लिखा है कि, रुद्राक्ष, इन्द्राक्ष और स्फटिकादि निर्मित मालामे जीवपुत्रिकादिकी अन्य कोई माला न मिलावे जो पुरुष एक जातीय मालामे अन्य जातीय माला मिलाकर जप करता है भगवती उसकी कामना और मोक्षफल प्रदान नहीं करती ॥ मुण्डमालातन्त्रमें लिखा है कि, धूमावतीके विषयमे श्मशानके धतूरकी माला श्रेष्ठ है । हे प्यारी ! मनुष्यकी अगुलीकी हड्डीके द्वारा माला बनाकर जप करनेसे समस्त कामना पूर्ण होती है । उक्त माला मनुष्यकी

नाडीके द्वारा ढककर मातृजारवत् सदा गुप्त रक्खें। कामना भेदसे अलग अलग द्रव्यके द्वारा माला बनावे। यथा शत्रुका नाश करनेके कार्यमें कमलगट्टेकी माला, पापनाशन कार्यमें कुश मूलकी माला, पुत्रसमृद्ध मिलनके कार्यमे जीवपुत्रिकाकी माला, अभिलाषित फल प्राप्त करनेके लिये चांदीकी माला, और विपुल धन प्राप्त करनेकी इच्छा होनेपर मूंगेकी मालासे जप करना चाहिये। भैरवीविद्याके विषयमें वाराहीतन्त्रमें लिखा है सुवर्ण मणि, स्फटिक, शंख और मूंगेकी माला बनावे। जीवपुत्रिका (जीयापोता) कमलगट्टे, रुद्राक्ष और भद्राक्षकी माला न बनावे। त्रिपुरसुन्दरीके मन्त्र जपमें रक्तचंदन बीजमाला प्रशस्त है अन्य तन्त्रमें लिखा है कि रक्तचन्दन बीजमाला भोग और मोक्षकी देनेवाली है विष्णुके मन्त्र जपनेमें तुलसीकी माला, गणेशमन्त्रके जपनेमें गजदन्तकी माला, त्रिपुरामन्त्रके जपनेमें रुद्राक्ष और लालचन्दनकी माला श्रेष्ठ। मुंडमाला तन्त्रमें कहा है तारामन्त्रके जपनेमें महाशंखनिर्मित माला प्रशस्त है। मनुष्यके ललाटकी हड्डी द्वारा बनीहुई जपमालाको महाशंखमयी माला कहते हैं, यह माला ताराविद्याके मन्त्र जपनेमें प्रशस्त है। कान और आँखके बीचकी हड्डीको महाशंख कहा जाता है। मुण्डमाला तन्त्रमें जो मणियोंके लक्षण कहे हैं, सो कहते हैं। जिन सब मणियोंकी माला बनावे, वे सब मणि परस्पर

समान, अथ च अतिस्थूल अथवा अत्य त छोटी न हो और कीटादिसे भक्षित वा जीण न हो ऐसी मणियाकी माला बनानी चाहिये । गौतमीयतत्रमे लिखा है कि पचाश मणिकी माला बनावे किंतु अर्थसिद्धिके कार्यमे तो मणि सर्वकामनाके साधन करनेमे सत्ताईस मणि, मारणादि अभिचार कायमे प द्रह मणि कामसिद्धिके विषयमे चउवन और सब कार्योंकी सिद्धिके लिये एकसौ आठ मणियोद्वारा माला बनावे । ऐसा तन्त्रशास्त्रके जानने वाले पडित कहते है ।

जपाङ्गुलिनियम ।

शान्त्यादिस्तम्भवश्येषु वृद्धाग्रेण च चालयेत् ।
अगुष्ठानाभिकाभ्यान्तु जपेदाकर्षणे मनुम् ॥
अगुष्ठतर्जनीभ्यान्तु विद्वेषोच्चाटयोर्जपेत् ।
कनिष्ठागुष्ठयोगेन मारणे जप ईरित ॥

शाति, पुष्टि, स्तम्भन और वशीकरणमे अँगूठेक अग्रभागस माला चलावे । अँगूठे और अनामिका अँगुलीस आकषणम माला चलावे । अँगूठे और तर्जनी अँगुलीस विद्वषणम माला चलावे और अँगूठे एव कनिष्ठा अँगुलीसे मरणम जप करे ।

जपदिङ्नियम ।

जपेत्पूर्वमुखो वश्ये दक्षिणा चाभिचारके ।
पश्चिमा धनदा विद्यादुत्तरे शान्तिक भवेत् ॥
आयुष्यरक्षाशान्तिश्च पुष्टि वापि करिष्यति ॥

वशीकरण कार्यमे पूर्वकी ओर मुख करके जप करना चाहिये अभिचार (मारणादि) कार्यमे दक्षिणकी ओर मुख करके जप करना उचित है धनकी अभिलाषा होनेपर पश्चिमकी ओरको मुख करके ओर आयुकी रक्षाके लिये शान्ति और पुष्टि कर्ममे उत्तरकी ओरको मुख करके जप करना चाहिये ।

जपलक्षणम् ।

य श्रूयतेऽन्यै स तु वाचिक स्यादुपांशुसञ्ज्ञो निजदेहवेद्य । निष्कम्पदन्तौष्ठमथाक्षराणा यच्चिन्तन स्यादिह मानसाख्य ॥

जप तीन प्रकारका कहा गया है। वाचिक उपांशु और मानसिक । जप करते समय यदि मन्त्रको दूसरा पुरुष सुनसके, तो उसे वाचिक कहते है। जपते समय मन्त्र अपने आपको ही सुनाई आवे उसको उपांशु कहते है। और जपते समय होठ एवं जीभ

न चले मनही मनमे ध्यान करता हुआ जप करे तो वह जप मानसिक कहाता है ।

षट्कर्मजपनियम ।

परामिचारे किल वाचिक स्यादुपांशुरुक्तोऽथ शान्तिपुष्टौ । मोक्षेषु जाप किल मानसाख्य सज्ञा त्रिधा पापनुदे तथोक्ता ॥

अभिचार (मारणादि) कर्ममे वाचिक जप, शान्ति और पुष्टिकार्यमें उपांशु जप, एव मोक्षकी साधनामें मानसिक जप करना उचित है ।

षट्कर्महोमकुण्डनियम ।

शान्तिके पौष्टिके चैव होम स्याद्योग्यसाधने । कार्य प्राग्वदनेनाथ सौम्येन वदनेन वा ॥

शान्ति और पुष्टि कर्ममे पूर्वको वा उत्तरको मुख करके होमादि करना चाहिये ।

आकृष्टौ वायुकुण्डे च कौबेरदिङ्मुखेन तु । नैर्ऋतीदिङ्मुखस्तस्मिन्कुण्डे विद्वेषणे हुनेत् ॥

आकर्षण कार्यम उत्तरको मुख करके वायुकोणस्थ कुण्डमे

हवन करे विद्वेषणमे नैर्ऋतकोणको मुख करके वायुकोणस्थ कुण्डमें हवन करै ।

आग्नेयीदिङ्मुखस्त्वेतत्कुण्डे मारुतकेऽपि वा ।
उच्चाटने हुनेन्मत्री मारणे याम्यदिङ्मुख ॥
जुहुयाद्याम्यकुण्डे तु मन्त्री तत्साधनैस्तत ॥

उच्चाटन कर्म्ममें अग्निकोणको मुख करके वायुकोणस्थ कुण्डमे हवन करे और मारणमे दक्षिणको मुख करके दक्षिण दिग्वर्त्ती कुण्डमें हवन करे ।

वज्रलाञ्छिकुण्डे वा ग्रहभूतनिवारणे ।
वायव्यदिङ्मुखो वश्ये कुण्डे योन्याकृतौ हुनेत् ॥
वज्रलाञ्छितकुण्डे वा स्तम्भे प्राग्वदनो हुनेत् ॥

ग्रहभूतादिक निवारणमे षट्कोण कुण्डमें वायुकोणको मुख करके और वशीकरणमे त्रिकोण कुडमे हवन करे, स्तम्भनके प्रयोगमभी पूर्वको मुख करके षट्कोण कुडमे हवन करना चाहिये ।

षट्कर्महवनद्रव्यनिरूपणम् ।

द्रव्याण्यथ प्रवक्ष्यामि तत्तत्कर्मानुसारत ।
शान्तिके तु पय सर्पिस्तिला क्षीरद्रुमेण वा ॥

अमृताख्या लता चैव पायस तत्र कीर्तितम् ॥

दूध, घी, पीपलादि वृक्षक पत्त आर गिलायम शा‌ि कर्म्ममे हवन करै ।

पौष्टिके तु प्रवक्ष्यामि होमद्रव्याण्यत परम् ।
बिल्वपत्रैस्तथाज्यैः स्याज्जातीपुष्पैर्मनगेर च ॥

बेलपत्र, घी और चमेलीके फूलाम पुष्टिकमम हवन करै ।

कन्यार्थी जुहुयाल्लाजै श्रीकाम कमलैस्तथा ।
दध्ना च श्रियमाप्नोति चान्नैश्चान्न घृतप्लुतै ॥
समृद्धौ जुहुयान्मन्त्री महादारिद्र्यशान्तये ॥

क याकी अभिलाषासे खीलाद्वारा, स्त्रीकी अभिलाषासे कमलद्वाग और महासमृद्धिकी इच्छासे दरिद्रके दूग करनेके लिये दही आर घीसे हाम करै ।

लक्षहोमाल्लभेच्छाति घृतबिल्वतिलैर्निधिम् ॥

घृत, बिल्व और तिलस लक्ष हवन करनपर महानिधि प्राप्त हाती है ।

आकृषणे च हवन प्रियगु बिल्वक फलम् ।
जातीपलाशकुसुमै सैन्धवैहयहमेव च ॥

ाप्रयगु, बेल, चमेलीके फूल, पलाशके फूल और सेंधा नमकसे आकर्षणमें हवन करे।

राजिकालवणैर्वापि वश्ये वा पौष्टिकादिषु ।
वश्यार्थी जातिकुसुमैराकृष्टौ करवीरजैः ॥

सफेद सरसों और लवणसे पुष्टिकर्ममें, चमेलीके फूलोंसे वशीकरणमें और कनेरके फूलोंसे आकर्षणमें हवन करे।

कार्पासनिम्बैस्तत्कालैः साध्यकेशैरथापि वा ॥
उच्चाटने काकपक्षैरथ वा मोहने पुनः ॥

उच्चाटनीय मनुष्यके केशोंसे वा कपासके बीज और नीमके बीज मठेमें मिलाकर उससे उच्चाटन कर्ममें और कौवेके परोंसे मोहन कर्ममें हवन करे।

उन्मत्तबीजैर्जुहुयाद्विषरक्तेन मारणम् ॥

धतूरेके बीज और रक्तमिश्रित विषसे मारणमें हवन करे।

अजापयस्तथा सर्पिः कार्पासास्थि नृणामपि ।
तन्मांसश्चापि साध्यस्य नखलोमगणैरपि ॥
एकीकृत्य हुनेन्मत्री शत्रुमारणकांक्षया ॥

बकरीका दूध, घी, कपासके बीज, मनुष्यकी हड्डी, मनुष्यका

मांस और जिसको मारे उस मनुष्यके नखून और रोमोंको मिलाय मारणकी इच्छासे मनुष्य हवन करै ।

जुहुयात्सार्षपैस्तैलैरथ वा शत्रुमारणे ॥

अथवा सरसोंके तेलसे मारण कर्म्ममें हवन करै ।

रोहीबीजैस्तिलोपेतैरुत्सादे जुहुयाद्यवै ॥

रोहितकके बीज, तिल और जौसे उत्सादनकर्ममें हवन करै ।

तुषकंटकसंयुक्तैर्बीजैः कार्पासकैरपि ।
सर्षपैर्लवणाक्तैश्च हुनेत्सर्व्वोऽभिचारके ॥

तुषयुक्त कपासके बीज, सरसों और लवणसे अभिचार कर्ममें हवन करै ।

काकोलूकच्छदैः क्रूरैः कारस्करबिभीतकैः ।
मरीचैः सर्षपैः सिक्थैरर्कक्षीरैः कटुत्रयैः ॥
कटुतैलैः स्नुहीक्षीरैः कुर्य्यान्मारणकर्म्मणि ॥

काक और उल्लू आदि क्रूरपक्षीके पर, कुचिला, बिभीतक, मिर्च सरसों, सिक्थ, आकका दूध, सोंठ, मिर्च, पीपल, कटुतैल और थोहरके दूधसे मारण कर्ममें हवन करै ।

आयुष्कामे घृततिलैर्दूर्वाभिराम्रपर्णकैः ॥

घी, तिल दूर्वा और आमके पत्तोंसे आयुर्वर्द्धन कर्ममें हवन करै।

प्रयुक्तैराम्रपर्णैश्च ज्वरं सद्यो विनाशयेत्।
गुडूच्या मृत्युजयने तथा शान्तौ गजाश्वयोः॥

आमके पत्तोंसे हवन किया जाय तो शीघ्र ज्वर दूर हो जाता है मृत्युको जीतनेके लिये एव घोडा और हाथीको शांतिके लिये गिलोयसे हवन करे।

गौरैस्तु सर्षपैर्हुत्वा सद्यो रोगं हरेद्गवाम्।
वृष्टिकामो वैतसीभिः समिद्भिः पत्रकैस्तथा॥

सफेदसरसों द्वारा हवन करे तो गाओंकी पीडा शीघ्र नष्ट होजाती है। वर्षाकी इच्छासे बेतकी समिध और बेतके पत्तों द्वारा हवन करै।

हुत्वा पुष्टिमवाप्नोति पुत्रजीवैस्तु पुत्रकम्।
घृतगुग्गुलहोमेन वाक्पतित्वं प्रजायते॥

जीवपुत्रिकाकी समिधों द्वारा हवन करनेसे पुष्टिलाभ होता है घी और गूगल द्वारा होम करनेसे वाक्पति होता है।

मल्लिकाजातिविद्रुमनागपुन्नागसम्भवैः।
पुष्पैः सरस्वतीसिद्धिस्तथा सर्वार्थसाधनम्॥

मल्लिकापुष्प, जातीपुष्प, मूगा, नागकेशरके फल और पुन्नागके पुष्प द्वारा हवन करनेसे सरस्वती सिद्ध होती है ।

पयसा लवणैर्वापि हुनेद्वृष्टिनिवारणे ॥

दूध और लवणद्वारा हवन करनेसे वृष्टि रुक जाती है ।

अथ होजिह्वा ।

पद्मरागा सुवर्णाख्या तृतीया भद्रलोहिता ।
लोहितानन्तरं श्वेता धूमिनी च करालिका ॥
राजस्यो रसना वह्नेर्विहृता काम्यकर्मसु ।
विश्वमूर्तिस्फुलिङ्गिन्यौ धूम्रवर्णा मनोजवा ॥
लोहिताख्या करालाख्या काली तामस्य ईरिता ।
एता सप्त नियुज्यन्ते क्रूरकर्मसु मन्त्रिभि ॥
स्वस्वनामसमानाभा स्युर्जिह्वा कनकरेतस ।
हिरण्या गगना रक्ता कृष्णान्य सुप्रभा मता ॥
बहुरूपातिरक्ता च सात्त्विक्यो योगकर्मसु ।
सन्यासा रुद्रभागे द्रुतकनकनिभा कर्षणादौ
हिरण्या वैदूर्या पूर्वभागे प्रभवति गगना स्तं

नादौ रसज्ञा॥ रक्ता बालार्कवर्णा हुतवहविदिशि द्वेषणादौ प्रशस्ता कृष्णा नीलाम्बुजाभा दिशि दनुजपतेर्मारणे सुप्रशस्ता॥ वारुण्यां सुप्रभासा प्रतिदिशि रसना शान्तिके शोणवर्णा हेमाभा चातिचारु पवनदिशि गतोच्चाटने सप्रशस्ता॥ मध्ये कुण्डस्यचान्त प्रभवति बहुरूपा यथार्थाभिधाना॥ वह्नेर्जिह्वा सुधीरैर्हवनविधिसमुज्जृम्भिता लोकनीया॥

अन तर अग्निकी जिह्वाका नाम और किस कर्ममें किस जिह्वासे होम करना चाहिये, वह कहा जाता है। पद्मरागा, सुवर्णा भद्रलाहिता, श्वेता धूमिनी और करालिका, अग्निकी इन कई एक जिह्वाको राजसी जिह्वा कहते है, काम्यकर्ममें इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता है। विश्वमूर्त्ति, स्फूलिंगिनी धूम्रवर्णा मनोजवा, लोहिता कराला और काली यह कइ जिह्वा तामसी कही गई है, मारणादि क्रूर कार्यम इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता है। इन समस्त जिह्वाओंका वर्ण उनके नामानुसार स्थिर करना चाहिये। हिरण्या, गगना,

रक्ता, कृष्णा सुप्रभा, बहुरूपा और अतिरिक्ता इन कई एकको अग्निकी सात्त्विक जिह्वा कहते है, योगकर्ममें इन सब जिह्वाओंकी आवश्यकता होती है। इनके अतिरिक्त वह्निके ईशान कोणमें सुवर्णवर्ण हिरण्या नामवाली जो जिह्वा है, आकर्षण कार्यमें उसकी आवश्यकता होती है। पूर्वदिशामें गगना नामवाली एक जिह्वा है वह नीलकान्तमणिकी समान नीलवर्ण है, स्तम्भन इत्यादि कार्यमें उसकी आवश्यकता होती है। अग्निकोणमें रक्तानामवाली जो जिह्वा है वह तरुण अरुणकी समान लोहितवर्ण है, विद्वेषण कार्यमे उसका प्रयोजन होता है। नैर्ऋतकोणमें कृष्णा नामवाली एक जीभ है, उसका वर्ण नील पद्मकी समान है, मारणादि कर्ममें वह प्रशस्त है। पश्चिमदिशामे सुप्रभा नामवाली एक जिह्वा है, उसका वर्ण लोहित है, शान्तिकार्यमे वह प्रशस्त है। वायुकोणमें अतिरक्तानामक जो जिह्वा है, उच्चाटन कर्ममे उसकी आवश्यकता होती है, उसका वर्ण सुवर्णकी समान है। इनके अतिरिक्त कुण्डके बीचमे बहुरूपानाम्नी एक जिह्वा है, उस जिह्वामें होम करनेसे अर्थलाभ होता है।

वह्नेनामानि।

पूर्णाहुत्यां मृडो नाम शान्तिके वरदस्तथा।
पौष्टिके बलदश्चैव क्रोधोऽग्निश्चाभिचारिके॥

वश्यार्थे कामदो नाम वरदाने च चूडक ।
लक्षहोमे वह्निनाम कोटिहोमे हुताशन ॥

किस कर्ममें अग्निका कौनसा नाम उच्चारण करके होम करना चाहिये इस समय वही कहते है । मृड नामसे पूर्णाहुतिमें, वरदनामसे शांतिकर्ममें, बलदनामसे पुष्टिकर्ममे, क्रोध नामसे अभिचारकर्ममे, कामदनामसे वशीकरणमें चूडकनामसे बलिदानमें, वह्निनामसे लक्षहोममें और हुताशननाम उच्चारण करके कोटि होम करे ।

अथ होम यवस्था ।

द्रव्याशक्तौ घृत होमे त्वशक्ता सर्वतो जपेत् ।
मूलमन्त्राद्दशांश स्यादङ्गादीनां जपक्रिया ॥
अशक्तावुक्तहोमस्य जपस्तु द्विगुणो मत ।
येषां जपे च होमे च सख्या नोक्ता मनीषिभि ॥
तेषामष्टसहस्राणि सख्योक्ता जपहोमयो ।
स्वाहान्तेनैव मन्त्रेण कुर्याद्धोम बलि तथा ॥
नमोऽन्तेन नमस्कारमर्चनञ्च समाचरेत् ।
मन्त्रान्ते नाम सयोज्य तर्पयामीति तर्पणम् ॥
सख्यानुक्तौ जपे होमे चाष्टोत्तरसहस्रकम् ।

यदि यज्ञीयवस्तुका अभाव हो तो केवल मात्र घीके द्वारा होम करना चाहिये । मूल देवताका मन्त्र जितना जपे, उसका दशांश अंगदेवताका मन्त्र जपना चाहिये । घृतके होममें असमर्थ होनेपर होमकी संख्यासे दूना जप करे । जिस जिस स्थानमें होम और जपकी संख्या नहीं कहीगई है, वहाँ आठ हजार जप और आठ हजार होम करे । होमकर्म और बलि दानमें मन्त्रके पीछे स्वाहाशब्द प्रयोग करे । पूजा कालमें अन्तमें नमः शब्द प्रयोग करना चाहिये तर्पणके समय मन्त्रके अन्तमें देवताका नाम जोडदेवे जिस स्थानमें जप और होमकी संख्याका उल्लेख नहीं है वहा एक हजार आठ जप और होम करना चाहिये ॥

अथ स्रुक्स्रुवनियम ॥

षट्त्रिंशदंगुला स्रुक् स्याच्चतुर्विंशांगुलास्रुव ।
मुख कंठ तथा वेदी सप्त चैकाष्टभि क्रमात् ॥
आयामानाहतो दण्डो विंशतिश्च षडंगुल ।
वेदरामांगुलै कुण्डो गर्ता हि चतुरंगुल ॥
खात वेदांगुलैर्वृत्त अंगुलत्रितय खनेत् ।
मेखला द्व्यंगुला तद्वच्छोभा शेष विचिन्तयेत्

वेदी त्र्यंशेन विस्तार कुर्यात्कुण्डमुखाग्रयो ।
कनिष्ठाग्रमित रन्ध्र स्रुचो गृनविनिर्गमे ।
कार्णिकद्व्यंगुल स्वात शङ्के मृगपदाकृति ।
द्वाविंशत्यंगुलो दण्ड आनाहश्च कृतांगुल ॥
दण्डमूलाग्रयोर्गण्डो स्रुवे कङ्कणवद्भवेत् ।
सुवर्णरूप्यताम्रैर्वा स्रुक्स्रुवौ दारुजावपि ॥
आयसीयौ वा स्रुक्स्रुवा कारस्करमयावपि ।
नागेन्द्रलतयोर्विद्यात्क्षुद्रकर्मणि सम्स्थितौ ॥
चन्दन खादिराश्वत्थप्लक्षचूतविकङ्कता ।
चम्पामलकसारश्च पलाशाश्चेति दारव ॥

अब स्रुक् और स्रुवका नियम कहा जाता है स्रुक् छत्तीस अंगुलि प्रमाण और स्रुव चौबीस अंगुलि प्रमाण करना चाहिये उनका मुख सात अंगुल प्रमाण कंठ एक अंगुल और वेदी आठ अंगुलकी बराबर करे दंडका चौडाई और लंबाई क्रमानुसार बीस और छ अंगुल करनी चाहिये स्रुक् और स्रुव इन दोनोंका कुण्डभाग चार अंगुल अथवा तीन अंगुल विस्तृत और तिसमे चार अंगुल गर्त्त करे गर्त गोलाकार और तीन अंगुल प्रमाण

खात करना चाहिये। गर्तके बाहर दो अंगुल मेखला और उसके बाहर शोभा करनी चाहिये कुंडके मुख और अग्रभागका विस्तार वर्गीके तीसरे अंशकी बराबर करना चाहिये स्रुकके अग्रभागमे घृत निकालनेके लिये जो छेद करे, वह कनिष्ठाग्रकी बराबर होना आवश्यक है। यदि स्रुक और स्रुव बनाना हो तो सोना चांदी, तांबा, लोहा, कुचिलाकाष्ठ (कुचलेकी लकडी) वा अन्य काष्ठद्वारा निर्माण करे। छोटे कार्यमे नागे द्रलता द्वारा प्रस्तुत करना चाहिये। यदि काष्ठद्वारा स्रुक् और स्रुव बनावे तो चंदन, खैर, पीपल, पिलखन आम (कठाई) चम्पा आमला और पलाश (ढाक) इनमे जिस किसी काष्ठसे बना सकता है।

अथ होममुद्रा ।

न देवाः प्रतिगृह्णन्ति मुद्राहीनां यथाहुतिम् ।
मुद्रयैवेति होतव्य मुद्राहीन न भोक्ष्यति ॥
मुद्राहीनश्च यो मोहाद्धोममिच्छति मन्दधी ।
यजमान स चात्मान पातयेत्तेन निश्चितम् ॥
तिस्रो मुद्रा स्मृता होमे मृगी हंसी च शूकरी ।
शूकरी करसंकोची हंसी मुक्तकनिष्ठिका ॥

मृगी कनिष्ठातर्जन्योर्होममुद्रयमीरिता।
अभिचारिककार्येषु शूकरी परिकीर्त्तिता॥
नमः स्वाहा वषट् वौषट् हुं फडन्ताश्च जातयः।
शान्तौ वश्य तथा स्तंभे विद्वेषोच्चाटमारणे॥

अब होमकार्यमें मुद्राका नियम कहाजाता है। मुद्राके विना आहुति देनेसे देवता उसको ग्रहण नहीं करते अत एव मुद्राकी सहायतासेही होम करना चाहिये। मुद्राके विना भोजन न करे। जो दुर्बुद्धि मोहके वशीभूत होकर विना मुद्रा होमका अनुष्ठान करता है। वह आत्मा और यजमानको पतित करता है। होमकार्यमें तीन प्रकारकी मुद्राका व्यवहार करना चाहिये। मृगी, हंसी और शूकरी। हाथोंके सकोडनेसे शूकरी मुद्रा, कनिष्ठाके अतिरिक्त अन्य तीन अंगुलियोंसे हंसी मुद्रा एवं कनिष्ठा और तर्जनीसे मृगी मुद्रा होती है। अभिचारकर्ममें शूकरीमुद्रा ही प्रशस्त है। शान्तिकर्ममें नमः शब्द वशीकरणमें स्वाहा, स्तंभनमें वषट्, विद्वेषमें वौषट् उच्चाटनमें हुँ और मारणकर्ममें फट् शब्दका प्रयोग करके होम करना चाहिये।

० अ नम न मन्त्र श न चान्द्रव।

अथ शान्तिकर्म ।

ज्वरशान्ति ।

ॐ शान्ते शान्ते सर्वारिष्टनाशिनी स्वाहा । एकलक्षजपेनाऽपि सर्वशान्तिर्भवेद्ध्रुवम् ॥

ॐ शान्ते शान्ते इत्यादि उपरोक्त मन्त्र एक लाख जपनेसे ज्वर और अन्यान्य सब प्रकारके रोगोकी शान्ति होती है इसमें सन्देह नही * ।

कुकृत्याशान्ति ।

ॐ सँ साँ सिँ सीँ सुँ सूँ सेँ सैँ सोँ सौँ सँ सः वँ वाँ विँ वीँ वुँ वूँ वेँ वैँ वोँ वौँ वँ वः हँस अमृतवर्चसे स्वाहा । अनेन मन्त्रेण उदकशराव अष्टोत्तरशताभिमन्त्रित पिबेत् प्रातरुत्थाय सर्वव्याधिरहित सवत्सरेण भविष्यति ।

---

* प्रथम जिस प्रकार पूजा और होमकी विधि कही है उसी नियमसे सब कार्य सम्पन्न करके फिर मन्त्र जपना चाहिये सब कार्यामेंही यह विधि निर्दिष्ट है ।

एक नवीन शरावेमें जल भरकर उक्त मन्त्रद्वारा वह जल एक सौ आठवार अभिमन्त्रित करके प्रातःकालमें सेवन करे। इससे सब प्रकारके रोग दूर होते है और यदि कोई दुष्ट किसी प्रकार अपना अनभल करे अथवा कुदृष्टि लगजाय, उसकीभी शान्ति होजाती है।

इति शांतिकर्म।

अथ वशीकरणम्।

पुष्ये पुनर्नवामूल करे सप्ताभिमन्त्रितम्।
बद्धा सर्वत्र पूज्येन सर्वलोकवशङ्कर ॥
ओनम सर्वलोकवशङ्कराय कुरु कुरु स्वाहा ॥

पुष्यनक्षत्रमे पुननवा (विषखपरा) की जड लाकर इस मन्त्रमे सात वार अभिमन्त्रित करके हाथम बाँधनेसे सब लोक वशीभूत होते है। यहा यहभी जानरखना आवश्यक है कि उक्त मन्त्र यथाविधि एक लाख जपकर सिद्ध होनेपर कार्यमें प्रयोग करे।

रविवारे गृहीत्वा तु कृष्णधुस्तूरपुष्पकम्।
शाखाळतां गृहीत्वा तु पत्र मूल तथैव च ॥

पिष्ट्वा कर्पूरसंयुक्तं कुंकुमं रोचनं समम् ।
तिलके स्त्री वशीकुर्याद्यदि साक्षादरुन्धती ॥

रविवारके दिन काले धतूरेके फूल, शाखा, लता, पत्ते और जड लेकर पीसलेवे और फिर इसके साथ कपूर कुकुम एवं गोरोचन मिलाकर ललाटमें तिलक धारण करे यह तिलक प्रथम जो स्त्री देखेगी वह अरुन्धती होनेपरभी वशीभूत होगी। इसमें सन्देह नही ।

ओम् नमः कामाख्या देवि अमुकी मे वशङ्करी स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

समस्त नारियोंके वशीकरण कार्यमें प्रथम उपरोक्त ओ३म् नमः कामाख्यादेवी इत्यादि मन्त्र एक सौ आठ वार यथाविधि जपद्वारा सिद्ध करके फिर वशीकरणकार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये नही तो कार्य सिद्धि नही होती ।

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म यस्याङ्गे निक्षिपेन्नरः
वशीभवति सा नारी नान्यथा शङ्करोदितम् ।

ब्रह्मदण्डी और चिताकी भस्म एकत्र करके जिस स्त्रीके अंगपर फेंकी जाय वह वशीभूत होती है । महादेवजीने कहा है कि, यह वचन कदापि मिथ्या होनेवाला नहीं है ।

गोदन्तं नरदन्तञ्च पिष्ट्वा तैलेन पेषयेत् ।
एभिस्तु तिलकं कृत्वा कान्तावश्यकरं परम् ॥

नील गायका दांत और मनुष्यका दांत एकत्र करके तेलके साथ पीसलेवे फिर इसके द्वारा ललाटमें तिलक करनेसे उसका दर्शन करतेही अपनी स्त्री वशीभूत होती है।

कुंकुमं चन्दनञ्चैव कर्पूरं तुलसीदलम् ।
गवां क्षीरेण तिलकं राजवश्यकरं परम् ॥
ओम् नमो भास्कराय त्रिलोकात्मने अमुकमहीपतिं मे वशीं कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

यदि राजवशीकरण करना हो तो प्रथम उपरोक्त ओम् नमो भास्कराय इत्यादि मंत्र यथाविधि अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। कुंकुम लाल चन्दन, कपूर, और तुलसीदल यह सब पदार्थ गायके दूधमें मथकर ललाटमें तिलक धारण करनेपर उस तिलकका देखतेही राजा वशीभूत होता है।

अपामार्गस्य बीजानि गृहीत्वा पुष्यभास्करे ।

खाद्ये पाने प्रदातव्य राजवश्यकर परम् ॥

पुष्य नक्षत्रमे चिरचिरेके बीज लेकर वह बीज राजाको भोजन अथवा पानीके सहित मिलाकर सेवन करानेमे उसको वशीभूत किया जाता है ।

गोरोचन गात्रमल कदलीरससयुतम् ।
एभिस्तु तिलक कृत्वा पतिवश्यकर परम् ॥
ओम् नमो महा यक्षिणि पतिं मे वश्य कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ॥

पतिवशीकरण करना हो तो प्रथम यथाविधिपूर्वक पूर्वकथित रूपमे पूजा होमादि करके उपरोक्त मन्त्र एक सौ आठ वार जपद्वारा सिद्ध कर फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये। गोरोचन अपने शरीरका मल और केलका रस यह तीन पदार्थ एकत्र कर ललाटमें तिलक लगानेसे उस तिलकके देखतेही पति वशीभूत होता है ।

ह्री ह्री कालि कालि स्वाहा।लक्षजपेन त्रिपथे सिद्धिः

त्रिराहेमे बैठकर उपरोक्त मन्त्र एक लक्ष जपनेसे क्या पुरुष क्या नारी सबही वशीभूत होते है ।

इति वशीकरणम् ।

अथ स्तम्भनम् ।

आसनस्तम्भनम् ।

ओम् नमो दिगम्बराय अमुकासनस्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ।
श्वेतगुञ्जाफल क्षिप्त नृकपाले तु मृत्तिकाम् ।
बलि दत्त्वा तु दुग्धस्य तस्य वृक्षो भवेद्यदा ॥
तस्य शाखालता ग्राह्या यस्याग्रे ता विनिक्षिपेत् ।
तस्य स्थाने भवेत्स्तम्भ सिद्धियोग उदाहृत ॥

यदि आसन स्तभन करना हो तो प्रथम ओमूनमो दिगम्बराय इत्यादि मन्त्र एक सौ आठ वार जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये। एक मनुष्यकी खोपडीमे मिट्टी भरकर उसमें सफेद चोंटलीके बीज बोदवे और फिर उसकी जडको नित्य दूधसे सींचे फिर उस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होनेपर उसका शाखा, मूल और लता जिसके सन्मुख डाली जाय, उसीका आसन स्तभित होगा फिर वह पुरुष उठकर दूसरे स्थानमें नही जा सकेगा ।

अग्निस्तम्भनम् ।

ओम् नमो अग्निरूपाय मम शरीरे स्तम्भन कुरु
कुरु स्वाहा अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ।
वसां गृहीत्वा माण्डूकी कौमारीरसपेषिताम् ।
लेपमात्रे शरीराणा अग्निस्तम्भ प्रजायते ॥

यदि अग्नि स्तम्भन करना हो तो प्रथम उपरोक्त मन्त्र अष्टोत्तर शत जपद्वारा सिद्ध करके फिर कायम प्रवृत्त होना चाहिये। मेडककी चरबी ला घीकुवारके रसमे मथकर देहमें लेप करनसे अग्नि स्तम्भित होती है अर्थात् उसका शरीर अग्निमे नहीं जलता।

आज्य शर्करया पीत्वा चर्वयित्वा च नागरम् ।
तप्तलोह मुखे क्षिप्त वक्त्र न दह्यते क्वचित ॥

शर्करा और घृत सेवन करके सोंठ चाबनेसे उस समय यदि उसके मुखमे तपाहुआ लोहा लगाया जाय, तो मुख नहीं जलेगा।

शस्त्रस्तम्भनम् ।

ॐ अहो कुम्भकर्ण महाराक्षस नैकषागर्भसम्भूत परसैन्यस्तम्भन महाभगवान् रुद्र आज्ञापयति स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ।

खर्जूरीमुखमध्यस्था कटिबद्धा च केतकी ।
भुजदण्डस्थिते चार्के सर्वशस्त्रनिवारणा ॥

ऊपर लिखे ' ॐ अहो कुम्भकर्ण ' इत्यादि मंत्र यथाविधि अर्थात् पूर्वकथित नियमानुसार पूजा होमादिपूर्वक अष्टोत्तरशत जपकर सिद्ध होनेपर फिर स्तम्भनकार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। मुखमें खजूरकी जड कमरमें केतकीकी जड और बाहुमें आककी जड धारण करनेसे सब अस्त्र स्तंभित किये जाते है अर्थात् उस व्यक्तिके देखनेपर अस्त्र स्तंभित हो जाते है ।

गृहीत्वा रविवारे तु बिल्वपत्रञ्च कोमलम् ।
पिष्ट्वा बिससमं सर्वं शस्त्रस्तम्भनलेपनात् ॥

रविवारके दिन कोमल बेल्पत्र लेकर उनको पद्ममृणालके सहित एकत्र पीस लेवे । फिर अंगमें लेपन करनेसे सब शस्त्र स्तंभित हो जाते है ।

सैन्यस्तम्भनम् ।

ॐ नमः कालरात्रि त्रिशूलधारिणि मम शत्रुसैन्यस्तम्भनं कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ।
रविवारे तु गृह्णीयात् श्वेतगुञ्जाफलं सुधीः ।
निखनेच्च श्मशाने वै पाषाणं तत्र दापयेत् ॥

अष्टौ च योगिनी पूज्या रौद्री माहेश्वरी तथा।
वाराही नारसिंही च वैष्णवी च कुमारिका ॥
लक्ष्मीर्ब्राह्मी च सम्पूज्या गणेश बटुक तथा।
क्षेत्रपाल सदा पूज्य सेनास्तम्भो भविष्यति॥
पृथक् पृथग्बलि दत्त्वा दशानामविभागत ।
मास मद्य तथा पुष्प धूप दीपावलिक्रिया ॥
यस्मै कस्मै न दातव्य नान्यथा शंकरोदितम्॥

ऊपर (ॐ नम कालरात्रि) नामक जो म त्र लिखागया है, यह म त्र पूर्वोक्त विधिसे अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करके फिर सैन्यस्तम्भन कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये। रविवारके दिन सफेद चोटलीका फल लेकर श्मशानमे गाडदेवे। उसके ऊपर एक टुकडा पत्थरका रखकर रौद्री, माहेश्वरी, वाराही, नारसिंही, वैष्णवी, कौमारी, महालक्ष्मी और ब्राह्मी इन आठ योगिनीकी पूजा करे एव गणेश बटुक और क्षेत्रपालकी अलग अलग पूजा और बलिदान करे। मास और मदिराके द्वारा इन सब देवताओंकी पूजा करनेसे शत्रुसैन्य स्तंभित होती है। इस प्रक्रियाको साधारण पुरुषोंके निकट प्रकाशित न करे महादेवजीने स्वय इस प्रकार कहा है इसम सन्देह न करना चाहिये।

से यविमुखीकरणम् ।

ॐ नमो भयङ्कराय खड्गधारिणे मम शत्रुसैन्य पला
यिन कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ।
भौमवारे गृहीत्वा तु काकोलूकौ तु पक्षिणौ ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्र तस्य नाम समन्वितम् ॥
गोरोचने गले बद्धा काकोलूकस्य पक्षिण ।
सेनानीसन्मुख गच्छेन्नान्यथा शकरोदितम् ॥
शब्दमात्रे सैन्यमध्ये पलायन्तेऽर्तिनाश्चितम् ।
राजा प्रजा गजादिश्च नान्यथा शकरोदितम् ॥

युद्धस्थलम जिस उपायसे शत्रुकी सेनाको रणसे विमुख करना चाहिये वह कहा जाता है। ऊपर (ॐ नमो भयङ्कराय) इत्यादि जो मत्र लिखा गहा है यह म त्र नियमानुसार अष्टोत्तर शत जप कर सिद्ध होनपर फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये। मगलवारके दिन काक और उल्लूका लेकर गोराचनद्वारा भोज्पत्रपर इस मन्त्रके साथ शत्रुका नाम लिख फिर यह भोजपत्र काक और उल्लूके गलेम बाँधकर उनको छोडदेव जिस समय यह दोना पक्षी शत्रुके सन्मुख जाँयगे शत्रु उसी समय रणमे

पीठ दिखाकर भागेगा क्या राजा, क्याप्रजा, क्या हाथी, क्या घोडा, क्या पैदल इन पक्षियाके देवता भी सब अत्यन्त भय मानते है ।

जलस्तम्भनम् ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय जल स्तम्भय स्तम्भय ठ ठ ठ ।

पद्मक नाम यद्द्रव्य सूक्ष्मचूर्णन्तु कारयेत् ।
वापीकूपतडागादौ निक्षिपेत्स्तम्भते जलम् ॥

यदि जलस्तम्भन करना हो तो प्रथम ऊपर लिखा है (नमो भगवते रुद्राय) इत्यादि मन्त्र नियमानुसार अष्टोत्तर शत जप द्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये पद्माखको भली प्रकार पीसकर इस मन्त्रसे एकसौ आठ वार अभिमन्त्रित करे फिर इसको वापी (बावडी) कूप (कुआ) तडागादि (तालावादि) मे डालनेसे तत्काल जलस्तमन होता है ।

मेघस्तभनम् ।

इष्टकाद्वयमादाय श्मशानाङ्गारसपुटे ।
स्थापयेद्वनमध्ये च मेघस्तम्भनकारकम् ॥

---

१ मनुष्यस्तमन, गोभैंसादिस्तभन, निद्रास्तभन मनस्तम्भन, नौका स्तमन इन कई एक कार्योमेंभी इसी मन्त्रकी आवश्यकता है ।

श्मशानके अँगारमें दो इटे रखकर किसी निर्जन वनमें स्थापन करे इस प्रकार कार्य करनेसे मेघस्तभन होता है ।

नौकास्तम्भनम् ।

तरण्यां क्षीरकाष्ठस्य कील पञ्चाङ्गुल क्षिपेत् ।
नौकास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥

क्षीरीवृक्षकी लकडीका पाच अँगुल प्रमाण कीलक बनाकर नौकामें डाल देनेसे वह नौका स्तम्भित होती है स्वय मूलदेव ऐसा कहे गये है ।

मनुष्यस्तम्भनम् ।

नीत्वा रजस्वलावस्त्र गोरोचनसमन्वितम् ।
यस्य नाम क्षिपेत्कुम्भे सद्य स्तम्भनकारक ॥

रजस्वलास्त्रीके वस्त्र लेकर गोरोचन मिलाय शत्रुका नाम उच्चारण पूवक कलशके भीतर डाल देनसे वह व्यक्ति स्तभित होता है ।

निद्रास्तभनम् ।

मूल बृहत्या मधुक पिष्ट्वा नस्य समाचरेत् ।
निद्रास्तम्भनमेतद्धि मूलदेवेन भाषितम् ॥

बृहतीकी जड (कटेरीकी जड) और मुलैठी एकत्र पीसकर नस्य (हुलास) सूघनेपर निद्रा स्तभित होती है । मूलग्रन्थ इस प्रक्रियाको कह गये है ।

गोमहिष्यादिस्तम्भनम् ।

उष्ट्रस्यास्थि चतुर्दिक्षु निखनेद्भूतले ध्रुवम् ।
गोमहिष्यादिकस्तम्भ सिद्धियोग उदाहृत ॥
उष्ट्ररोम गृहीत्वा तु पशूपरि विनिक्षिपेत् ।
पशूना भवति स्तम्भ सिद्धियोग उदाहृत ॥

गोष्ठस्थान अथवा गोशालाके चारों ओर ऊटकी हड्डी गाड देनेसे गौ भैस इत्यादि स्तभित होती है । ऊटके रोम किसी पशुके ऊपर डाल देनेसे भी वह स्तभित हो जाता है ।

इति स्तभनम् ।

अथ मोहनम् ।

ओम् ह्री कालि कपालिनि घोरनादिनि विश्व विमोहय जगन्मोहय सर्वं मोहय ठ ठ ठ स्वाहा । लक्षजपेन् सिद्धि ॥

यदि मोहनकार्य करना हो तो प्रथम यथाविधि पूजा होम

इत्यादि करके यह मन्त्र लक्षजपद्वारा सिद्ध होनेपर कायम प्रवृत्त होना चाहिये।

श्वेतगुञ्जारसै पेष्य ब्रह्मदण्ड्याश्च मूलकम्।
लेपमात्रे शरीराणां मोहन सर्वतो जगत्॥

सफेद चोटलीके रससे ब्रह्मदण्डीकी जड पीसकर सब शरीरमे लेप करनेपर जगत्‌का मोहित किया जाता है।

गृहीत्वा तुलसीपत्र छायाशुष्क तु कारयेत्।
अश्वगन्धासमायुक्त विजयाबीजसयुतम्॥
कपिलाक्षीररसार्द्धेन वटी रक्तिप्रमाणत।
भक्षिता प्रातरुत्थाय मोहयेत्सर्वतो जगत्॥

प्रथम तो तुलसीपत्र लेकर छायामे सुखावे। फिर उसमे भगके बीज और असगन्ध मिलाकर कपिलाके दूधमे मथकर एक रत्ती प्रमाण गोली बनावे। प्रात समय यह गोली सेवन करनेसे सम्पूर्ण विश्वको मोहित किया जाता है।

श्वेतार्कमूल सिन्दूर पेषयेत्कदलीरसे।
अनेनैव तु तन्त्रेण तिलक लोकमोहनम्॥

सफेद आककी जड और सिंदूर एकत्र कदलीरसमे पीसकर ललाटमे तिलक करनेसे समस्त लोकोको मोहित किया जाता है

विल्वपत्र गृहीत्वातु छायाशुष्कतु कारयेत् ।
कपिलापयसा सार्द्ध वटी कृत्वा तु गोलकम् ॥
एभिस्तु तिलक कृत्वा मोहन सर्वतो जगत् ॥

प्रथम तो वेलके पत्ते छायामे सुखाकर चूर्ण करले, इस चूर्णके साथ कपिलीका दूध मिलाकर गोली बनालेनी चाहिये । इस गोलीको घिसकर ललाटमे तिलक करनेसे मनुष्य सब जगतको मोहित कर सकता है ।

इति मोहनम् ।

अथ विद्वेषणम् ।

ॐ नमो नारायणाय अमुक अमुकेन सह विद्वेषं कुरु कुरु स्वाहा ॥

समस्त विद्वेषण कार्यके प्रथम नियमानुसार उक्त मन्त्र अष्टोत्तरशत जप द्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये ।

एकहस्ते काकपक्षमुल्लूपक्षं करेऽपरे ।
मन्त्रयित्वा मिलत्यग्र कृष्णसूत्रेण बन्धयेत् ।
अञ्जलि च जले चैव तर्पयेत् हस्तपक्षके ।
एव सप्तदिन कुर्यादष्टोत्तरशतं जपेत् ॥

गृहीत्वा गजकेश च गृहीत्वा सिंहकेशकम्।
गृहीत्वा मृत्तिकापाद पुत्तली निखनेद्भुवि॥
अग्निस्तस्योपरिस्थाप्यो मालतीकुसुम हुनेत्।
विद्वेष कुरुते तस्य नान्यथा शकरोदितम्॥

इस हाथमें कौवेके पख और दूसरे हाथमें उल्लूके पख लेकर प्रथमोक्त म त्र पाठपूर्वक दोनों पखोका अग्रभाग मिलाकर काले डोरेसे बाँधदेवे। फिर यह दोना पख हाथमे लेकर जलमे तर्पण करना चाहिये। एक सप्ताह (सात दिन तक) इस प्रकार तर्पण करके प्रति दिन विद्वेषण म त्र एक सौ आठ वार जपे। फिर हाथी और सिंहके बाल लाकर जिन दो मनुष्योंमें विद्वेष उत्पन्न करना हो, उनकी दो पुतली बनाकर उन बालोंके सहित किसी स्थानमें गाड देवे। पीछे उस स्थानमें अग्नि रखकर मालतीके फूलोसे होम करना चाहिये इस प्रकार करनेसे उन दोनों पुरुषोंके बीच विद्वेषभाव उत्पन्न होता है। महादेवजी स्वय ऐसा कहगये है।

गृहीत्वा गजदन्त च गृहीत्वा सिंहदन्तकम्।
पेषयेत् नवनीतेन तिलक द्वेषकारकम्॥

हाथीका दात और सिंहका दात माखनके साथ एक एकत्र पीसकर जिन दो मनुष्योंके कपालमें तिलक लगा दिया जाय उन दोनोंके बीच विद्वेष उत्पन्न होता है ।

इति विद्वेषणम् ।

अथोच्चाटनम् ।

ॐ नमो भगवते रुद्राय दंष्ट्राकरालाय अमुक पुत्रबांधवै सह हन हन दह दह पच पच शीघ्रमुच्चाटयोच्चाटय हुँफट् स्वाहा ठ ठ । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ॥

यह मन्त्र नियमानुसार एक सौ आठ बार जपद्वारा सिद्ध करके फिर उच्चाटन कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये । उच्चाटन कर्मके किसी स्थानमे मन्त्रका उल्लेख होनेसे वहाभी यही मन्त्र जानना चाहिये ।

**काकोलूकस्य पक्ष तु हुत्वा चाष्टाधिक शतम् ।
यन्नाम्ना मन्त्रयोगेन तदास्योच्चाटन भवेत् ॥**

उच्चाटन मन्त्रके सहित उद्देश्य मनुष्यका नाम उच्चारण करके कौवे और उल्लूके पखोद्वारा एक सौ आठ होम करनेपर उस मनुष्यका उच्चाटन होता है ।

ब्रह्मदण्डी चिताभस्म शिवलिङ्गे प्रलेपयेत् ।
सिद्धार्थं चैव संयुक्तं शनिवारे क्षिपेद्गृहे ॥
उच्चाटनं भवेत्तस्य जायते मरणान्तिकम् ।
विना मन्त्रेण सिद्धिश्च सिद्धियोग उदाहृत ॥

एक शिवलिंग बनाकर उसपर ब्रह्मदंडी और चिताकी भस्मद्वारा लेप करे और उसके साथ सिद्धार्थ (सफेद सरसों) युक्त कर शनिवारकी रात्रिमें जिसके घर फेंकाजाय, उस पुरुषका उच्चाटन होता है इस कार्यकी सिद्धिमें किसी मन्त्रके पढनेकी आवश्यकता नहीं है ।

इत्युच्चाटनम् ।

अथाकर्षणम् ।

ॐ नमो आदिपुरुषाय अमुकं आकर्षणं कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धिः ॥

यह मंत्र नियमानुसार अष्टोत्तरशत जपद्वारा सिद्ध करके फिर आकर्षण कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये । इसके विपरीत करनेसे कभी कार्य सिद्ध नहीं होगा ।

कृष्णधुस्तूरपत्राणां रसं रोचनसंयुतम् ।
भूर्जपत्रे लिखेन्मन्त्रं श्वेतकरवीरलेखनैः ॥

यस्य नाम लिखेन्मध्ये खदिराङ्गारेण दापयेत् ।
शतयोजनमायाति नान्यथा शङ्करोदितम् ॥

काले धतूरेके पत्तोंका रस और गोरोचन इन दो पदार्थ द्वारा सफेद कनेरकी लेखनीसे भोजनपत्रपर प्रथमोक्त मन्त्र सहित जिस पुरुषका नाम लिखकर जलते हुए खैरके अँगारोंमें तपाया जाय वह पुरुष शतयोजन (चार सौ कोस) दूर होनेपरभी खिंचकर आजाता है महादेवजी स्वयं इस प्रकार कह गये हैं ।

अनामिकाया रक्तेन लिखेन्मन्त्रं च भूर्जके ।
यस्य मध्ये लिखेन्नाम मधुमध्ये च निक्षिपेत् ॥
तदा चाकर्षणं याति सिद्धियोग उदाहृतः ।
यस्मै कस्मै न दातव्यं देवानामपि दुर्लभम् ॥

अनामा अँगुलीके रक्तद्वारा मन्त्रसहित जिस मनुष्यका नाम भोजपत्रपर लिखकर मधुमें रक्खे वही मनुष्य खिंचकर आता है यह योग देवताओंकोभी दुर्लभ है जिस किसी मनुष्यका यह योग नहीं देना चाहिये ।

इत्याकर्षणम् ।

अथ मारणम् ।

स्वाहा मारय हुँ अमुकं ह्रीं फट् ।

यन्त्रमिदं लिखेद्भूर्जे रोचनाकुंकुमेन तु ।
भौमे वा मन्दवारे च गले बद्धारिं नाशयेत् ॥
ॐ चण्डालिनि कामाख्यावासिनि वनदुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा । अयुतजपेन सिद्धिः ॥

ओम् चण्डालिनि कामाख्या वासिनि वन दुर्गे क्लीं क्लीं ठः स्वाहा यह मन्त्र यथाविधि दश हजार जपद्वारा सिद्ध करके तब मारण कार्यमें प्रवृत्त होना चाहिये जो मनुष्य आततायी है अर्थात् जो मनुष्य वध करनेमें उद्यत हुआ है, ऐसे मनुष्यपर मारण क्रियाका प्रयोग कर सकता है । इसके अतिरिक्त दूसरे किसी मनुष्यपर इसका प्रयोग करनेसे कार्य सिद्ध होना तो दूर रहे, वरन अपनेकाही मृत्युके मुखमें गिरना पडता है । अत एव साधक जन इस विषयमें विशेष सावधानीसे कार्य करें । ऊपर जो यन्त्र अंकित हो रहा है भोजपत्रपर गोरोचन और कुंकुमद्वारा यह यन्त्र अंकित करके मंगलवारमें अथवा शनि वारके दिन गलेमें धारण करनेपर उद्देश्य आततायी शत्रु मृत्युके कराल गालमें गिर जाता है ।

इति मारणम् ।

अथ भूतिनीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

व्योमवक्त्र महाकाय स्थित्युत्पत्तिलयात्मक ।
भूतिनीसाधनं ब्रूहि कृपा मे यदि वर्त्तते ॥

उन्मत्तभैरवीने उन्मत्त भैरवसे पूछा कि हे व्योमवक्त्र महाकाय! आप सृष्टि स्थिति और प्रलयके करनेवाले हैं, यदि मुझपर आपकी कृपा हो तो भूतिनीसाधनका वर्णन कीजिये।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

भूतिनीसाधनं वक्ष्ये क्रोधराजेन भाषितम् ।
दरिद्राणां हितार्थाय संसारार्णवतारकम् ॥

उन्मत्तभैरवने कहा हे भैरवी! मैं दरिद्री पुरुषोंका हित करनेके लिये क्रोधराजकथित भूतिनीसाधन तुम्हारे निकट वर्णन करता हूं, सुनो। यह साधन संसारसमुद्रसे पार उतार देनेवाला है।

भूतिनी कुण्डलधारिणी च ।
सिन्दूरिणी चाप्यथ हारिणी च ॥
नटी तथा चातिनटी च चेटिका ।
कामेश्वरी चापि कुमारिका च ।

भूतिनी, कुण्डलधारिणी, सिंदूरिणी, हारिणी, नटी, अतिनग्नी, चेटिका, कामेश्वरी और कुमारिका इत्यादि अनेक रूप धारणपूर्वक साधककी अभिलाषानुसार पत्नी जननी अथवा भगिनी रूपमे दर्शन देकर उसका मनोरथ पूर्ण करते है ।

ॐ ह्रौं क्रूँ क्रूँ क्रूँ कटु कटु ॐ अमुक क्रूँ क्रूँ क्रूँ ॐ अ । इति भूतिनीमन्त्र ।

चम्पावृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
दिनानि त्रीणि जापान्ते उदारार्चनमाचरेत् ॥
धूपञ्च गुग्गुलु दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम् ।
अर्द्धरात्रे गते देवि समागच्छति भूतिनी ॥
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टा मात्रादिकाभवेत् ।
मातेत्यष्टशतानाञ्च वस्त्रालङ्कारभोजनम् ॥
भगिनी चेत्तदा नारी दूरादाकृष्य सुन्दरीम् ।
रस रसाञ्जन दिव्य विधान च प्रयच्छति ।
भार्यां च पृष्ठमारोप्य स्वर्गं नयति कामिता ।
दीनाराणां सहस्राणि नित्य रसरसायनम् ॥
भोजनं कामिक देवी साधकाय प्रयच्छति ॥

रात्रिकालमे चम्पावृक्षके नीचे बैठकर आठ हजार भूतिनीका मन्त्र जपना चाहिये। भूतिनीका मन्त्र ऊपर लिख रहा है। इस प्रकार तीन दिन जप कर महापूजा करनी चाहिये। फिर गूगलकी धूप देकर पुनर्वार जप करनेमे प्रवृत्त होवे। आधीरात बीत जानेपर भूतिनीदेवी आती है उस काल चन्दनके जलसे अर्घ्य देना चाहिये। इस प्रकार करनेपर भूतिनी देवी प्रसन्न होकर साधककी अभिलाषानुसार भार्या जननी वा भगिनीके रूपमे प्रकट होती है। जननी होनेपर आठ सौ वस्त्र, गहने और आहार प्रदान करती है। यदि भगिनीरूपमे आवे तो दूरसे सुंदर स्त्री लाकर साधकको देती है और अनेकप्रकारके रसायन खाद्य पदार्थ अर्पण करती है। यदि स्त्रीके रूपमे आवे तो साधकको पीठपर चढाकर स्वर्गधाममे ले जाती है और प्रति दिन हजार स्वर्णमुद्रा (अशरफी) और नाना प्रकारके रसयुक्त अभिलाषानुसार खानेके पदार्थ अर्पण करती है। मन्त्रके जिस स्थानमे अमुक शब्द है तहां भूतिनीकी कुण्डलधारिणी इत्यादिमे जिसकी इच्छा हो उसका नाम लेना चाहिये।

रात्रौ गत्वा श्मशाने च जपेदष्टसहस्रकम् ॥

जपान्ते कुण्डलवती समागच्छति सन्निधिम् ॥

रुधिरार्घ्येण सन्तुष्टा मातृवत् पालयत्यपि ।
पञ्चविंशतिदीनारं ददाति म्रियतेऽन्यथा ॥

रात्रिके समय श्मशानमें जाकर आठ हजार मंत्र जपे जपके अंतमें कुण्डलवती भूतिनी देवी साधकके पास आती है उस काल साधक रक्तसे अर्घ्य दे। इस प्रकार करनेसे देवी प्रसन्न होकर माताकी समान साधककी रक्षा करती है और पचीस सुवर्ण मुद्रा (अशरफी) प्रदान करती है ।

शून्ये देवालये रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
सिन्दूरिणी समायाति भार्याकर्म करोति च ॥
वस्त्रादिभोजनं तुष्टा द्वादशेऽह्नि प्रयच्छति ।
पञ्चविंशतिदीनारं भोज्यं चापि रसायनम् ॥

रात्रिके समय सूने देवमन्दिरमें बैठकर आठ हजार मंत्र जपना चाहिये इस प्रकार करनेपर सिन्दूरणी देवी आनकर भार्या कर्म साधन करती है और बारहवें दिन प्रसन्न होकर वस्त्र भोजनादि और पचीस सुवर्ण मुद्रा प्रदान करती है ।

गत्वैकलिङ्गं यामिन्यां जपेदष्टायुतं ततः ।
हारिणी शीघ्रमागत्य भाषते किंकरोमि च ॥

साधकेनापि वक्तव्य भार्या भव सुशोभने ।
कामिताष्टौ दीनागणि भोज्य यच्छति कामिनी॥

एक शिवलिंगके समीप बैठकर रात्रिकालमे आठ अयुत मत्र जपना चाहिये इस प्रकार करनेपर हारिणी देवी शीघ्रतासे आकर साधकसे कहती है कि मे तुम्हारा क्या काय करू तब साधक कहे कि हे सुन्दरी ! आप मेरी भार्या हूजिय यह कहनेपर भूतिनी देवी प्रसन्न होकर आठ काञ्चन मुद्रा और भोजनके पदाथ प्रदान करती है ।

वज्रपाणिगृह गत्वा मन्निधौ प्रतिमां लिखेत् ।
दत्त्वा पुष्प कारवीर जपेदष्टसहस्रकम् ॥
नटयर्द्धरात्रे आयाति साधकस्यान्तिके वशात् ।
सरक्तचन्दनेनार्घ्य दत्त्वा ज्ञापयसीति किम् ॥
वक्तव्य साधकेनापि किङ्करीति भवेति च ।
वस्त्रालङ्करण भोज्यमन्वह प्रति यच्छति ॥
व्यय सर्व प्रकर्त्तव्य न किञ्चिद्धारयेद्गृहे ।

वज्रपाणिके मन्दिरम जाकर प्रतिमूर्ति अकित करे फिर कनेरके फूलो द्वारा पूजा करके आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये । इस

प्रकार जप करनेपर आधीरातके समय नटी देवी साधकके निकट आती है। उनके आनेपर लाल चंदनके जलसे अर्घ्य देवे। इस प्रकार करनेसे देवी प्रसन्न होकर साधकके पास आकर कहती है कि, तुम्हारा क्या कार्य करूं? तब साधक कहे कि हे देवि। तुम मेरी टहलनी हो जाओ। तब देवी साधककी टहलनी होकर उसका नित्य वस्त्र, गहने और खानेके पदार्थ अर्पण करती है।

नीचगासङ्गमं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ॥
सप्तमाहावसानेषु पूजां कुर्यादनुत्तमाम् ॥
तिरोभावं गते सूर्ये धूपयेच्चन्दनेन च ॥
जपेद्यावदर्द्धरात्रं समायाति महानटी ॥
आगता सा भवेद्भार्या नित्यं स्वर्णपलं शतम् ।
प्रभाते याति सन्त्यज्य सर्वशेषं व्ययेद्बुधः ॥
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥

नदीके संगम स्थानमें जाकर मूल मंत्र आठ हजार जपने चाहिये। इस प्रकार सात दिन जप करके अनेक भांतिके उपचारसे देवीकी पूजा करनी चाहिये। जब सूर्य अस्त हो उस समय चंदनद्वारा धूप देनेपर आधीरातमें महानटी साधकके पास

भायाके रूपमें आती है और फिर नित्य साधकको सौ पल सुवर्ण देकर प्रात समय लौट जाती है ।

यामिन्यां स्वगृहद्वारे जपेदष्टसहस्रकम् ।
ऽयह यावज्जपान्ते ऽसौ समायात्यन्तिके पुन ॥
चेटीकर्म करोत्येव गृहसस्कारकर्म च ।
करोति क्षेत्रज कर्म वज्रपाणिप्रसादज ॥

रात्रिकालमें अपने घरके दरवाजेपर बैठकर आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये । इस प्रकार तीन दिन जप करनेपर ~~मूर्तिनी~~ साधकके निकट आकर गृहसस्का [illegible] (झाडना बुहारना आदि) दासीका काय करती है ।

गत्वा मातृगृह रात्रौ मत्स्यमांस प्रदापयेत् ।
सहस्रन्तु जपेत् कामेश्वरी सप्त दिनावधि ॥
आगता यदि चेद्भक्त्यार्घ्येण सन्तोषिता सती ।
वदोत्किमाज्ञापयसि भव भार्या प्रिया मम ॥
आशाश्च पूरयत्येव राज्य यच्छति कामिता ॥

रात्रिके समय मातृगृहमें जाकर मत्स्य, मांस अर्पण पूर्वक नित्य एक हजार कामेश्वरी मन्त्र जपना चाहिये । इस प्रकार सात

दिन जप करनेपर कामश्वरी साधकके निकट आती है तब साधक भक्तिसहित अर्घ्य देव फिर देवी प्रसन्न होकर साधकसे कहेगी कि तुम्हारी क्या आज्ञा है ? साधक कहे कि, तुम मेरी भार्या हो जावो तब देवी प्रसन्न होकर साधकके सब मनोरथ पूर्ण करती है और उसको राज्याधिकारभी प्रदान करती है ।

रात्रौ देवगृहं गत्वा शुभां शय्यां प्रकल्पयेत् ।
जातीपुष्पेण वस्त्रेण सितगन्धेन पूजयेत् ॥
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्त्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चुम्बत्यालिङ्गयत्यपि ॥
सर्वालङ्कारसंयुक्ता सम्भोगादिसमन्विता ।
यच्छत्यष्टौदीनाराणि भार्या भवति कामिता ॥
वाससी भोजनं दिव्यं कामिकञ्च रसायनम् ।
कुबेरस्य गृहादेव द्रव्यमाकृष्य यच्छति ॥
इत्याह भगवान् क्रोधभूपतिः स्वयमेव हि ॥

रात्रिके समय किसी देवमंदिरमें जाय उत्तमशय्या बनाय चँवलीके फूल, वस्त्र और सफेद चंदनसे पूजा करे । फिर गूगलकी धूप देकर देकर आठ हजार मन्त्र जपना चाहिये । जपके

अनन्तर देवी आकर साधकको चुम्बन और आलिंगन करती है । देवी अनेक प्रकारके गहनोंसे विभूषित होकर पत्नीरूपसे सम्भोगादि करनेके पीछे साधकको आठ सुवर्णमुद्रा (आशरफी) दो वस्त्र,सुंदर भोजन कुबेरके घरसे धन लाकर देती है । भगवान् क्रोधराज इस प्रकारसे भूतिनीसाधन वर्णन करगये हैं ॥

इति भूतिनीसाधनम् ।

अथाष्टनागिनीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव्युवाच ।

सुरासुरजगत्त्राणदायक प्रमथाधिप ।
कालवज्र वद त्वं मे नागिनीसिद्धिसाधनम् ॥

उन्मत्त भैरवीने कहा हे प्रमथाधिप ! आप देव दानव इत्यादि त्रिभुवनकी रक्षा करनेवाले हो, अब कृपाकर मुझसे नागिनीसाधनका वर्णन कीजिये ।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

अथाष्टनागराजानां सिद्धिसाधनमुच्यते ।
परिषन्मण्डलं नत्वा क्रोधराजं सुरेश्वरम् ॥
मनुमासां प्रवक्ष्यामि यथा क्रोधेन भाषितम् ।

उन्मत्त भैरवने कहा मैं देवदेव क्रोधराजको प्रणाम करके तुमसे हूं नागिनीसाधन और क्रोधराजकथित नागिनी मन्त्र कहता हूं ।

पञ्चरश्मे पूर्मनुना प्रोक्तोऽनन्तमुखीमनु ॥
विषबीजात्पू कर्कोटमुखी प्रोक्तो महामनु ॥
प्रालेयात्पद्मिनीपू स्यात् पद्मिनीमनुरीरित ।
प्रालेयात्कालजिह्वा पूश्चतुथो मनुरीरित ॥
विषान्महापद्मिनीपूरुक्तोय पद्मिनी पुरा ।
प्रालेयाद्वासुकी प्रोक्तो मुखीपूर्वमुखीमुखी ॥
तारात्कूर्चद्वयाद्रूपमुखीपूर्वपरो मनु ।
प्रालेयात् शाखिनी गृह्य ततो वायुमुखीपदम् ॥
कूर्चद्वयान्तमुद्धृत्य साखिनीमनुरीरित ॥

अब आठ नागिनीक आठ म त्र कहे जाते है । "ॐ पू अन तमुखी स्वाहा" इस म त्रसे अन तमुखी नागिनीकी उपासना करनी चाहिये । "ॐ प्र कर्कोटमुखी स्वाहा" इस म त्रसे कर्कोटमुखी नागिनीकी, "ॐ पू पद्मिनीमुखी स्वाहा"[3] इस मन्त्रसे पद्मिनीमुखी नागिनीकी, "ॐ कालजिह्वा पू[4] स्वाहा" इस म त्रसे तक्षकमुखी नागिनीकी, 'ॐ महापद्मिनी स्वाहा' इस मन्त्रसे महापद्ममुखी नागिनीकी, "ॐ वासुकीमुखी स्वाहा" इस मन्त्रसे वासुकीमुखी नागिनीकी "ॐ

हू हूँ पूर्वभूपमुखी स्वाहा " इस मन्त्रसे कुलीरमुखी नागिनीकी एव " ॐ शखनी वायुमुखी हुँ हुँ " इस मन्त्रसे शखना नागिनीकी उपासनादि करे।

गत्वा तु नागभुवन लक्षमेक जपेन्मनुम्।
तुष्टा भवन्ति नागिन्यो अनया पूर्वसेवया ॥

नागलोकमे जाय एक लाख नागिनीमन्त्र जपनेपर अष्टनागिनी प्रसन्न होती है।

गत्वा नागभुव शुक्लपञ्चम्यां दापयेद्बलिम्।
यथोक्तगन्धपुष्पाद्यै पूजयित्वा जपंचरेत् ॥
सहस्र शीघ्रमायाति नागकन्यान्तिक स्वयम्।
क्षीरेणसार्घ्य निवेद्याथ वक्तव्य स्वागत पुन ॥
कामिता सा भवेद्भार्या चाष्टौ मुद्रा प्रयच्छति॥

शुक्लपक्षीय पञ्चमी तिथिके दिन नागपुरमें गमनपूर्वक बलिदान करके गन्धपुष्पादि उपचारसे पूजा करके जप करे। इस प्रकार जप करनेस हजार नागकन्या आती है। तब साधक दूधके द्वारा अर्घ्य देकर स्वागत पूछे इस भाति करनेपर नागिनी पत्नी (भार्या) होकर साधकके मनोरथ पूर्ण करती है और आठ मुद्रा (अशरफी) अर्पण करती हैं।

नीचगासङ्गम गत्वा क्षीराहारी जपचरेत्।
सहस्रमन्वह दिव्या नागिन्यायाति सन्निधिम् ॥
चन्दनेन निवेद्यार्घ्यं भार्या भवति कामिता।
दीनारमन्वह पञ्च भोज्य यच्छति कामिकम् ॥

नदीके सगमस्थानमे जाय दूधभोजनपूर्वक नागिनीका मन्त्र एक हजार जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नागकन्या नित्य साधकके समीप आती है तब साधक चन्दनके जलसे अर्घ्य देवे। फिर नागकन्या साधककी पत्नी होकर उसको पाच अशरफी और अनेक प्रकारसे भोजनके पदार्थ अर्पण करती है।

नागस्थाने निशि स्थित्वा जपेदष्टसहस्रकम्।
नागिन्यायाति पूजान्ते शिरोरोगेण सयुता ॥
कि करोमि वदेद्वत्स भव मातेति साधक ।
वस्त्रालङ्करण भोज्य मानचापि प्रयच्छति ॥
तद्वत्पञ्चदीनाराणि व्ययितव्यानि शेषत ॥
तद्व्ययाभावतो भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥

रात्रिके समय नागस्थानमे बैठकर आठ हजार नागिनीका मंत्र जपे इस प्रकार जप करनेपर नागिनी शिरोरोगसे ग्रसित होकर साधकके समीप आती है और साधकसे सम्बोधन करके कहती है कि, हे वत्स! मे तुम्हारा क्या कार्य साधन करूं? तब साधक कहे कि तुम मेरी जननी (माता) होजाओ फिर नागिनी प्रसन्न होकर वस्त्र गहने, मनोहर भोजनके पदार्थ और पांच सुवर्ण मुद्रा (अशरफी) देती हैं साधक उन सब मुद्राको व्यय करदे क्यों कि, समस्त व्यय न करनेसे देवी क्रोधित होती है और फिर मुद्रा नहीं देती ।

रात्रौ सरोवरं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागिन्यायाति जापान्ते भार्या भवति कामिता ॥
यद्यद्ददाति द्रव्याणि व्ययं कुर्यादशेषतः ।
व्ययाभावेन सा भूयो न ददाति प्रकुप्यति ॥

रात्रिकालमे सरोवरके किनारे जाय आठ हजार बार मंत्रका जप करनेपर नागिनी आनकर साधककी पत्नी हो अभिलाषित वस्तु अर्पण करती है साधक नित्य वह सब वस्तु व्यय (खर्च) कर देवे यदि उसमेसे थोडीसीभी बच रहेगी तो नागिनी कुपित होगी और फिर कुछ नहीं देगी ।

नीचगासगम गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
नागकन्या समायाति जपान्ते साधकान्तिकम् ॥
सूर्यवर्णासन दत्त्वा वक्तव्य स्वागत पुन ।
भार्याभूतान्वह स्वर्ण ददाति च शत पलम् ॥

जिस किसी नदीके सगम स्थानम जाकर आठ हजार बार नागिनाका मत्र जपना चाहिये जपके अतमें नागकन्या साधकके समीप आनकर उपस्थित होती है तब साधक नागिनीको सूय वणका आसन देकर कुशल पूछे इस प्रकार करनेसे नागिनी साधककी पत्नी हाकर नित्य शतपल (१०० पल) सुवर्ण प्रदान करती है ।

रात्रौ सरोवर गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्तेऽन्तिकमायाति नागकन्या मनोहरा ॥
अन्वह भगिनी भूत्वा दीनार वाससी पुन ।
तुष्टा यच्छनि यामिन्या साधकायोरगात्मजा ॥

रात्रिके ममय सरोवरपर जाय पूर्व कथित नागिनीका मन्त्र आठ हजार बार जपना चाहिये जपके अतमें सुदरी नागकन्या साधकके समीप आती ह और साधककी भगिनीस्वरूप होकर

नित्य स्वर्णमुद्रा और वस्त्र अर्पण करती है तथा साधकपर प्रसन्न होकर रात्रिमे नागकन्या लाकर साधकका मनोरथ पूर्ण करती है ।

गत्वा नागभुवं नाभिजलादुत्तीर्यसाधक ।
जपेदष्टसहस्रं तु जपान्ते नागकन्यका ॥
स्वयमन्तिकमायाति सपुष्पं मूर्ध्नि दापयेत् ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि भार्या भवति कामिता ॥
कामिक भोजनद्रव्यमन्वहं सा प्रयच्छति ॥

नागभवनमे जाय नाभिके बराबर जलमें उतरकर आठ हजार नागिनीका मन्त्र जपना चाहिये जपके अन्तमे नागकन्या साधकके निकट आती है उस काल साधक उनके मस्तकपर पुष्प डाले । इस प्रकार करनेपर नागिनी साधककी पत्नी होकर उसको नित्य आठ अशरफी और भोजनके पदार्थ प्रदान करती है ।

रात्रौ नागभुवं गत्वा जपेदष्टसहस्रकम् ।
भूयश्च सकलां रात्रिं जपेत् प्रयतमानस ॥
साधकान्तिकमायाति सवालंकारभूषिता ।

पुष्पचन्दनतोयार्घ्यं दत्त्वा स्वागतमाचरेत् ॥
कामिता सा भवेद्भार्या सिद्धिद्रव्य प्रयच्छति ।
रस रसायन भोज्य राज्य यच्छति नित्यश ॥

रात्रिके समय नागभवनमे जाय पूव कथित नागिनीम त्र आठ हजार जपकर पुनर्वार स ्त मनस रात्रिके समय जप करना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नागिनी सब गहनासे विभूषित होकर साधकके समीप आती है। तब साधक पुष्प, च द । ग ध और जलके द्वारा अर्घ्य देकर स्वागत पूछे। इससे नागिनी प्रस न्नतासहित साधककी भाया होकर उसको सचित द्र य नानारस युक्त खाद्य, राज्य, धन इत्यादि प्रदान करती है।

गत्वा नागभुव रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते नागकन्या च याति साधकसन्निधिम् ॥
कामिता सा भवेद्भार्या सर्वाशा पूरयत्यपि ।
दीनार कामिक भोज्य नित्य यच्छति वाससी ॥

रात्रिके समय नाग स्थानम जाकर नागिनीका म त्र आठ हजार जपना चाहिये । जपके अ तमे नागक या साधकके समीपआती है और पत्नी होकर उसके सब मनोरथ पूण करती

है और प्रतिदिन साधकको दिव्य वस्त्र, भोज्य पदार्थ और स्वर्णमुद्रा (अशरफी) प्रदान करता है।

गत्वा नागान्तिकं रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम्।
जपान्ते नागकन्यासौ झटित्यायाति सन्निधिम्॥
दद्याच्छिरसि पुष्पाणि भार्या भवति कामिता।
दिव्यवस्त्राण्यलङ्कारं भोजनादीनि यच्छति॥

रात्रिके समय नागस्थानमें जाकर पूर्वकथित नागिनीका मन्त्र आठ हजार बार जपना चाहिये। जपके अन्तमें नागकन्या साधकके समीप शीघ्रतासहित आती है उस काल साधक नागकन्याके मस्तकपर पुष्प रक्खे। इस प्रकार करनेसे नागकन्या उसकी भार्या होकर उसको उत्तमोत्तम वस्त्र, गहने और भोज्य पदार्थ इत्यादि प्रदान करती है।

इति नागिनीसाधनम्।

अथ किन्नरीसाधनम्।

उन्मत्तभैरव्युवाच।

भिन्नाञ्जनचयप्रख्य रवीन्द्वग्निविलोचन।
करालवदन ब्रूहि किन्नरीसिद्धिसाधनम्।

उन्मत्तभैरवाने कहा हे करालवदन ! आपके तीन नत्रम सूर्य, चन्द्रमा और अग्नि विराजमान रहती है। आपका शरीर दलित अंजनके समान है आप मुझसे किन्नरीसाधन वर्णन कीजिये

उन्मत्तभैरव उवाच।

गुह्यकाधिपति क्रोधराजोवाच महेश्वर।
किन्नरी साधयिष्यामि मारयिष्यामि देवता॥
त्रैधातुक महाराज्य दास्यामि त्वयि नान्यथा।
अथात सम्प्रवक्ष्यामि किन्नरीसिद्धिसाधनम्॥
येनानुष्ठितमात्रेण लभ्यन्ते सर्वसिद्धय॥

उन्मत्तभैरवने कहा हे देवि ! क्रोधराज महेश्वरने गुह्यकाधिपति कुबेरके निकट जो किन्नरीसाधन प्रकाशित किया था, मै इस समय वही तुमसे कहता हू। इस साधनके प्रसादसे मनुष्य देवताओं काभी नाश कर सकता है। इसके द्वारा त्रिभुवनका आधिपत्यका लाभ होता है और सब मनोरथ पूर्ण होते है।

मनुमामा प्रवक्ष्यामि क्रोधभूपप्रसादत।
हालाहालान्मनोहारिणी शिवोऽन्त मनुमुद्धरेत्॥
प्रालेयात् सुभगे वह्निप्रियान्तमपरो मनु।
विषाद्विशालनेत्रेऽग्निवल्लभान्तस्तृतीयक॥

पञ्चरश्मि समुद्धृत्य तदन्ते सुरतप्रिये।
वह्निजायान्त उक्तोऽसौ चतुर्थ किन्नरीमनु ॥
विषबीज समुद्धृत्य सुमुख्यग्रे द्विठो मनु ।
सृष्टिर्दिवाकरमुखि शिवोऽन्तश्चापरो मनु ॥

किन्नरीसाधन छ प्रकारका है। वह छ प्रकारका मन्त्र कहता हू। (१) ॐ मनोहारिणि हो। (२) ॐ सुभगे स्वाहा। (३) ॐ विशालनेत्रे स्वाहा। (४) ॐ सुरतप्रिये स्वाहा। (५) ॐ सुमुखि स्वाहा (६) ॐ दिवाकर मुखि स्वाहा।

मनोहारिणीसाधनम्।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदष्टसहस्रकम्।
जपान्ते महती पूजा गोमांसेन प्रकल्पयेत् ॥
धूपच गुग्गुल दत्त्वा यामिन्या जपमाचरेत्।
अर्द्धरात्रे समायाति न भेतव्य कदाचन ॥
वदेत् किमाज्ञापयसि भव भार्यैति साधक ।
त्रिदिव पृष्ठमारोप्य दर्शयत्यपि यच्छति ॥
कामिक भोजन स्वर्ग सिद्धिद्रव्य प्रयच्छति ॥

अब मनोहारिणी नामक किन्नरीका साधन कहा जाता है रात्रिके समय साधक पर्वतके शिखरपर बैठकर 'ॐ मनोहारिणी ह्रौं" यह मन्त्र आठ हजार जपे। जप समाप्त होनेपर नील गोमांससे पूजा करनी चाहिये फिर गूगलकी धूप देकर जप करे आधीरातमें किन्नरी साधकके पास आती है साधक किन्नरीको देखकर कभी न डरे। किन्नरी आकर साधकसे पूछेगी कि तुम क्या आज्ञा देते हो? तब साधक कहे कि, तुम मेरी भार्या हो जाओ तब किन्नरी साधकको अपनी पीठपर चढाकर स्वर्गका दर्शन करावेगी तथा भोजन और अन्यान्य अभिलाषित वस्तु प्रदान करेगी।

सुभगासाधनम्।

पर्वते वा वने वाऽपि मन्दिरे वायुतं जपेत्।
निराहारोपि जापान्ते दिव्यनीरजपाणिना॥
उपचारयति सा तुष्टा भार्या भवति कामिता।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं परितोषिता॥

साधक उपवासी रहकर पर्वत वा वनमें अथवा देवमन्दिरमें जाकर 'ॐ सुभगे स्वाहा' यह मन्त्र दश हजार जपे जपके अन्तमें सुभगा नाम्नी किन्नरी साधकके निकट आती है

और प्रसन्न होकर मनो र हस्तकमलद्वारा म। त्रकको सेवा करती है इस प्रकार साधककी पत्नी होकर प्रति दिन उसको आठ स्वर्णमुद्रा देती है ।

विशालनेत्रासाधनम् ।

नीचगातटमासाद्य जपेदयुतसख्यकम् ।
प्रपूज्य सकला रात्रि प्रजपेद्रजनीक्षये ॥
किन्नरी शीघ्रमायाति भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यह परितोषिता ॥

अब विशालनेत्रानाम्नी किन्नरीका साधन कहाजाता है। साधक रात्रिकालमे नदीके तटपर जाकर 'ॐ विशालनेत्रे स्वाहा' यह मन्त्र दश हजार जप और किन्नरीकी पूजा करके समस्त रात्रि उक्त किन्नरीका मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर रात्रिके अन्तमें किन्नरी साधकके समीप आती है और उसकी भार्या होकर प्रतिदिन प्रसन्न चित्तसे उसको आठ स्वर्ण मुद्रा प्रदान करती है।

सुरतप्रियासाधनम् ।

नीचगासङ्गमे रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
जपान्ते शीघ्रमायाति चात्मान दर्शयत्यपि ॥

स्थित्वा पुरो द्वितीयेऽह्नि वचनं भाषितं पुनः ।
तृतीये दिवसे प्राप्ते भार्या भवति कामिता ॥
ददात्यष्टौ दीनाराणि प्रत्यहं दिव्यवाससी ॥

अब जिस प्रकार सुरतप्रिया नाम्नी किन्नरीका साधन करना चाहिये वह कहा जाता है । साधक रातके समय किसी नदीके सगम स्थानमें जाकर 'ॐ सुरतप्रिये स्वाहा' यह मन्त्र आठ हजार जपे । प्रथम दिनही जपके अन्तमें यह किन्नरी शीघ्रतासे साधकके समीप आकर अपनी दिव्य मूर्ति दिखाती है । दूसरे दिन फिर इसी प्रकार साधकके जपावसानमें आकर सन्मुख अवस्थित हो बातें करती हैं और तीसरे दिन इसी भाँति जपके अन्तमें आकर साधककी भार्या होती है और प्रतिदिन उसको दिव्य वस्त्र और आठ अशरफी प्रदान करती है ।

सुमुखीसाधनम् ।

शैलमूर्द्धन्यन्वहं मासाहारेणायुतकं जपेत् ।
जपान्ते पुरतः स्थित्वा चुम्बत्यालिंगयत्यपि ॥
तूष्णीम्भावेन सन्तुष्टा भार्या भवति कामिता ।
ददात्यष्टौ दीनाराणि दिव्यं कामिकभोजनम् ॥

अब सुमुखी नाम्नी किन्नरीका साधन कहा जाता है । साधक नित्य पर्वतके शिखरपर चन्दन मांसाहार प्रदानपूर्वक "ॐ सुमुखि स्वाहा" यह मन्त्र अयुत संख्यक जप करे । जप के अन्तमे किन्नरी साधकके समीप आकर मानभावमे उसको चुम्बन और आलिंगन करती है और प्रसन्न चित्तसे उसकी पत्नी हो जाती है और फिर नित्य उत्तम भोज्य पदार्थ और आठ अशरफिया अर्पण करती है ।

दिवाकरमुखीसाधनम् ।

शैलमूर्ध्नि समास्थाय जपेदयुतसंख्यकम् ॥
रात्रावभ्यर्च्य प्रजपेन्मन्त्रमष्टसहस्रकम् ॥
किन्नर्यन्तिकमायाति वाञ्छितार्थं प्रयच्छति ।
दीनाराणि ददात्यष्टौ भार्या भवति कामिता ॥
रस रसायन सिद्धिद्रव्य भोज्य प्रयच्छति ॥

अब जिस प्रकार दिवाकरमुखी किन्नरीका साधन करना चाहिये, सो कहा जाता है । साधक रात्रिके समय पर्वतके शिखरपर बैठकर 'ओम दिवाकरमुखी स्वाहा' यह मन्त्र अयुत (दश हजार) जपे और यथाविधि दिवाकरमुखीकी पूजा करके पुनर्वार यह मन्त्र आठ हजार जपना चाहिये ।

जपके अन्तमे किन्नरी साधकके समीप आती है और भार्या होती है । फिर प्रतिदिन कोई न कोइ वाछित वस्तु, आठ अशरफिया और नाना रसयुक्त भोज्य पदार्थादि प्रदान करती है ।

इति किन्नरी साधनम् ।

अथ शवसाधन वा श्मशानसाधनम् ।

महारुद्र उवाच ।

अथात सम्प्रवक्ष्यामि शवसाधनमुत्तमम् ।
श्मशानसाधन यत्तु तदाश्चर्यकर परम् ॥
येन विज्ञानमात्रेण सिद्धो भवतिसाधक ॥

महारुद्रने देवी रुद्राणीसे कहा था कि,हे देवी ! अब तुमसे शवसाधन कहता हू, इसीको श्मशानसाधनभी कहते है । यह प म अद्भुत है, इसके जानलेनेपर सहजमेही साधकको सिद्धि मिल सकती है ।

अमावस्यां भौमवारे उपवासी जितेन्द्रिय ।
श्मशानालयमागत्य शवोपरि समारुहेत् ॥
मायाबीज समुद्धृत्य पुटित प्रणवेन तु ।
शवशब्द समुच्चार्यमेन पदमुदीरयेत् ॥

साधयद्वितयञ्चैव वह्निजाया ततः परम् ।
एतन्मन्त्रं जपेच्चैव दशसहस्रसंख्यकम् ॥
शवसाधनमेतत्तु सिध्यति नात्र संशयः ।
यद्यदाज्ञापयति तत्कुरुते हि सुनिश्चितम् ॥
जपान्ते पूजनं कार्यं श्मशाने निर्जने तथा ।
षोडशैरुपचारैस्तु श्यामां श्यामलसुन्दरीम् ॥

अमावस्यायुक्त मङ्गलवारमे उपवासी और जितेन्द्रिय और रात्रिके समय श्मशानमे जाय शव (मुरदे) पर चढ बैठ और 'ॐ ह्रीं ॐ शवमेन साधय साधय स्वाहा।' यह मन्त्र दश हजार जप करे । इस प्रकार करनेसेही शवसाधन सिद्ध होता है । साधक उस शवको जो आज्ञा देगा शव तत्काल उस कार्यको करेगा । जपके पहिले श्मशानमे बैठकर यथाविधि षोडशोपचारसे श्यामा देवीकी पूजा करके फिर जप करनेमे प्रवृत्त होना चाहिये ।

इति शवसाधनं वा श्मशानसाधनम् ।

अथ योगिनीसाधनम् ।

उन्मत्तभैरव उवाच ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि योगिनीसाधनोत्तमम् ।
सर्वार्थसाधनं नाम देहिनां सर्वसिद्धिदम् ॥
अतिगुह्या महाविद्या देवानामपि दुर्लभा ।
यासामभ्यर्चनं कृत्वा यक्षेशो भुवनाधिपः ॥
तासामाद्यां प्रवक्ष्यामि सुराणां सुन्दरी प्रिये ।
यस्याश्चाभ्यर्चनेनैव राजत्वं लभते नरः ॥

उन्मत्त भैरवने कथाप्रसंगमे उन्मत्त भैरवीसे कहा था कि हे देवी ! अब मै तुमसे अति उत्तम योगिनी साधन कहता हूं इसका साधन करनेसे सर्वार्थ सिद्धि होती है यह अत्यन्त गोपनीय और देवताओंको भी दुर्लभ है, इसीकी आराधना करके कुबेर त्रिभुवनके अधिपति हुए है इसकी आराधना करनेसे राज्य प्राप्त होता है ।

अथ प्रातः समुत्थाय कृत्वा स्नानादिकं शुभम् ।
प्रासादञ्च समासाद्य कुर्यादाचमनं ततः ॥
प्रणवान्ते सहस्रार हुं फट् दिग्बन्धनं चरेत् ।

प्राणायाम तत कुर्यान्मूलमन्त्रेण मन्त्रवित् ॥
षडग मायया कुर्यात् पद्ममष्टदल लिखेत् ।
तस्मिन्पद्मे तथा मन्त्री जीवन्यास समाचरेत् ॥
पीठे देवी समभ्यर्च्य ध्यायेद्देवी जगत्प्रियाम् ।
ॐ पूर्णचन्द्रनिभा देवी विचित्राम्बरधारिणीम् ॥
पीनोत्तुङ्गकुचा वामा सर्वज्ञामभयप्रदाम् ।
इति ध्यात्वा च मूलेन दद्यात्पाद्यादिक शुभम् ॥
पुनर्धूप निवेद्यैव नैवेद्य मूलमन्त्रत ।
गन्धचन्दनताम्बूल सकर्पूर सुशोभनम् ॥
प्रणवान्ते भुवनेशि आगच्छ सुरसुन्दरि ।
वह्नेर्जाया जपेन्मन्त्र त्रिसन्ध्यञ्च दिने दिने ॥
सहस्रप्रमाणेन ध्यात्वा देवी सदा बुध ।
मासान्तदिवस प्राप्य बलिपूजा सुशोभनाम् ॥
कृत्वा च प्रजपेन्मत्र निशीथे याति सुन्दरी ।
सुदृढ साधक ज्ञात्वा याति सा साधकालये ।

सुप्रेम्णा साधकाग्रे सा सदास्मरमुखी तत । दृष्ट्वा देवी साधकेन्द्रो दद्यात्पाद्यादिक शुभम् ॥
सचन्दन सुमानसो दत्त्वाभिलषित वदेत् । मातर भगिनी वाथ भार्या वा भक्तिभावत ॥
यदि माता तदा वित्त द्रव्यञ्च सुमनोहरम् । नृपतित्व प्रार्थित यत्तद्ददाति दिने दिने ॥
पुत्रवत्पालयेल्लोके सत्य सत्य सुनिश्चितम् । स्वसा ददाति द्रव्यञ्च दिव्य वस्त्र तथैव च ॥
दिव्यकन्या समानीय कन्या कन्या दिने दिने । यद्यद्भवति भूतञ्च भविष्यतीति तत्पुन ॥
तत्सर्व साधकेन्द्राय निवेदयति निश्चितम् । यद्यत्प्रार्थयते सर्व ददाति सा दिने दिने ॥
मातृवत्पालित लोके कामनाभिर्मनागतै । भार्या वा यदि सा देवी साधकस्य मनोहरा ॥
राजेन्द्र सर्वराजाना ससारे साधकोत्तम । स्वर्गे लोके च पाताले गति सर्वत्र निश्चिता ॥

यद्यद्ददाति सा देवी कथितु नैव शक्यते ।
त्वया सार्द्धञ्च सम्भोग करोति साधकोत्तम ।
अन्यस्त्रीगमन त्याज्यमन्यथा नश्यति ध्रुवम् ॥

प्रातःकाल शय्यासे उठकर स्नानसंध्या इत्यादि समापन करनेके पीछे 'ह्रौं' इस मन्त्रसे आचमन करना चाहिये। 'ॐ सहस्त्रार हूँ फट्' इस मन्त्रसे दिग्बन्धन कर मूलमन्त्रसे प्राणायाम करना चाहिये। 'ह्रीं' इस मन्त्रसे षडङ्गन्यास करके अष्टदल पद्म अंकित करे। फिर उस पद्ममें प्राणप्रतिष्ठा कर पीठपूजापूर्वक देवीका ध्यान करे। जिस प्रकारसे ध्यान करना चाहिये वह मूलमें लिखा है। इस प्रकार ध्यान करके मूलमन्त्रसे पाद्य इत्यादिके द्वारा पूजा करनी चाहिये। फिर पुनर्वार मूलमन्त्रसे धूप निवेदन करके नैवेद्य प्रदान करना चाहिये पीछे गंध चंदन और कर्पूरादि वासित ताम्बूल अर्पण करे। नित्य तीनों संध्यामें ध्यान करनेके पीछे ॐ आगच्छ सुरसुन्दरि स्वाहा ह्रीं यह मूलमन्त्र एक हजार जपना चाहिये इस प्रकार एक मासतक जप करके अंतिमदिन यथाविधि पूजापूर्वक बलि देवे फिर एकाग्रमनसे जप करना चाहिये। निशीथकालमें देवी साधककी दृढ भक्ति देखकर उसके पास आती है, वह

सदा हास्य मुख और प्रेममें भरी हुई साधकके निकट रहती है तब साधक देवीका दर्शन करके पाद्यादि अर्पण करे फिर चंदनके सहित पुष्प प्रदान करके अपने मनकी अभिलाषा प्रकाशित करे अर्थात् साधक देवीको जननी, भगिनी अथवा भार्या कहकर सम्बोधन करे यदि साधक, जननी कह कर सम्बोधन करे तो धन, उत्तम वस्तु राज्य और जिस जिस वस्तुकी प्रार्थना करता है, देवी प्रदान करती है यदि साधक भगिनी कहकर पुकारे तो देवी नानाप्रकारकी वस्तु और दिव्य वस्त्र प्रदान पूर्वक दिव्य कन्या लाकर देती है इस साधनके प्रसादसे साधक भूत भविष्य और वर्तमान तीनो कालका ज्ञाता होजाता है । साधक जो प्रार्थना करे देवी वही प्रदान करती है यदि देवी साधककी भार्या होजाय तो साधक सब राजाओंमे श्रेष्ठ होता है इस साधनके प्रसादसे साधक स्वर्ग और पातालमे जासकता है । यह साधन करनेपर देवी जो जो अर्पण करती है उसका वर्णन करना कठिन है । यदि देवी साधककी भार्या हो जाँय तो साधक अन्य स्त्रीसे सम्भोग नही करसकता क्यो कि दूसरी स्त्रीके साथ सहवास करनेपर क्रोधराज उस साधकका नाश करदेते है ।

इति योगिनीसाधनम् ।

अथ दुष्टदमनम् ।

ॐ कक्कोल्ल कक्कोल्ल किलि किलि गोपय शोषय मथ मथ विद्रावय विद्रावय नाशय नाशय झङ्कार झङ्कार क्रूँ क्रूँ ह्रीं फट् । अमावस्यायां भौमे त्रिमार्गे लक्षजपेन सिद्धिः ।

चोरभय दूर करने, व्याघ्रभय नाश और हाथीका भय दूर इत्यादि दुष्ट दमन कार्यमें प्रवृत्त होनेके प्रथम उपरोक्त मन्त्र लक्षजपद्वारा सिद्ध करके कार्यारंभ करे। मंगलवारकी अमावस्या तिथिमें रात्रिके समय तिराहेमें बैठकर जप करना चाहिये ।

चौरभयनिवारणम् ।

शुक्लपक्षयुते पुष्ये गुञ्जामूलं समुद्धरेत् ।
बद्धं शिरसि शय्यायां चौरबाधाहरं परम् ॥

शुक्लपक्षके पुष्यनक्षत्रमें चोटलीकी जड उखाडकर अपने मस्तक और शय्यापर रखनेसे तस्करका भय दूर हो जाता है ।

व्याघ्रराजभयादिनिवारणम् ।

धात्र्यन्तु बन्धकं ग्राह्यमाश्लेषायां प्रयत्नतः ।
हस्ते बद्धं भयं हन्ति चौरव्याघ्रादिराजकम् ॥

आश्लेषा नक्षत्रमें आमलेके वृक्षका बंदा लाकर हाथमें बाँधनेसे उसको तस्कर राजा और चोरका भय नहीं रहता ।

युद्धे शत्रुदमनम् ।

आर्द्रायामाहृतं वंशबन्धकं कर्णधारितम् ।
विजयं प्रापयेद्युद्धे शत्रुमध्ये न संशयः ॥

आर्द्रानक्षत्रमें बांसकी जड लाकर कानमें धारण करनेपर शत्रुदमन होता है अर्थात् शत्रुके साथ संग्राममें विजय प्राप्त होती है ।

गजभयनिवारणम् ।

गृहीत्वा हस्तनक्षत्रे चूर्णयेत्तु छुछुन्दरीम् ।
तल्लेपेन गजा यान्ति दूरतो न तु सम्मुखम् ॥

हस्तनक्षत्रमें एक छछूंदर मारकर उसका चूर्ण करे उस चूर्णको यदि शरीरमें मल लेवे तो उसको देखतेही हाथी डर कर नीचेको मुख किये भागजाते हैं ।

व्याघ्रभयनिवारणम् ।

श्वेतापराजितामूलं हस्तस्थं वारयेद्गजान् ।
श्वेतं बृहतिमूलञ्च हस्तस्थं व्याघ्रभीतिनुत् ॥

सफेद अपराजिता (विष्णुक्राता) की जड हाथमे धारण करनेपर हाथी उसको देखकर भागजाते है और सफेद वृह तीकी जड बाधनेसे व्याघ्रका भयदूर होता है ।

इति दुष्टदमनम् ।

अथ षण्डीकरण सुस्थीकरणञ्च ।

ॐ नमो भगवते उड्डामरेश्वराय कामप्रचण्डाय हन हन विनतेय मुखेन खण्डय खण्डय स्वाहा । अय मन्त्र सर्वषण्डीकरणे प्रयोज्य । रात्रौ निर्जने अयुतजपेन सिद्धि ।

षण्डीकरणकार्यमे ऊपर लिखे मन्त्रकी आवश्यकता है । प्रथम तो रात्रिके समय निर्जनमे उक्त मन्त्र दशहजार जपद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये ।

नक्षत्रे ह्यनुराधायां लागलीमूलमुद्धरेत् ।
निशामूत्रस्थले पुंसो निखनेत् षण्डता व्रजेत् ॥
समुद्धृत्य पुन स्वास्थ्य पूर्वमन्त्रेण योजयेत् ॥

अनुराधा नक्षत्रमें लाङ्गलीकी जड ले आवे फिर जिसको षण्ड करना हो वह जिस स्थानमे मूत्र त्याग करे वह जड उसी स्थानमे गाड देवे । इस प्रकार करनेसे वह व्यक्ति क्लीब

होता है जडके उखाड डालनेसे वह व्यक्ति पहिली अवस्था को प्राप्त होता है।

श्वेतापराजिता कुष्ठ वचा सैन्धवसंयुतम् ॥
शीततोयेन संपिष्य यस्य मूर्धि तु दीयते ॥
अथवा भक्षणादेव स षण्डत्वमवाप्नुयात् ॥

सफेद अपराजिता, कूठ, वच और सेंधा यह सब पदार्थ एकत्र कर शीतल जलमें पीस जिसके मस्तकपर प्रदान करे और जिसको भोजनकी वस्तुके साथ मिलाकर सेवन करावे वह क्लीब (नपुंसक) होता है, इसमें संदेह नहीं।

नरो मूत्रयते यत्र कृष्णवृश्चिककण्टकम्।
निखनेज्जायते षण्ड उद्धृते च पुनः सुखी ॥

जिसको क्लीब करना हो वह व्यक्ति जिस स्थानमें मूत्र त्याग करे वहां काले बीछूका काँटा गाड देनेसे वह षण्ड हो जाता है और यह काँटा उखाडकर फेंकदेनेसे वह फिर अपनी पूर्व अवस्थाको प्राप्त होता है।

जलौकादग्धचूर्णन्तु नवनीतेन भक्षितम्।
यावज्जीवं न सन्देहो यूनां षण्डत्वकारकम् ॥
धुस्तूरपुष्पभक्ष्येण पुनः सम्पद्यते सुखम् ॥

जोकको भूनकर उसका चूर्ण करलेवे । फिर वह चूर्ण माखनके साथ मिलाकर जिनको खिलाया जाय वह जीवन भरके लिये क्लीव हो जाता है । किन्तु धतूरका फूल भोजन करनेसे यह दोष शमन होता है और फिर पहिली अवस्था प्राप्त हो जाती है ।

तिलस्य दण्डा विटपस्य चूर्ण ।
प्रसाधित बस्तपयोऽर्द्धमाषम् ॥
सयावक शर्करयान्वितञ्च
पीत्वा हरेत्षण्डकतामवाप्य ॥

तिल और उसकी शाखा एकत्र पीसकर बकरीके दूधमें पकावे और उसमे चीनी मिलाकर यावकयुक्त कर सेवन करनेपर षण्डत्वदोषकी शांति होती है ।

निशाविचूर्ण वनसारयुक्त ।
समीकृत बस्तपयोवियुक्तम् ॥
भक्त निपीत कुरुते निकाम ।
नरस्य षण्डत्वमिति प्रसिद्धम् ॥

हलदीका चूर्ण और लालचन्दन यह दोनो पदार्थ एकत्र

मिलाकर उनमे बकरीका दूध मिलावे । यह अन्नके साथ सेवन करानेसे मनुष्य षण्ड (नपुसक) हो जाता है ।

इति षण्डीकरणम् ।

अथ पादुकासाधनम् ।

काकजङ्घा सिता ग्राह्या गृध्रस्य च वसा तथा ।
अश्वगन्धा समायुक्ता ह्युष्ट्रीक्षीरेण पेषयेत् ॥
अनेन लिप्तपादस्तु योजनाना शत व्रजेत् ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय भूतवेतालत्रासनाय शख चक्रगदाधराय हन हन महते चन्द्रयुताय हुँ फट् स्वाहा । त्रिलक्षजपेन सिद्धि । अनेन च त्रिर्लेपनमभिमन्त्रयेत् ।

सफेद वर्ण काकजघा (मसी), गीधकी चरबी और असगध यह सब पदार्थ एकत्र ऊटनीके दूधमे पीसकर पैरोंमे लेप करनेसे सौ योजन (चार सौ कोस) तक जानेमें समर्थ होता है । यदि यह कार्य साधन करना हो तो प्रथम "ॐ नमो भगवते" इत्यादि मन्त्र तीन लाख जपसे सिद्ध करलेना चाहिये । पैरोंमे जो लेप करे वह भी इस मन्त्रसे तीन बार अभिमन्त्रित करलेवे ।

श्वानमार्जारनकुलपित्त ग्राह्य सम समम् ।
योजनाना शत गत्वा काकमांस रसाञ्जनम् ॥
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन पुनरावर्तते क्षणात ।
ॐ नमो भगवते रुद्राय मामे ममले काले खले
घोर प्रवर सर मर स्वाहा ।

कुत्ते बिल्ली और नकुल (नौला) इनका पित्त समान भाग लेकर चार सौ कोस दूर गमन करे । फिर इनके साथ कांवेका मास और रसाजन मिलाकर एकत्र पीसलवे । इसके द्वारा पैरामे लेप करनेसे पलमात्रम शतयाजन फिरकर आसकता है । इस कायम ' ॐ नमो भगवत रुद्राय ' इत्यादि मन्त्रकी आव श्यकता ह । पूर्ववत् मन्त्रसिद्धिकाभी इस मन्त्रके द्वारा अभिम न्त्रित कर ।

कीटमैन्दवसिन्दूर हरिचन्दनवेतसम् ।
अजामास तथा रास्नामजाक्षीरेण भावयेत् ॥
पिष्ट्वा पादप्रलेपेन स गच्छेद्योजनायुतम् ।
सुभग स तु नारीणा ब्रह्मतुल्यो भवेन्नर ॥

ॐ नमो भगवते रुद्राय नमो ब्रह्मणे नम सूर्याय नमश्चन्द्राय शखनेत्रगदाधरायहिलि हिलि स्वाहा ।

इन्द्रगोपकीडा, सिंदूर, कुङ्कुम, वेतकी लता, बकरेका मास और रास्ना (रायसनाय) इन सब पदार्थोंको बकरीके दूधमे भावना देकर पीसलेवे । इसके द्वारा चरणोंमे लेप प्रदान करनेपर दश हजार योजन गमन कर सकता है और वह पुरुष स्त्रीजातिका प्रिय और ब्रह्माकी समान होता है । इस कार्यमे पूर्ववत् म त्रसिद्धि करके तिसके द्वारा लेप द्रव्य अभिमन्त्रित करलेने चाहिये । म त्र मूलमे लिखरहा है ।

सारिकाया वसानेत्रमन्त्राणि रुधिर तथा ।
काकपित्ततथा नेत्र हरिचदनवेतसम् ॥
शुनो मज्जां वसां तुल्यामुष्ट्रीक्षीरेण भावयेत् ।
पादलेप प्रकर्तव्यो नमस्कृत्य शिव तत ॥
योजन लक्षमेकन्तु निमिषार्द्धेन गच्छति ।
गगनाशेषचारी च क्रीडत्येव यथा शिव ॥
स्त्रीकोटिशतसघात कामयेन्निमिषान्तर ।
ब्रह्मतुल्यो भवेत्सोऽपि लीयते परमे शिवे ॥

ॐ नमश्चन्द्रमसे चन्द्रशेखराय नमो भगवतेतिष्ठ नमो भगवते नम शिखरे नम शूलिने नम पाद-प्रचारिणे वेगिने हुं फट् स्वाहा ।

ऊपर (ॐ नमश्चन्द्रमसे) इत्यादि जो मन्त्र लिख रहा है यह मन्त्र पूर्ववत जपद्वारा सिद्ध करलेना चाहिये। फिर सारिका पक्षी (मैना) की चरबी, नेत्र आंत और रुधिर और कौवेका पित्त, नेत्र कुकुम, वतशी लता, कुत्तकी मज्जा और चरबी यह सब पदार्थ बराबर लेवे और फिर इनको ऊटनीके दूधमे पीस कर श्रीमहादेवजीको प्रणामपूर्वक ...णाम लेप प्रदान करे। उप द्रव्य उक्त मन्त्रसे तीन बार अभिमन्त्रित करके पीछे चरणोंमे लेप करे। इस प्रकार करनेपर आधे निमेषमे वह पुरुष लक्ष योजन दूर जा सकता है। यह पुरुष श्रीमहादेवजीकी समान आकाशमार्गमे विचरण करनेको समर्थ होता है। वह पलमात्रके अनेकानेक स्त्रियोसे सम्भोग कर सकता है और वह अन्त समय परब्रह्मम लीन होता है।

काकस्य हृदय नेत्र जिह्वाञ्चैव मन गिलाम् ।
गैरिक चैव सिन्दूरमजमारी च मालती ॥

सम रुद्रजटां चैव विदार्या सह पेषयेत् ।
तल्लिप्तपाद सहसा सहस्रयोजन व्रजेत् ॥
वलीपलितनिर्मुक्तो यावदाहूतसप्लवम् ।
ॐ नमो भगवते रुद्राय हरितगदाधराय त्रासय
त्रासय चालय चालय स्वाहा ॥

कौवेका हृदय, नेत्र और जीभ लाकर उसके साथ मनशिल गेरू, सि दूर, अजमारी (कौठ)मालती फूल, रुद्रजटा (भूत केशी) और विदारीक द यह सब पदार्थ एकत्र पीसकर चर णोंमे लेप करनेपर सहस्र योजन मार्गगमन कर सकता है । और महाप्रलयतक वलीपलितादिसे हीन होता है । मूल लिखित ' ॐ नमो भगवते ' इत्यादि म त्र द्वारा लेपद्रव्य पूर्ववत् अभि मत्रित कर लेवे । उक्त म त्र पूर्ववत सिद्ध कर लेना चाहिये ।

विधिना कृकलासस्य पुच्छमादाय दक्षिणम् ।
त्रिलोहवेष्टित वक्रे धार्यमिच्छागतिर्भवेत् ॥
ॐ संकोचाय स्वाहा ।

कृकलास (गिरगट) के दाहिना ओरकी पूछ लाकर त्रिलोह वेष्टित करे । फिर उसको मुखमें धारण करनेस वह

पुरुष अपनी इच्छानुसार दूर जा सकता है। धारण करनेके समय ' ॐ संकोचाय स्वाहा ' इस मन्त्रसे उसको अभिमन्त्रित करलेना चाहिये। यह मन्त्र पूर्ववत् जप द्वारा सिद्ध करलेव ।

इति पादुकासाधनम् ।

अथ गुटिका साधनम् ।

साधकश्चिल्लालयं गत्वा निन्यं तस्मै निवेदयेत् । देवताबुद्ध्यातिभक्त्या भक्षणार्थं किञ्चित्किंचिदाममांसं निक्षिपेत् । यावत्प्रसूता भवति ततः पारदं रसं सार्द्धनिष्कत्रयं कस्मिंश्चिन्नालिकाद्वये निक्षिपेत् तस्योर्द्ध्वाधश्छिद्रं सिक्थकेनरुद्ध्वा चिल्लालयं गत्वाऽण्डद्वयस्योपरि नालिकाद्वयं निधाय लौहशलाकायां नालिकामध्यमार्गे तदण्डं लघुहस्तेन वेधयित्वा शलाकामुद्धरेत् । तेनैव मार्गेणाण्डमध्ये यथाम्भो गच्छति तथा यत्नं कुर्यात् । ततश्छिद्रं चिल्लाविष्ठयालिम्पेत् ततस्त

वृक्षाधो नित्यमतिबल्युपहारेण पूजां कुर्यात् । यावत् स्वयमेवाण्डानि स्फोटयन्ति तावन्नित्यमु परि गत्वा वीक्षयेत् । स्फुटिते सति गुटिकाद्वय ग्राह्यम् । ततो वृक्षादुत्तीर्य गो गिलति मनुष्य स्तरमे एका देया । अपरा स्वय मुखे धारयेत् । योजनद्वादश गत्वा पुनरेव निवर्त्तते ॐ ह्रीं हुं फट् चिह्लचक्रेश्वरी परात्परेश्वरे पादुकानाशन देहि मे देहि स्वाहा । अनेन मन्त्रेण जप पूजाञ्च कुर्यात् ।

प्रथम तो चीलपक्षीके घोसल पर जाय,उसको देवता जान कर पूजा करे । नित्य इस प्रकार पूजा करके भोजनके लिये थोडा थोडा कच्चा मास देवे प्रसवसमयतक इस प्रकार भोजन देकर प्रसवके अ तम दो नल निर्माण करके उसके ऊपर नीचेके छिद्र मोमसे बद कर देवे । फिर तिनमे साढे तीन तोला पारा भरकर वह दोनों नल दोनों अडोंके ऊपर रखे और एक लोहेकी सलाई नलके ऊपरी मुखम प्रवेशित करके सावधानीसे दोनो अडे वेधकर सलाई निकाल लेवे । इस प्रकार मानभाजी

५

और कोमल हाथोसे अडा वेधे, जिससे उन छिद्राके द्वारा अडोंमे नलका पारा घुसजाय और अडे न फूटे। फिर उन अडोंके छेद चीलकी बीटमे बद करके वृक्षके नीचे अडोंके फूटनेतक नित्य बलि और अनेक प्रकारके उपहारसे पूजा करे। जबतक यह अडे अपने आप न फूटे तबतक नित्य वृक्षके ऊपर चढकर देखे। इन अडोंके फूटनेपर दिखाइ देगा कि उनमे दो गुटिका हुए है। तब यह दोनो गुटिका लाकर एक अपरव्यक्तिको देवे और एक अपने मुखमें रखे। इस प्रकार कार्य करनेपर वह मनुष्य सौ योजन दूर जाकर फिर वहासे लौटकर आ सकता है। ॐ ह्रीं इत्यादि मूल लिखित मन्त्रसे पूजा और जप करना चाहिये। लक्ष जपद्वारा यह मन्त्र सिद्ध होता है।

अथ मृतसजीवनीविद्या ।

ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्य ।
रुद्रेभ्यो रुद्ररूपेभ्यो नमस्तेऽस्तु रुद्ररूपेभ्य ॥
निशीथे भौमे श्मशाने अन्यैरदृष्ट लक्षजपेन सिद्धि ।
लिङ्गामकोलवृक्षाध स्थापयित्वा प्रपूजयेत् ।
नव घटच तत्रैव पूजयेल्लिङ्गसन्निधौ ॥
कूर्म लिङ्ग घटश्चैव सूत्रेणैकेन वेष्टयेत् ।

चतुर्भि साधकै सार्द्धं प्रतिमास क्रमेण तु ॥
एव दिवानिश कुर्यादघोरेण समर्चनम् ।
पुष्पादिफलपाकान्त साधन कारयेत्सुधी ॥
फलानि पक्वान्यादाय पूर्वोक्त पूरयेद्धटम् ।
तद्धट पूजयेद्धीमानर्घ्यपुष्पाक्षतादिभि ॥
तुषवर्जि तत कृत्वा गजाना वापयेन्मुखम् ।
तन्मुखे टङ्कट चूर्ण किञ्चित्किचित्प्रपूजयेत् ॥
विस्तीर्णमुखभाण्डान्त कुम्भकारगणोद्धृतम् ।
मृत्तिका लेपयेत्तत्र तानि बीजानि लेपयेत् ॥
कुण्डल्याकारयोगेन यत्नादूर्ध्व मुखानि च ।
तच्छुष्क ताम्रपात्रोत्थ भाण्ड दद्यादधोमुखम् ॥
आतपे धारयेत्तैल ग्राहयेत्त च रक्षयेत् ।
माषार्द्धचैव तत्तैल माषार्द्ध तिलतैलकम् ॥
तस्य देय मृतस्यैतत्सम्यक् तस्यासितेन तु ।
तत्क्षणाज्जीवयेत्सत्य गतो वापि यमालयम् ॥
रोगाग्निसर्पादिमृता पुनर्जीवन्ति निश्चयम् ॥

मृतसजीवनी विद्यामें सबसे पहिले ॐ अघोरेभ्योऽथ इत्यादि ऊपर लिखा मन्त्र लक्ष जपद्वारा सिद्ध करलेना चाहिये। मगलवार निशीथकालके समय श्मशानम बैठकर गुप्त रीतिसे जप करना चाहिये अकोल वृक्षके नीचे शिवलिंग स्थापनपूर्वक उस लिंगके समीप एक नूतन घट स्थापन करके पूजा करे। इस प्रकार दिन रात अघोर मन्त्रसे पूजा करनी चाहिये। जब तक इस वृक्षमे फूल और फल उत्पन्न न हों, तबतक नित्य पूजा करके फल पकने पर उसको लेवे। अनन्तर पुनर्वार पुष्प अक्षत अर्घ्य इत्यादिसे उस घटमे पूजा करे। फिर इन सब बीजोकी भुस्सी छुटाकर एक फेले हुए मुखवाले बरतनमे रखे। इस बरतनके मुखमे कुछेक सुहागेका चूण डालकर कुम्हारके द्वारा उखाडी हुई मिट्टीके द्वारा उस बरतनका मुख लिप्त कर नीचेको मुख करके धूपमे रखे। इस बरतनके नीचे एक तांबेके पात्र रखना चाहिये। इस प्रकार करनेपर उस तॉबेके पात्रमे तेल गिरता है, यह तेल आधा मासा और तिलका तेल आधा मासा एकत्र करके मुरदेके ऊपर छिडकनेसे वह व्यक्ति तत्काल पुनरुज्जीवित होता है पीडा सप घात वा किसी प्रकारही क्यों न मरा हो इस क्रियासे जीवित होगा।

पुष्यभास्करयोगेन गुडूचीमूलमाहरेत् ।
कर्षमुष्णोदकै पीतमपमृत्युहर परम् ॥

रविवार पुष्यनक्षत्रमे गिलोयकी जड लाकर उसको दो तोले गरम जलके साथ सेवन करनेसे उस व्यक्तिको अकाल मृत्युका भय नही होता है । भोजनके समय पूर्वोक्त मन्त्रद्वारा द्रव्य सात बार अभिमन्त्रित कर लेने चाहिये ।

अथ रसायनविद्या ।

ॐनमो हरिहराय रसायन सिद्धि कुरुकुरु स्वाहा ।
प्रान्तरेऽलक्षिते अयुतजपेन सिद्धि ।
गोमूत्र हरितालञ्च गन्धकञ्च मन शिलाम् ।
सम सम गृहीत्वा तु यावत् शुष्यति पेषयेत् ॥
एकादशदिन यावद्यत्नेन रक्षयेच्छुचि ।
मन्त्रेण धूमदीपादिनैवेद्यैर्दुग्धमिश्रितै ॥
तद्वटी गोलक कृत्वा वस्त्रेण वेष्टयेत्पुन ।
मृत्तिका लेपयेत्तस्य छायाशुष्कन्तु कारयेत् ॥
गर्त्ते कुडे विनिक्षिते पलाशेन्धनवह्निना ।
ज्वालयेदष्टयामन्तु नान्यथा शङ्करोदितम् ॥

तद्भस्म जायते सिद्धिर्विद्धि सिद्धिसमाकुलम् ।
ताम्रपात्रे अग्निमध्ये बिन्दुमात्र नियच्छति ॥
तत्क्षणाज्जायते स्वर्ण नान्यथा शङ्करोदितम् ।
दातव्य गुरुभक्ताय न दद्याद्दुष्टमानसे ॥
सिद्धिपीठे भवेत्सिद्धिर्गायत्रीलक्षजापनै ।
यस्मै कस्मै न दातव्य दातव्य शिवभक्तके ॥
अग्निमुखद्विजातीना याचकानां विशेषत ।
गोप्य गोप्य महागोप्य देवानामपि दुर्लभम् ॥
रसप्रतिक्रियां कृत्वा गोप्य नैव प्रकाशयेत् ।
वनितापुत्रमित्रादिगोप्य सिद्धिप्रदायकम् ॥

रसायनविद्याके साधन करनेम प्रथम मूल लिखित ॐ नमो हरिहराय इत्यादि मन्त्र दश हजार मन्त्रद्वारा सिद्ध करके फिर कार्यमे प्रवृत्त होना चाहिये । अन्यकी दृष्टिमे छिपकर प्रान्तरमे बैठकर जप करे । गोमूत्र, हरताल गन्धक और मनशिल यह सब बराबर लेकर खरलमे पीसे । जबतक सूखे तबतक भलीभाति पीसकर यत्नसहित पवित्र स्थानमे रक्खे । फिर ग्यारह

दिन बीतने पर धूप दीप और दुग्धसमन्वित नैवेद्यादि विविध उपचारोंसे यक्षिणीकी पूजा करनी चाहिये । फिर पूर्वोक्त दिये हुए पदार्थ गोलाकार करके वस्त्रसे परिवेष्टित करे । फिर मिट्टीका लेप करके गर्तके भीतर पलाशकाष्ठ डालकर उसके ऊपर यह गोलक द्रव्य स्थापन करे और ऊपरी भागमें पलाश काष्ठकी आठ पहरतक आँच लगावे । फिर वह भस्म लेकर एक स्थानमें रखनी चाहिये। फिर एक तांबेका टुकडा अग्निमें दग्ध कर उसमें जरासी पूर्वोक्त भस्म डालतेही तत्काल वह तांबा सुवर्ण हो जायगा। महादेवजीने स्वयं इस क्रियाका वर्णन किया है यह बात कभी मिथ्या होनेवाली नहीं है। इस क्रियाको साधन करनेके प्रथम किसी सिद्धपीठमें बैठकर एक लाख गायत्रीको जप करे । इस क्रियाको सब साधारणके निकट प्रकाशित न करे । यह देवताओंको भी दुर्लभ है । जो पुरुष एकमात्र शिवका भक्त है, उसीके निकट प्रकाशित करे। यह सिद्धिदायक विषय पुत्र, कलत्र, मित्र किसीके भी निकट प्रकाशित न करे ।

आनीय बहुयत्नेन सम्बल तोलकद्वयम् ।
वसुराद्य शिवश्चाद्य मायाबिन्दुसमन्वितम् ॥

बीजत्रयञ्चाष्टशतं प्रजपेत्सम्बलोपरि ।
अशीतितोलकं मानं कृष्णाधेनुसमुद्भवम् ।
दुग्धमानीय यत्नेन चाष्टोत्तरशतं जपेत् ।
वस्त्रयुक्तेन सूत्रेण दुग्धमध्ये विनिक्षिपेत् ॥
उत्तार्य ज्वालयेद्धीमान् मन्दमन्देन वह्निना ।
रिपुर्वेदार्द्धपर्यन्तमर्द्धशेषं भवेद्यदि ॥
तदैवोत्तोल्य तद्द्रव्यं दुग्धं तोये विनिक्षिपेत् ।
निर्धूमं पावके द्रव्यं दृष्ट्वा चोत्थाप्य यत्नतः ॥
तत्रैव प्रजपेन्मन्त्रं सर्वमङ्गलमात्मकम् ।
सार्द्धेन तोलकं ताम्रं वह्निमध्ये विनिक्षिपेत् ॥
यथा वह्निस्तथा ताम्रं दृष्ट्वा उत्थाप्य यत्नतः ।
गुञ्जाप्रमाणं तद्द्रव्यं सत्यं सत्यं हि शंकरि ॥
रौप्यं भवति तद्द्रव्यं नान्यथा शंकरोदितम् ।

दो तोला सम्बल (जल) लाकर उस पर ' ॐ हुँ ह्रीं यह त्रिवर्णात्मक मन्त्र एक सौ आठ बार जपकर काली गायका दूध अस्सी तोले लावे और उस पर उक्तमन्त्र अष्टो

सरशत जपे । फिर । यह सम्बल वस्त्रके टुकडेमे पोटली करके उसमे डोरा बाँधदेवे और फिर उसको उस दूधके भीतर डालकर मीठी मीठी आगसे ताप देवे । जब इस दूधमे आधा सुखकर आधा शेष रह जाय तब वह पोटली दूधमेसे निकालकर जलमे डालदेवे । कुछ देर पीछ उसको जलसे निकालकर अग्निमे डालने पर यदि उसमेसे धुँआँ न निकले, ऐसा होनेसे ही समझलेना चाहिये कि सम्बल कायके उपयुक्त हुआ है । अनन्तर इस सबलके ऊपर भागमे पूर्वोक्त मन्त्र आठ हजार बार जपना चाहिये । फिर आधा तोला ताँबा अग्निमे दग्ध करे जब वह ताँबा अग्निकी समान होगा तब वह अग्निसे निकालकर सम्बलकी रत्ती लेकर उस ताँबे पर डालतेही वह ताँबा चादी हो जाता है, इसमे सन्देह नही ।

इति रसायनविद्या ।



अथ सर्वौषधिकथनम् ।

श्वेतापराजितामूल देवदानीयमूलकम् ।
वारिणा पेषित नस्य कालदष्टोऽपि जीवति ॥

जलके सग सफेद विष्णुक्राता और बडी तोरईकी जड पीसकर हुलास सूघने पर सर्पसे काटा हुआ मनुष्य आरोग्यता लाभ करता है ।

दधि मधु नवनीत पिप्पली शृङ्गवेर ।
मरिचमपि च कुष्ठ चाष्टम सैन्धवञ्च ॥
यदि दशति सरोषस्तक्षको वासुकिर्वा ।
यमसदनगत स्यादानयेत्तत्क्षणेन ॥

दही, शहत, मक्खन पीपल अदरक, गोलमिच, कूट और सैधा इन आठ पदाथाके सेवन करनेसे क्रुद्ध तक्षक वा वासुकीके डसा हुआ पुरुषभी तत्काल यमालयसे लोट आता है।

अथ विविधम त्रा ।

तत्र

ॐ	ह्रीं	क्लीं	स्त्रीं	हुँ	फट्
रक्षा	गर्भं	अमुकी	गर्भं	रक्ष	रक्ष
स्वा	हा	श्रीं	क्लीं	फट	हुँ

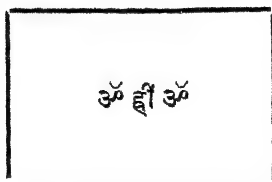
मृतवत्सादोपशाति ।

भूर्जपत्रे समालिख्य रोचनाकुकुमेन च ।
कण्ठे वा वामबाहौ च धृत्वा गर्भवती सती ॥
मृतवत्सा दोषहीना भवेच्चेव न सशय ॥

भोजपत्र पर गोरोचन और कुकुमसे यह मन्त्र लिखकर कंठ थवा बाई भुजामें धारण करने पर मृतवत्सा दोषकी शांति ती है ।

वन्ध्यागर्भधारणम् ।

चतुष्कोण समालिख्य भूर्जे वा तालपत्रके ।
ऊर्द्ध्वभागे च गगन बिन्दुनादसमन्वितम् ॥
अन्यत्र चाग्निपत्नी च लिखेन्मन्त्रमनन्यधीः ।
अधोभागे वषट् चैव फट्कारञ्च ततो लिखेत् ॥
मध्ये प्रणवपुटित मायाबीज समुद्धरेत् ।
विधिना पूजयित्वा च रुद्र रुद्रकाली तथा ।
कण्ठे वा वामबाहौ च त्वथवा कटिदेशके ।
वन्ध्या चापि लभेत्पुत्र धारणान्नात्र संशय ॥



भोजपत्र वा तालपत्रपर ऽपरोक्त य त्र लिखकर यथाविधि रुद्र और रुद्रकालीका पूजापूर्व कंठ कमर अथवा बाँई भुजामे धारण करनेसे वंध्या (बाँझ) स्त्रीभी पुत्र प्राप्त करती है, इसमे स देह नही ।

अथ काकवंध्यादोषशांति ।

अश्वगन्धाया मूलन्तु ग्राहयेत्पुष्यभास्करे ।
पेषयेन्महिषीक्षीरे पलार्द्धं भक्षयेत्सदा ॥
सप्ताहाल्लभते गर्भं काकवन्ध्या चिरायुषम् ॥

मन्त्रस्तु ।

ॐ नम शक्तिरूपाय अस्या गृहे पुत्रं कुरु कुरु स्वाहा । अष्टोत्तरशतजपेन सिद्धि ॥

पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारमें असगंधकी जड लाकर उसको भैसके दूधमे पीसकर अर्द्ध पल सेवन करे । इससे काकवंध्या स्त्रीभी सात दिनके भीतर गर्भ धारण करती है और यथाकालमें दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त करती है ।

---

१ पूर्वं पुत्रवती या सा कचिद्वंध्या भवद्यादि ।
काकवंध्या तु सा ज्ञेया चिकित्सा तत्र कथ्यते ॥
प्रथम जो एक मात्र पुत्रवती था और फिर कोई संतान उत्पन्न नहीं हुई उसका नाम काकवंध्या है ।

वीरसाधनम् ।

अष्टम्यांच चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ।
कृष्णपक्षे विशेषेण साधयेद्वीरसाधनम् ॥

कृष्ण अथवा शुक्ल पक्षकी अष्टमी अथवा चतुर्दशी तिथिमे वीरसाधन कार्य करे । वीरसाधन कृष्ण पक्षमे विशेष फलका देनेवाला है ।

तत्र सार्द्धप्रहरे यामे गते च सुरसुन्दरी ।
शवं वापि चितां वापि नीत्वा गत्वा यथासुखम् ॥
साधयेत्स्वहितं मन्त्री मन्त्रध्यानपरायणः ।
भयं नैव तु कर्त्तव्यं हास्यं तत्र विवर्जयेत् ॥
चतुर्दिशं न वीक्षेत मन्त्रमेव समभ्यसेत् ।

साधक डेढ पहर रात्रि बीतनेपर चितास्थानसे एक शव (मुरदा) लाकर मन्त्रध्यानपरायण हो अपना हित करनेके निमित्त कार्य करे । साधनके समय साधक किसी प्रकार डरे नहीं, हँसी मसखरी त्याग दे और किसी ओर न देखकर एकाग्र चित्तसे केवल मन्त्रका जप करता रहे ।

पूजाद्रव्यादि ।

सामिषान्न गुड छाग सुरा पायसपिष्टकम् ।
नानाफलञ्च नैवेद्य स्वस्वकल्पोक्तमाधितम् ।

वीरसाधन कार्यमे जिन सब द्रव्यो (वस्तुओ) की आवश्यकता है वह कही जाती है सामिषान्न, गुड, छाग (बकरा), सुरा खीर अनेक भांतिके फल, नैवेद्य और स्व स्व देवताओंके पूजा विहित द्रव्य ।

चितास्थान समानीय सुहृद्भि शस्त्रपाणिभि ।
समानगुणसम्पन्नै साधयेद्वीतभी स्वयम् ॥

साधक यह सब पदार्थ श्मशान स्थानमे लाकर निर्भय चित्तसे समान गुणशाली अस्त्रधारी बधुओंके सहित वीरसाधन करे ।

अपि च ।

बल्यर्थं सामिषान्नञ्च गुड छाग तथा मधु ।
पिष्टक परमान्न च पयो मूल फल तथा ॥
सप्तपात्र बलि कृत्वा चतु पात्र चतुर्दिशि ।
पात्रत्रय सदा मध्ये स्थापयेन्मनुनामुना ॥

गुरुं वा भ्रातरं वापि ब्राह्मणान् वापि सुव्रतान् ।
अन्यानपि च रक्षार्थं किञ्चिद्दूरे निवेशयेत् ॥

मतांतरमें लिखा है कि बलिके निमित्त सामिषान्न, गुड, बकरा, शहत, पिट्ठी, परमान्न, दूध, फल और मूल यह सब पदार्थ संग्रह करके वीरसाधन करे । बलिके पदार्थ सात पात्रमें रखकर उनमें चार दिशामें और तीन पात्र बीचमें रखकर मंत्र पाठ पूर्वक निवेदन करे । गुरु, भ्राता अथवा सुव्रत ब्राह्मणोंको अपनी रक्षाके निमित्त थोडी दूरपर नियुक्त करे ।

चितालक्षण ।

असंस्कृता चिता ग्राह्या न तु संस्कारसंस्कृता ।
चाण्डालादिषु संप्राप्ता केवलं शीघ्रसिद्धिदा ॥

अब चिताके लक्षण कहे जाते हैं । वीरसाधनकार्यमें असंस्कृत चिताही ग्रहण करे संस्कृत अर्थात् जलसेकादिद्वारा परिष्कृत चितामें वीरसाधन न करे चाण्डालादिके श्मशानमें वीरसाधन करनेसे शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है ।

अधिकारिनिरूपणम् ।

महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिकः शुचिः ।
महास्वच्छो दयायुक्तः सर्वभूतहिते रतः ॥

वीरसाधन कार्यमे अधिकारी निरूपण किया जाता है । जो महाबलशाली, महाबुद्धि, महासाहसयुक्त, सरलचित्त दयावान् और सब प्राणियोका भला करनेमे तत्पर है वही वीरसाध कार्य करनेका अधिकारी है ।

तत सामान्यार्घ्यं विधाय स्वस्तिवाचनपूर्वक सङ्कल्प कुर्यात् । यथा ॐ अद्येत्यादि अमुक गोत्र श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकमन्त्रसिद्धिकाम श्मशानसाधनमह करिष्ये इति सङ्कल्प्य वस्त्रालङ्कारभूषणाद्यैर्भूषित पूर्वदिङ्मुख । अस्त्रान्तकमूलमन्त्रेण प्रोक्षण यागभूमिषु मूलमन्त्रेण फट्कारान्तेनेत्यर्थ ।

गुरुपादरजो ध्यात्वा गणेश बटुक तथा ।
योगिनी मातृकाश्चैव वामपादपुर सरम् ॥

तथाच ।

गणेशादिक सम्पूज्य अस्त्रमन्त्रेणात्मान सरक्ष्य
अस्त्रमन्त्रेण मन्त्रज्ञो रक्षामात्मनि कारयेत् ॥
तत । ये चात्रसस्थिता देवाराक्षसाश्च भयानका ।

पिशाचा सिद्धयो यक्षा गन्धर्वाप्सरसां गणा ।
योगिन्यो मातरो भूता सर्वाश्च खेचरा स्त्रिया ॥
सेद्धिदास्ता भवन्त्वत्र तथा च मम रक्षका ।
प्रणम्य मनुनानेन पुष्पाञ्जलित्रय क्षिपेत् ॥

इस प्रकार अधिकारी पुरुष सामान्य अर्घ्य स्थापन कर स्वशास्त्रोक्त स्वस्तिवाचनपूर्वक संकल्प करे । संकल्पवाक्य मूलमें लिख रहा है संकल्प करनेके उपरान्त साधक वस्त्राल कारादि अनेक गहनोंसे विभूषित होकर पूर्वाभिमुख बैठे फट कारान्त मूलमन्त्रसे यागस्थानको प्रोक्षण करे । फिर गुरुदेवके बायें पैरकी रजका ध्यान करके गणेश, बटुक, योगिनी और मातृकागणकी पूजा करे । अनन्तर साधक फट इस मन्त्रसे आत्मरक्षा करके ' ये चात्र संस्थिता देवा इत्यादि मूललिखित मन्त्रसे प्रणाम करके तीन अंजली पुष्प प्रदान करे ।

श्मशानाधिपतिं पश्चाद्भैरव कालभैरवम् ।
महाकाल यजेत्पश्चात्पूर्वादिदिक्चतुष्टये ॥
शब्दबीज तत पश्चाच्छ्मशानाधिपतेत्परम् ।
इममन्ते सामिषान्नबलि गृह्ण तत परम् ॥

गृह्णगृह्णापयद्वन्द्व विघ्ननिवारण तत ।
कुरु सिद्धि ममान्तश्च प्रयच्छ स्वाहयान्वित
प्रणवाद्येन मनुना प्रथमो बलिरीरित ।
मायान्ते भैरवात्पश्चाद्भयानकमत परम् ॥
पूर्ववद्बलिमुद्धृत्य दक्षिणे बलिमाहरेत् ।
पश्चिमे कालदेवाय प्रणवाद्येन कल्पयेत् ॥
शब्दान्ते कालशब्दान्ते भैरवेति तत परम् ।
स्मशानाधिप इत्येव पूर्ववच्चोत्तरे हरेत् ॥
होमान्ते च महाकालात्पश्चात्पूर्ववदुच्चरेत् ॥
पाद्यादिभिश्च मन्त्रज्ञो बलि पश्चान्निवेदयेत् ॥
श्मशानाधिपतिं पञ्चोपचारै पूसज्यानेन मन्त्रेण बलि दद्यात् तद्यथा ।

ॐ हूँ श्मशानाधिप इम सामिषान्नबलि गृह्ण गृह्ण गृह्णापय विघ्ननिवारण कुरु सिद्धि मम प्रयच्छ स्वाहा ॥

ततो भैरव पूर्ववत्सम्पूज्य दक्षिणस्यां ह्री
व भयानक इम सामिषान्नबलिमित्यादि ।
पश्चिमे कालभैरव सम्पूज्य हू महाकाल
श्मशानाधिप इम सामिषान्नबलिमित्यादि ॥
चितामध्ये ततो दद्याद्बलित्रयमनुत्तमम् ।
कालरात्रि महाकालि कालिके घोरनि स्वने ॥
कालिकायै बलिं दत्त्वा भूतनाथाय दापयेत ।
शब्दान्ते भूतनाथान्ते श्मशानाधिप इत्यपि ॥
प्रणवाद्येन मनुना दापयेद्बलिमुत्तमम् ।
शब्दान्ते तु सर्वगणनाथान्ते चाधिपाय च ॥
श्मशानमस्तके दत्त्वा पञ्चगव्येन सुन्दरि ।
अद्भिश्च प्रोक्षण कृत्वा पीतवस्त्र न्यसेत्तत ॥
भूर्जे वा वटपत्रे वा तत्र पीठमनु न्यसेत् ।
पीठमास्तीर्य तस्मिन्वै बद्धवीरासनस्तत ॥
वीरार्दनेन मनुना रक्षा दिक्षु प्रकल्पयेत ॥

अस्यार्थ ।

श्मशानास्थ्यादिक पञ्चगव्येन सम्प्रोक्ष्य, भू त्रादौ तत्र व्याघ्रचर्मादि पीठमास्तीर्य, तत्र सनक्रमेणोपविश्य, वीरार्दनेन मन्त्रेण चतुर्दिक्षु रक्षां कुर्यात् ॥

वीरार्दनम न्त्रस्तु ।

हूँ हूं ह्रीँ ह्रीँ कालिके घोरदंष्ट्रे प्रचण्डे चण्डे नायिके दानवान्दारय हन हन शवशरीरे महाविघ्नं छेदय छेदय स्वाहा हूँ फडिति ॥
अनेन मन्त्रित लोष्ट दश दिक्षु विनिक्षिपेत् ।
तन्मध्ये भैरवो देवो न विघ्नै परिभूयते ॥

नीलतन्त्रे ।

कूर्चद्वय ततो देविमायायुग्म तत परम् ।
कालिके घोरदंष्ट्रे च प्रचण्डे चडनायिके ॥
दानवान्दारयेत्युक्त्वा हनेति द्वितय पुन ॥

शवशरीरे महाविघ्नं छेदयद्वितयं पुनः ॥
१०ठान्तो वर्म चास्त्रान्तो वीरार्दनमनुर्मतः ॥

। विषयका वीरतन्त्रमें जो प्रमाण लिखा है वह सब यहा मूलमें दिखा देंगे। पूर्वदिशामें श्मशानाधिपति, दक्षिणदिशामें भैरव, पश्चिमदिशामें कालभैरव और उत्तरदिशामें महाकालभैरवकी पूजा करके बलि देनी चाहिये। बलिका मन्त्र और मन्त्रोद्धारका प्रमाण मूलमें स्पष्टरूपसे लिखा है देखनेसे समझमें आजायगा। मूललिखित मन्त्रसे पूर्वादिके क्रमानुसार श्मशानाधिपति इत्यादि भैरवगणकी पूजा और बलि देकर चितामें शेष तीन बलि निवेदन करे। यथा (ॐ कालरात्रि महाकालि) इत्यादि मन्त्रसे कालिका देवीको शेष तीन बलिमेसे एक बलिका पदार्थ निवेदन करके (ॐ हूँ भूतनाथ श्मशानाधिप इमं सामिषान्नबलिं) इत्यादिमन्त्रसे अपर बलि निवेदन करनी चाहिये। फिर (ॐ हूँ सर्वगणनाथ श्मशानाधिप इमं सामिषान्नबलिं) इत्यादि मन्त्रसे तीसरी बलि देनी चाहिये। इस प्रकार बलि देकर पञ्चगव्य और जलद्वारा श्मशानकी अस्थि इत्यादि प्रोक्षण करके तदुपरि पीतवस्त्र विन्यास पूर्वक वडके पत्ते अथवा भोजपत्रपर पीठमन्त्र लिखकर पीले वस्त्रपर रक्खे। उसपर व्याघ्र चर्मादिका आसन बिछाय वीरासन बैठकरके

वीरार्दन मन्त्रके द्वारा अपनी चारो दिशाकी रक्षा करे । (हँ हूँ ह्रीँ ह्रीँ कालिके) इत्यादि मूल लिखित वीरार्दन मन्त्र पूर्वादि दशों दिशाओमे लाइा बखेर । इस भाँति दशो दिशा रक्षा करके वहा बैठकर साधन करनेपर कोइ विघ्न बाधा होसकती वीरार्दन मन्त्रोद्धारक जो सब प्रमाण नीलतन्त्रे लिखे है, वे सब वचन यहा मूलमे उद्धृत किये गये है ।

यदिप्रमादाद्देवेशि साधको भयविह्वल ।
ततस्तैस्तै सुहृद्वर्गैं रक्षितो नाभिभूयते ॥

हे देवेशि ! साधन करनेके समय यदि साधक किसी प्रकार भयसे कातर होजाय, तो तत्काल पूर्वकथित सुहृद्गण उसका भय निवारण करे । सुहृद्गण सदा ऐसी सावधानीसे रहें कि जिससे किसी प्रकार साधक भयविह्वल न हो ।

सितार्ककर्पूरसितवात्यालतूलैर्वर्तिका निर्माय तत्र प्रदीप संस्थाप्य देव्यस्त्रेभ्यो नम इत्यस्त्र संपूज्य अधस्तात् ज्वलत्प्रदीप निखनेत ॥
हते तस्मिन्महादीपे विघ्नैश्च परिभूयते ।
ततपश्चादस्त्रमन्त्रेण निखनेत्कुलदीपकम् ॥

फिर कपूरमिश्रित सफेद आक सफेद वास्यालक (सफेद कटी) की रुईसे बत्ती बनाकर दीपक जलायकर उस स्थानमें ~ग्व (ॐ दे यस्त्रभ्यो नम) इस मन्त्रसे अस्त्र पूजा करके क अपने निचल भागमे यह जलता हुआ दीपक गड्ढा दकर रक्खे । इस विषयके जो सब प्रमाण तन्त्रमे लिखे है, सब वचन मूलमे उद्धृत हुए हैं । इस दीपकके बुझजानेसे साधकको महाभय उपस्थित होता है ।

ततस्तत्कल्पोक्तभूतशुद्ध्यादिन्यासजाल विधाय इष्टदेवतां सपूज्य सकल्प्य मन्त्र जपेत् । सकल्प स्तु । अद्येत्यादि अमुकगोत्र श्रीअमुकदेवशर्मा अमुकमन्त्रस्यामुकसख्यजपमह करिष्ये । इति सङ्कल्प्य देवताध्यानपुर सर मन्त्र जपेत् ।

तथा च ।

तत्तत्कल्पविधानेन भूतशुद्ध्यादिक चरेत् ।
षोढा वा तारकं वापि विन्यस्य पूजयेत्तत ॥
मन्त्रध्यानपरो भूत्वा जपेन्मन्त्रमनन्यधी ॥

फिर स्वीय कल्पोक्त विधानसे भूतशुद्धि और न्यासादिक

करके इष्ट देवताकी पूजा पूर्वक सकल्प करके जप आरम्भ करे । सकल्प वाक्य मूलमे लिखा है वहा देखकर समझलेना चाहिये । सकल्पके पीछे अपने हृदयमे देवताका ध्यान करके मन्त्र उचित है । इसका प्रमाण अ या य त त्राम लिखा है ।

जपनियमस्तु ।

एकाक्षरी यदि भवेद्दिक्सहस्र ततो जपेत् ।
द्व्यक्षरेऽष्टसहस्र स्यात्त्र्यक्षरे चायुतार्द्धकम् ॥
अत परन्तु मन्त्रज्ञो गजान्तकसहस्रकम् ।
निशाया वा समारभ्य उदयान्त समाचरेत् ॥
गजान्तकमिति अष्टोत्तरसहस्रमित्यर्थं ॥

जपका नियम यह है कि एकाक्षर मन्त्र दश हजार जपना चाहिये । द्व्यक्षर मन्त्र आठ हजार ओर त्र्यक्षर मन्त्र पाच हजार वार जपना चाहिये । चतुरक्षरादि मन्त्र अष्टोत्तर सहस्र जपना उचित है ।

यद्यसह्यभय कर्णौ नेत्रे वस्त्रेण बन्धयेत् ।
ततोऽर्द्धरात्रपर्यन्त यदि किञ्चिन्न लक्ष्यते ॥
जप दुर्गाख्यमनुना तेनैव सर्षपान्क्षिपेत् ॥

जयदुर्गामन्त्रस्तु ।

ॐ दुर्गे दुर्गे रक्षिणि स्वाहा ।

तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवस्तृप्तिकारकः ।
पितॄणां स्वर्गदाता त्वं मर्त्यानां मम रक्षकः ॥
भूतप्रेतपिशाचानां विघ्नेषु शान्तिकारकः ॥
इति पठित्वा ईशानादिचतुर्दिक्षु तिलांश्च निक्षिपेत्
ततः सप्तपदं गत्वा तत्रैव संविशेत् । पुनर्देवतां संपूज्य जपेत् ॥

रात्रिकालसे आरंभ करके सूर्योदयतक जप करना चाहिये। यदि साधक असह्य भयसे बहुतही घबराजाय तो वस्त्रसे साधकके कान और नेत्र बाँधदेवे । जिससे न वो कुछ देखसके और न सुन सके । यदि आधीराततक करनेपरभी कुछ दिखाई न दे, तो (ॐ दुर्गेदुर्गेरक्षिणि स्वाहा) इस जयदुर्गामन्त्रसे ईशानादि चारो कोनमे सरसो और (तिलोऽसि) इत्यादि मन्त्रसे तिल बखरने चाहिये । फिर पहले बैठनेके स्थानसे सात पैर चलकर उसी स्थानमें बैठ जाय और पुनर्वार देवताकी पूजा करके जप करे होम नियुक्त होवे ।

ततो यदि वरं वरयेति वदेत् तदा सत्यं कारयेत॥

तथा च।

वरं वरय चेत्युक्ते साधकः स्थिरमानसः।
सत्यन्तु कारयित्वा च वरयेद्वरमुत्तमम्॥

यदि जप करते करते कोई आनकर (वर ग्रहण करो) यह बात कहे तब देवताको प्रतिज्ञाबद्ध करके अभिलाषित वर माँगे।

जपादौ तु बलिं दत्त्वा पश्चादपि बलिं हरेत्।
जपान्ते जपमध्ये वा देहि देहीति भाषिते॥
तदापि च बलिं दद्यान्महिषं वापि छागलम्॥
बालञ्च यवपिष्टमयेन॥

जपके प्रारम्भमें जपके मध्यमें और जपके अन्तमें बलि देनी चाहिये। जपके आदि मध्य वा अन्तसमयमें देवी जिस काल बलिकी प्रार्थना करे तबही भैंसे अथवा बकरेकी बलि देवे। जौकी पिठीका भैंसा वा बकरा बनाकर बलि देनी चाहिये।

यदा बलिं प्रार्थयते नरं कुञ्जरमेव वा।
दिनान्तरेऽपि दास्यामि स्वीकृत्य स्वगृहं व्रजेत्॥

जब देवी नर अथवा हाथीके बलिकी प्रार्थना करे तो दिना तरमें बलि दूगा) इस प्रकार प्रतिज्ञा करके अपने स्थानको चलाजाय ।

अपरेऽह्नि ततो दद्यात्पिष्टेन नरकुञ्जरान् ॥
पिष्टेनेति यवधान्योद्भवेनेत्यर्थ ॥

दूसरे दिन यवकी पिट्टी अथवा धा यकी पिट्टीका नर और हाथी बनावे और उसको खगद्वारा पूर्वोक्त म त्रसे छदन करे ।

तथा ।

यवक्षोदमय वापि शालिक्षोदमयन्तथा ।
चन्द्रहासेन विधिवत्तत्तन्मन्त्रेण घातयेत् ॥
जपान्ते तु बलि दद्याद्देवतायै यथाविधि ।
महिष छागल वापि गृहीत्वा वरमेव च ॥
गृह गच्छेत्स्वसुहृदा सार्द्ध सहृष्टमानस ॥
ततो दक्षिणा दद्यात् ॥
समाप्य साधन देवि दक्षिणां विभवावधि ।
गुरवे गुरुपुत्राय तत्पत्न्यै वा निवेदयेत् ॥

तन्त्रान्तरमें जो सब प्रमाण लिखे हैं वे सब प्रमाण इस स्थानमें उद्धृत हैं । योगिनीहृदयमें लिखा है कि, जपके उक्त प्रकारसे भैंसे अथवा बकरेकी बलि देकर वर ग्रहण कर और फिर सुहृदजनोंके सहित प्रसन्न चित्तसे अपने घर जा अपनी शक्तिके अनुसार गुरु गुरुपुत्र अथवा गुरुकी भा दक्षिणा देनी चाहिये ।

इति वारसाधनम् ।

अथ पुरश्चरणम् ।

कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्ड समाहृतम् ।
पञ्चगव्येन मिलितं चन्दनाद्यैर्विशेषत ॥
निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानत कानने वने ।
तत्र तद्दिवसे रात्रौ सहस्र यदि मानत ॥
एकाकी प्रजपेन्मन्त्री स भवेत्कल्पपादप ।

मङ्गल अथवा शनिवारके दिन एक नरमुण्ड लाकर उसको पञ्चगव्यसे सिक्त और चन्दन चर्चित करके वनमें अर्द्धहस्त परिमित भूमिके नीचे डाल दे । इस दिन रात्रिके समय इस स्थानमें अकेला बैठकर एक हजार मन्त्र जपनेसेही पुरश्चरण

होता है । इस प्रकार पुरश्चरण करनेसे साधक कल्पवृक्ष स्वरूप होता है ।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
शवमानीय तद्द्वारे तेनैव परिखन्यते ॥
तद्दिनात्तद्दिनं यावत्तावदष्टोत्तरं शतम् ।
स भवेत्सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा ॥

अब अन्य प्रकारसे पुरश्चरणकी रीति कही जाती है । एक शव लाकर पूर्वोक्त प्रणाली (रीति) से दरवाजेमें गाडकर उसपर बैठकर जप करे जिस दिन प्रथम जप आरंभ करे उस दिनसे फिर उस दिनतक प्रतिदिन एकसौ आठ बार जप करे । इस प्रकार आठ दिनतक जप करनेसे पुरश्चरण होता है । इस प्रकार पुरश्चरण करनेसे साधक सर्वसिद्धीश्वर होता है ।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
अष्टम्याञ्चचतुर्दश्या पक्षयोरुभयोरपि ॥
सूर्योदयं समारभ्ययावत्सूर्योदयान्तरम् ।
तावज्जप्त्वा निशातङ्कं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥

अब अन्य प्रकार पुरश्चरणकी रीति कही जाती है शुक्ल अथवा कृष्ण पक्षकी अष्टमी तिथिमे सूर्योदयसे आरभ करके पुन सूर्योदयतक जप करे । इस प्रकार जप करने पुरश्चरण होता है । इस पुरश्चरणके बलसे साधक अणि दिक अष्टसिद्धियोका अधीश्वर हो सकता है ।

अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ।
शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यन्त विशेषत ॥
भक्तित पूजयित्वा तु रात्रौ तावत्सहस्रकम् ।
जपेदेकाकी विजने केवल तिमिरालये ॥
अष्टम्यादिनवम्यान्तमुपवासपरो भवेत् ॥

अन्य प्रकारसे पुरश्चरणकी रीति—यथा । शरत्कालमे चतुर्थीतिथिसे नवमीतक प्रतिदिन रात्रिमे भक्तिपूर्वक देवीकी पूजा करके एक हजार मन्त्र जपना चाहिये । सूने और अँधेरे घरमे अकेला बैठकर जप करे अष्टमीसे नवमीतक उपवासी रहकर जप करना चाहिये ।

कृष्णाष्टमी समारभ्य यावत्कृष्णाष्टमी भवेत् ।
सहस्रसंख्यजप्येन पुरश्चरणमिष्यते ॥

अ य प्रकार पुरश्चरणकी रीति । यथा कृष्णाष्टमीसे आरम्भ [illegible] पुनवार कृष्णाष्टमीतक नित्य एक हजार म त्रका जप । इस प्रकार एक मास जप करनपर पुरश्चरण होता है ।

कृष्णा चतुर्दशी प्राप्य नवम्यन्त महोत्सवे ।
अष्टमीनवमीरात्रौ पूजां कुर्याद्विशेषत ॥
दशम्या पारण कुयान्मत्स्यमासादिभिर्युतम् ।
षट्सहस्र जपेन्नित्य भक्तिभावपरायण ॥

हे देवि ! पक्षकी पूर्व कृष्ण चतुर्दशीसे महानवमीतक प्रति [illegible] म त्र जपना चाहिये । एव महाअष्टमी और महानवमीकी रात्रिमें उपवासी रहकर विशेष प्रकारसे देवीकी पूजा करके दशमीके दिन मत्स्यमासादि द्वारा पारण करे । इस पुरश्चरणके समय भक्तिपूर्वक छै हजार म त्र जपना चाहिये ।

चतुर्दशीं समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ।
तावज्जप्त्वा महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥
केवल जपमात्रेण मन्त्रा सिद्धा भवन्ति हि ॥

चतुर्दशीसे पुनर्वार चतुर्दशीतक प्रतिदिन एक हजार म त्र जपना चाहिये । तब पुरश्चरण होता है । इस प्रकार केवल

जप मात्र करनेसही मन्त्रकी सिद्धि होती है होमादि करनकी आवश्यकता नही होती ।

सूर्योदय समारभ्य यावत्सूर्योऽस्तगो भवेत् ।
तावज्जप्त्वा महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥

हे महेश्वरि ! सूर्योदयसे सूर्यास्ततक लगातार जप करनेसे भी पुरश्चरण होता है ।

इति पुरश्चरणम् ।

अथाष्टनायिकासाधनम् ।

जयासाधनम् ।

मन्त्र । ॐ ह्री ह्री नमो नम जये हुँ फट् ।

एक अमावस्यासे दूसरी अमावस्यातक नित्य यह मन्त्र पाच हजार जपना चाहिये । प्रान्तरमें वा अन्य सूने शिवमन्दिरमे बैठकर जप करे । इस प्रकार जप समाप्त होनेपर आधीरातके समय जयानाम्नी नायिका साधकके निकट आकर उसको अभिलषित वर देती है ।

विजयासाधनम् ।

मन्त्र । ॐ हिलि हिलि कुटी कुटी तुट्टु तुट्टु मे

वशमानय अ अ स्वाहा। त्रिलक्षजपेन सिद्धि। नदीतीरस्थश्मशानवृक्षे स्थित्वा रात्रौ प्रजपेत्॥

नदीतीरस्थ श्मशानमे जो कोई वृक्ष हो, उस वृक्षपर चढ़कर रात्रिकालमे उपरोक्त मन्त्र जपना चाहिये। तीन लाख जपमे सिद्धि होती है। प्रतिदिन जप करके जिस दिन तीन लाख जप पूर्ण हो उसी दिन विजया नाम्नी नायिका प्रसन्न होकर साधकके वशीभूत होती है।

रतिप्रियासाधनम्।

मन्त्र। हुँ रतिप्रिये साधय साधय जल जल धीर धीर आज्ञापय स्वाहा। षण्मासात्सिद्धि। रात्रौ नग्नो भूत्वा हविष्याशी नाभिजले स्थित्वा जपेत्॥

रात्रिकालमे नगा होकर नाभिके बराबर जलमे खडा होकर इस मन्त्रको जपना चाहिये। छ मासतक हविष्याशी होकर समस्त रात्रि जप करता रहे। इस प्रकार करनेपर रतिप्रिया नाम्नी नायिका वशीभूत होती है।

काञ्चनकुण्डलीसिद्धि।

मन्त्र। ॐ लोलजिह्वे अट्टाट्टहासिनि सुमुखि काञ्चनकुण्डलिनी खे छ च क्षे हुँ। संवत्सरेण

सिद्धि । गोमयपुत्तलिका कृत्वा पाद्यादिभिःपूज येत् । त्रिपथस्थवटमूले प्रजपेत् ॥

गोबरकी पुतली बनाकर एक वर्षतक पाद्यादि द्वारा काचन कुण्डलिनीनाम्नी नायिकाकी पूजा और ऊपर लिखित मन्त्र जप करनेसे सिद्धि होती है । तिराहेके बडकी जडमे रातके समय गुप्त भावसे जप करना चाहिय ।

स्वर्णमालासिद्धि ।

मन्त्रः । ॐ जय जय सर्वदेवासुरपूजिते स्वर्णमाले हुँ हुँ ठ ठ स्वाहा । ग्रीष्मे मरौ पञ्चाग्निमध्ये स्थित्वा जपेत् त्रिमासात्सिद्धि ॥

ग्रीष्मकालमे चैत, वैशाख, ज्येष्ठ इन तीन मास मरुभूमिमें पञ्चाग्निमें अर्थात् चारों ओर चार अग्निकुण्ड और मस्तकपर सूर्यको रखकर इस मन्त्रके जपनेसे स्वर्णमाला सिद्ध होती है ।

जयावतीसिद्धि

मन्त्र । ॐ ह्रीँ क्लीँ स्त्रीँ हुँ द्रुँ ब्लुँ जयावति यमनिकृन्तनि क्लीँ क्लीँ ठ आषाढादित्रिमासान्विरलकाननस्थसरसि स्थित्वा रात्रौ जपेत्॥

निर्जनवनमध्यस्थ सरोवरके जलमे रात्रिके समय खडा होकर आषाढ, श्रावण भाद्र इन तीन महीने यह म त्र जपनेसे जयावती सिद्धि होती है ।

सुरङ्गिणीसिद्धि ।

मन्त्र । ॐ ॐ ॐ हुँ हुँ हुँ शीघ्रं सिद्धिं प्रयच्छ सुरसुरङ्गिणि महामाये साधकप्रिये ह्रीँ ह्रीँ स्वाहा षड्वर्षेण सिद्धि । प्रत्यहं रात्रौ शय्यायामुपविश्य सहस्र जपेत् ॥

प्रतिदिन रात्रिकालमे शय्यापर बैठकर यह म त्र एक हजार जपनेसे ६ वर्षमे सिद्धि होती है,

विद्राविणीसिद्धि ।

मन्त्र । हूँ यँ वँ लँ वँ देवि रुद्रप्रिये विद्राविणि ज्वल ज्वल साधय साधय कुलेश्वरि स्वाहा । रणमृतास्थीनि गले धृत्वा प्रान्तरे जपेत् । द्वादशलक्षजपेन सिद्धि ॥

जो मनुष्य युद्धमे मरगया है, उसकी हड्डी गलेम धारण पूर्वक प्रा तरमे रात्रिके समय बैठकर जप करना चाहिये । जिस दिन बारह लक्ष जप पूर्ण हो, उसी दिन सिद्धि प्राप्त होती है ।

डाकिनीसिद्धि ।

डं डां डिं डीं द्रीं धूँ धूँ चालिनि मालिनि डाकिनि सर्वसिद्धिं प्रयच्छ हुँ फट् स्वाहा ।
शाल्मलीतरौ स्थित्वा ऊर्द्ध्वबाहुना रात्रौ जपेत् ।
एवं षड्वर्षेण सिद्धिः ॥

रात्रिके समय शाल्मलीवृक्षपर चढकर ऊर्ध्वबाहु होकर मन्त्र जपना चाहिये । समस्त रात्रि मन्त्र जपे । छः वर्षपर्यन्त इस प्रकार करनेसे डाकिनीसिद्धि होती है । डाकिनी सिद्ध होनेपर अद्भुत सामर्थ्य उत्पन्न होती है ।

भूतसिद्धिप्रेतसिद्धिः ।

मन्त्र । ॐ ह्रौं क्रौं क्रौं क्रुँ फट् फट् कट् कट् ह्रीं ह्रीं भूत प्रेत भूतिनि प्रेतिनि आगच्छ आगच्छ ह्रौं ह्रीं ठः ठः ।

इस मन्त्रसे भूत भूतिनी प्रेत और प्रेतिनी सिद्धि होती है ।

वटवृक्षतले रात्रौ जपेदष्टसहस्रकम् ।
धूपञ्च गुग्गुलुं दत्त्वा पुना रात्रौ जपेन्मनुम् ॥

अर्द्धरात्रिगते चैव साध्यश्चागच्छति ध्रुवम् ।
दद्याद्गन्धोदकेनार्घ्यं तुष्टो भवति तत्क्षणात् ॥
वरं दत्त्वा ततः सोऽपि चिरवश्यो भवेत्सदा ॥

रात्रिकालमें निर्जन वटवृक्षके नीचे बैठकर यह मन्त्र आठ हजार जपना चाहिये। दूसरे दिन धूप और गूगलसे पूजा करके फिर रात्रिमें जप करे। आधी रात बीतनेपर भूत, प्रेत, भूतिनी वा प्रेतिनी उपस्थित होगी तब साधक गंध और अर्घ्य द्वारा उनकी पूजा करे ऐसा होनेसे भूतिनी साधकको वर प्रदान करती है और सदा साधकके वशमे रहती है।

पिशाचपिशाचीसिद्धि ।

मन्त्र । ॐ प्रथ प्रथ फट्ट फट्ट हुँ हुँ तर्ज तर्ज विजय विजय जय जय प्रति हत कटु कटु विसुर विसुर स्फुर स्फुर पिशाचसाधकस्य मे वश आनय आनय पच पच चल चल स्वाहा ।

मन्त्र । ॐ फट्ट फट्ट हुँ हुँ अ भो भो पिशाचि भिन्द भिन्द छिन्द छिन्द दह दह दह पच पच मर्दय मर्दय पेषय पेषय धून धून महासुरपूजिते

हुँ ठ्रूं स्वाहा । दशलक्षजपेन सिद्धि । रात्रौ उच्छिष्टमुखेन श्मशाने जपेत् ।

प्रथम मन्त्रसे पिशाच और दूसरे मन्त्रसे पिशाचीकी साधना करनी चाहिये। रात्रिके समय उच्छिष्ट मुखसे श्मशानमे बैठकर जप करे । दश लाख जपनेसे सिद्धि होती है। जपके समय यदि कोई दूसरा मनुष्य देखले अथवा यदि साधक किसीको देखे तो जप निष्फल हो जाता है।

मृत्युकालज्ञानम् ।

द्वादशदलचक्रस्थ मृत्युकालश्च वीक्षितम् ।
चैत्रादिमाससंख्यानि लिख्यते द्वादशे दले ॥
मेषादिराशय स्थाप्या सूर्यादिर्लिख्यते ग्रह ।
जन्मऋक्ष जन्मराशि वीक्ष्यते मृत्युकालके ॥
शनिभौमकेतुराहुराशिविद्धे तु कष्टदा ।
ऋक्षविद्ध राशिविद्धे कालमृत्युर्न संशय ॥
सूर्यवेधे मनस्ताप बुधे सौख्य प्रवर्त्तते ।
यात्रायां तीर्थजीवे च चन्द्रे स्त्रीसुखसम्पद ॥
भृगुवेधे राज्यलाभं मासे मासे विचारयेत् ।

वर्षं द्वादशनामानि मृत्युकाले वदन्ति च ।

एक द्वादशदलचक्र अंकित करके मृत्युकाल देखे। इस चक्रके बारह दलमें बारह राशि और चैत इत्यादि बारह महीने एवं सूर्यादि ग्रह लिखे। फिर जन्मनक्षत्र और जन्मकी राशिका वेध विचारकर मृत्युकालादिका स्थिर करे। शनि, मंगल राहु वा केतुके साथ यदि जन्मकी राशिका वेध हो तो मनुष्यका कष्ट होता है। राशिवेध और नक्षत्रवेध होनेसे निश्चय मृत्यु होती है। सूर्यके साथ उक्त शनि इत्यादिका वेध होनेपर मनस्ताप बुधके साथ वेध होनेसे सुख, चन्द्रके साथ होनेसे सुख सम्पत्ति और शुक्रके साथ वेध होनेसे राज्य मिलता है।

आत्मरक्षा।

मन्त्र। ॐ आँ ह्रीँ क्लीँ श्रीँ द्रूँ द्रूँ हुँ फट्। रक्ष रक्ष कालिके कुण्डलिके त्रिपुटे अस्त्र-शस्त्र-मार्जार-व्याघ्र कुञ्जरदंष्ट्रिभ्यो विषेभ्यो शत्रुभ्यो सर्वेभ्यो द्रीं द्रूँ स्वाहा। आषण्मासाज्जपान्मन्त्र-सिद्धिः। प्रत्यहम् अयुतं जपेत्। ततः प्रतिदिनं त्रिसन्ध्यं वारत्रयं पठित्वा वक्षसि फूत्कारत्रयं दद्यात्

ऊपर लिखा मन्त्र प्रति दिन दश हजार जपना चाहिये।

है मास जपनेसेही मन्त्रकी सिद्धि होती है । फिर नित्य तीनो सध्यामे तीन तीन वार छातीमे फूक मारे । इस प्रकार करनेपर कुत्ते, व्याघ्र, बिल्ली, दंष्ट्रा (दाढोवाले जन्तु) श्वापद (हिंसकजन्तु) शत्रु और अस्त्र शस्त्र सबसे अपनी रक्षा होती है।

वृश्चिकदूरीकरणम् ।

गृहीत्वा शुभनक्षत्रे अपामार्गस्य मूलकम् ।
धारयेद्दक्षिणे कर्णे वृश्चिकानां भय न हि ॥

शुभनक्षत्रमें चिरचिरेकी जड लाकर दाहिने कानमे धारण करनेसे वृश्चिक (बीछु) का भय दूर होता है ।

सर्पदूरीकरणम् ।

गृहीत्वा पुष्यनक्षत्रे अमृतामूलक हरेत् ।
तन्मालां धारयेत्कण्ठे सर्पविषभय न हि ॥

रविवारयुक्त पुष्यनक्षत्रमें अमृता (गिलोय) की जड लाकर उसकी माला गलेमें धारण करनेसे सर्पका भय दूर होता है । उसके घर वा निकट सर्प नहीं आता ।

मक्षिकादूरीकरणम् ।

तक्रपिष्टेन तालेन क्षिपेत्पुत्तलिकाकृताम् ।
तामाघ्राय गृहाद्यान्ति मक्षिका नात्र सशयः ॥

मद्यके साथ हरताल पीसकर उसके द्वारा एक मक्खीकी पुतली बनावे। यह पुतली घरमें डालनेसे उस पुतलीके सूंघनेपर घरसे मक्षिका (मक्खी) दूर होती है।

मूषकदूरीकरणम्।

धुस्तूरबीजचूर्णञ्च विषञ्च पेषित तिलम्।
तैरेवविषपाषाणा मीनतैलेन पेषितम्॥
वटिका स्थापयेद्गेहे जल रात्रौ निरुद्धयेत्।
भक्षणात्पञ्चतां यान्ति तृष्णार्त्ता मूषिका ध्रुवम्॥

धतूरेके बीजाका चूर्ण, विष, तिल, विषपाषाण और मछलीका तेल यह सब पदार्थ एकत्र पीसकर गोलिया बना लेवे। यह गोली घरमे रखकर घरके सब जलपात्र (बरतन) ढककर रक्खे। इस गोलीको खाकर चूहे मर जाते है, इसमे स दहे नहीं।

मशकदूरीकरणम्।

गुडश्रीवासभल्लातविडङ्गत्रिफलायुतम्।
लाक्षारसोऽर्कपत्रञ्च धूपे मशकमत्कुणान्॥
नाशयेन्नात्र सन्देह सर्पमूषिकवृश्चिकान्॥

गुड, श्रीवास (बिरोजा), भिलावा, वायविडग, त्रिफला, लाक्षा आकके पत्ते यह सब पदार्थ एकत्र कर धूप देनेसे

मच्छर मत्कुण (खटमल), सर्प, चूसे और बीछू इत्यादि दूर होते है ।

भूतावेशनिवारण बालग्रहदूरीकरण च ।

शिरीषपत्रपुष्पञ्च रविवारे समुद्धरेत् ।
घूकविष्ठा गृहीत्वा तु उष्ट्ररोम्णा तु संयुताम् ॥
शुनो विष्ठासमायुक्त मार्जारस्यैव संयुतम् ।
गोमयञ्चैव संयुक्त गन्धक संयुत ततः ॥
श्वेतगुञ्जासमायुक्त कटुतैलेन पाचयेत् ।
धूप दत्त्वा जपेन्मंत्र भूतबाधा विनश्यति ॥
बालग्रहा राक्षसाश्च बालानाञ्च दुर्वायव ।
प्रेतिनी योगिनी चैव धूप दृष्ट्वा पलायते ॥
मन्त्रस्तु । ॐ नम श्मशानवासिने भूतादिपलायन कुरु कुरु स्वाहा । लक्षजपात्सिद्धि ।

रविवारके दिन सिरसके वृक्षके पत्ते और पुष्प संग्रह करके उसके साथ उल्लूका मल, ऊटके रोम कुत्तेकी विष्ठा, बिल्लीकी विष्ठा, गोबर, गंधक और सफेद चोटली मिलाकर इनके सहित तैल पाक करे । तैल पकानेके समय उपरोक्त (ॐनम)

इत्यादि मन्त्र लगातार पढना चाहिये । इस तेलकी धूप देवे । जब धूप दे तब वह धूप उक्त मन्त्रसे एक सौ आठ वार अभिमन्त्रित करलेनी चाहिये । धूप प्रदान करनेके पीछेभी उक्त मन्त्र एक सौ आठ बार जपना चाहिये । इस प्रकार करनेसे भूतावेश, बालग्रह एव राक्षस, भूतिनी, डाकिनी, प्रेतिनी वैताल, योगिनी और बालकको हवा लगना इत्यादि सब विघ्न दूर होते है । मन्त्र सबसे प्रथम एक लाख जप कर सिद्ध करलेवे ।

सुखप्रसवमन्त्र ।

ॐ मन्मथ मन्मथ वाहि वाहि लम्बोदर मुञ्च मुञ्च स्वाहा ।

ॐ मुक्ता पाशा विपाशाश्च मुक्ता सूर्यण रश्मय । मुक्त सर्वभयाद्गर्भ एह्येहि मारचि मारचि स्वाहा एतदन्यतरेणाष्टवार जलमभिमन्त्र्य पेयम् ।

"ॐ मन्मथ" इत्यादि और "ॐ मुक्ता" इत्यादि इन दो मन्त्रोमे जिस किसी एक मन्त्रके द्वारा आठ वार जलअभिमन्त्रित करके पीनेसे गर्भवती स्त्री तत्काल सुखपूर्वक प्रसव करती है ।

अदृश्य होना।

अर्कशाल्मलिकार्पासपट्टपङ्कजतन्तुभि ।
पञ्चाभिर्वर्त्तिकाभिश्च नृकपालेसु पञ्चसु ॥
नरतैलेन दीपा स्यु कज्जल नृकपालके ।
आहयेत्पञ्चभिर्यत्नात्पूर्ववच्च शिवालये ॥
पञ्चस्थानीयजातन्तु एकीकुर्याच्च त पुन ।
मन्त्रयित्वाञ्जयेन्नेत्रे देवैरपि न दृश्यते ।
मन्त्रस्तु। ॐ हुँ फट्ट कालि कालि मांसशोणित,
खादय खादय देवि मा पश्यतु मानुषेति हुँ फट्ट।
स्वाहेति मन्त्रेणाष्टोत्तरसहस्राभिमन्त्रितं कृत्वा
तत्कज्जल नेत्रे दत्त्वा त्रैलोक्याहश्यो भवति ॥

आक शाल्मली, (सेमल), कपास, पट्ट (रेशम) और पट्टसूत्रकी बत्ती द्वारा पाच मनुष्यकी खोपडीम मनुष्यतैलके द्वारा पाच दीपक बालकर उन पाच दीपकाकी लोअपर पाच प्रकारका काजल पारे। किसी शिवालयमें यह कार्य करना

चाहिये। फिर यह पाच प्रकारका काजल एकत्र और (ॐ हूँ फट् कालि) इत्यादि म त्रसे अष्टोत्तर सहस्र बार अभिम त्रित करके वह काजल नत्रामे आँजे । ऐसा करनेपर वह मनुष्य देवताओंसेभी अदृश्य हो सकता है।

× जलोपरि भ्रमणम् ।

ॐ रमाय रामाय महेशाय महेशिन्यै इन्द्राय इन्द्राण्यै ब्रह्मणे ब्रह्माण्यै नमो नम रुद्राय रुद्राण्यै तोय स्तम्भय वरुण स्तभय शोषय गच्छ गच्छ पादुका देहि देहि स्वाहा ॥

प्रथम कृष्णपक्षकी अष्टमी तिथिम रात्रिके समय नदीतीरस्थ श्मशानभूमिमे जाकर षोडशोपचारसे नारायण, लक्ष्मी, शिव, दुर्गा, इद्र, शची, ब्रह्मा, ब्रह्माणि, रुद्र, रुद्राणि इन सब देवताओकी पूजा करके उपरोक्त म त्र एक हजार आठ बार जप करे एक वषतक प्रतिकृष्णाष्टमी तिथिमे इसप्रकार अनुष्ठान करने पर म त्रकी सिद्धि हाती है। फिर जब इच्छा हो तभी यह म त्र एक सौ आठ बार जपकर सहजमेंही जलके ऊपर भ्रमण करसकता है और कभी जलमें नहीं डूबता ।

मनस्कामसिद्धि ।

स्फ्रें स्फ्रें हूँ दूँ दूँ ह्रीं क्लीं हूँ हुँ सां सीं सूँ सैं सौं स छां छीं छूँ छैं छ ह्रीं फट् स्वाहा ।

संकल्पपूर्वक नित्य एक सो आठ बार एक वर्षतक यह मन्त्र जपनेसे मनस्कामनाकी सिद्धि होती है ।

परिशिष्टम् ।

वशीकरणम् ।

कृताञ्जलि शिखिशिखाविभीनागिरिकार्णिका ।
चाण्डालीसहिता पिष्ट्वा पट्ट क्षीरपरिप्लुता ॥
तेन संलिप्य पङ्केन पट्टवस्त्रस्य वर्तिकाम् ।
कारयित्वाब्जसूत्रेण पूर्णगर्भां सुवेष्टिताम् ॥
एकवर्णागवीदुग्धकृताज्यदीपपूरितम् ।
कज्जलं ऋजुके कार्यं कज्जलं नरसंकुले ॥
सम्पूज्य भैरवं देवं चतुर्दश्यां निशागमे ।

---

१ विविध मन्त्रप्रकरणमें जो जो विषय लिखे गये हैं उन सब क्रियाओंका अनुष्ठान करनेके प्रथमही यह मन्त्र सिद्ध करलेना चाहिये ।

कज्जल पातितं ग्राह्य तेन वश्य जगद्भवेत् ॥
नरच वनितांचैव यमिच्छति नरोत्तमम् ।
अत परतर वश्य न भूत न भविष्यति ॥
भाषित भैरवे तन्त्रे गोपनीयं प्रयत्नत ।
क्रूरे च चुम्बके दुष्टे निन्दके चपलेष्वपि ॥
अस्य वश्यप्रभाव हि वर्णितु न च शक्यते ।
देवदेवेन देवेभ्यो वशीकरणमुत्तमम् ॥
एतद्योगप्रभावेण ब्रह्माद्या मुनय सुरा ॥

अब वशीकरणकी पद्धति कही जाती है। इस क्रियाके जान लेतेही नर और नारी दोनोको वशीभूत किया जा सकता है। लज्जालुलता (छुइमुइ), अपामार्गकी जटा (चिरचिरेकी जड़), बहेडा, अपराजिता (विष्णुक्र ता) और चाण्डाली (लताविशेष) इन सबको एकत्र दूधके साथ पीसकर कर्दमवत् करे फिर इस कर्दम (कीच) द्वारा एक पट्टवस्त्रपर लेपकर उसकी बत्ती बनावे। फिर उसको पद्मनालके मध्यगत सूत्रद्वारा वेष्टन कर रक्खे। फिर एकवर्ण गायके दूधका घृत करके उस घीमे पहिले करी हुइ बत्ती गीली करे। फिर इस बत्तीको जला कर उसकी लोअसे काजल पारे। चतुर्दशीकी रात्रिमे भैरवकी

पूजा करके फिर काजल पारना चाहिये । इस काजलसे स्त्री, पुरुषही नहीं, वरन् जिसकी अभिलाषा हो उसीको वशीभूत किया जासकता है । ऐसी वशीकरणकी प्रणाली न कभी आगे थी और न अब होगी । भैरवतन्त्रमें स्वयं महादेवजीने यह विधि कही है । इसको यत्न सहित गुप्त रक्खे । क्रूर, अल्पविद्या, निन्दक और चपल इन सब पुरुषोंके निकट यह वशीकरण प्रणाली वर्णन न करे । देवन्व श्रीमहादेवजीने देवताओंके निकट यह वशीकरण कहा है ।

अन्यां वक्ष्ये महाविद्या मोहिनी वश्यकारिणीम् ।
यस्या प्रभावमात्रेण वशीकुर्याज्जन नर ॥
तार प्रथमसुद्धृत्य मायाबीजमनन्तरम् ।
मोहिनीपदमादाय शेषे पावकवल्लभाम् ॥
ज्ञात्वा मन्त्रमिम मन्त्री मन्त्र पठति सिद्धिदम् ।
अनेन मन्त्रराजेन सम्पूज्य जापित यदा ॥
दीयते च जल पुष्प दुकूलमुत्तम फलम् ॥
अष्टोत्तरशत जप्त्वा पाणौ यस्य प्रदीयते ॥
ते सर्वे वशमायान्ति नात्र कार्या विचारणा ॥

अब अन्य प्रकार वशीकरण कहा जाता है। इस वशीकरणके प्रभावसे तीनो जगत् वशीभूत होते हे (ॐ ह्रीं मोहिना स्वाहा) साधक यह मत्र जपे। मन्त्रसिद्धि होनेपर जल पुष्प वस्त्र अथवा किसी भांतिका उत्तम फल उक्त मन्त्रमे एकसौ आठ बार अभिमन्त्रित करके जिसके हाथमे दियाजाय, वह मनुष्य निःसन्देह वशीभूत होता है।

तार चिटिद्वय पश्चाच्चाण्डाली तदनन्तरम् ।
महापदाभ्यां तां ब्रूयादमुकं मे ततः परम् ॥
वशमानय ठद्वन्द्व चिटिमन्त्र उदाहृतः ।
सप्तभिर्दिवसैर्भूपान्वशयेद्विधिनाऽमुना ॥
विलिख्य तालपत्रे तं साध्यनामविगर्भितम् ।
निक्षिप्य क्षीरसमिश्रे जले तत्क्वाथयेन्निशि ॥
वश्यो भवति साध्यस्तु नात्र कार्या विचारणा ॥

(ॐ चिटि चिटि चाण्डाली महाचाण्डाली अमुक मे वसमानय स्वाहा) यह मन्त्र सात दिन जपनेसे राजाको वशीभूत करसकता है और यह मन्त्र तालपत्रपर लिखकर इस तालपत्रको दुग्ध मिले जलमे डालकर पकावे। इस मन्त्रमे जिसका नाम लिखरहा होगा वह मनुष्य निःसन्देह वशीभूत होगा। मतान्तरमे

लिखा है कि, उक्त मन्त्र बेलके कांटेसे तालपत्रपर दूधमे लिखकर पकावे और तालपत्र तीन दिनतक कीचडमे रक्खे । तीन दिन पीछे यह तालपत्र निकालकर दुर्गोत्सवमण्डपके द्वारमे गाडकर रक्खे । इस प्रकार करनेसे निःसंदेह वशीकरण होता है ।

तालपत्रे लिखित्वैन भद्रकालीगृहे खनेत् ।
वश्याय सर्वजन्तूना प्रयोगोऽयमुदाहृत ॥

(ॐ चिटि चिटि) इत्यादि मन्त्र बलके कांटेसे तालपत्रपर लिखे । फिर भद्रकालीकी पूजा करके उसी घरमें यह तालपत्र गाडकर रक्खे इससे सब प्राणियोको वशीभूत कर सकता है ।

मूर्ध्नि भाले कामकला पतन्ती बिन्दुधारणात् ।
योनिमुद्राप्रयोगेण करोति वशग जगत् ॥

मस्तक और कपालमे कामकला मन्त्र जपकर बिंदुधारणपूर्वक योनिमुद्राप्रयोग करनेपर तीना जगत्को वशम कर सकताहै ।

रेफहुङ्कारयोर्मध्ये सर्वलोक तत परम् ॥
वशमानय ठद्वन्द्व पूजा जपश्च साधक ॥

(र सर्वलोकवशमानय स्वाहा) इस मन्त्रसे जप और उक्त मन्त्रसे पूजा करनेपर अभिलषित व्यक्तिको वशीभूत कर सकता है ।

राजमुखिपदाद्राजाभिमुखिवश्यपूर्वमुखि ।
ततश्च भुवनेशीश्रीकामान्देवि देवि च ॥
तदन्ते च महादेवि पद पदमत परम् ।
देवाधिदेवीति सर्वजनस्य मुख वश्य कुरु द्विठ ॥
प्रणवादिरय मन्त्र श्रीवश्य सपदावह ॥
ॐ राजमुखि राजाभिमुखि वश्यमुखि ह्री श्री
क्ली देवि देवि महादेवि देवाधिदेवि सर्वजनस्य
मुख वश्य कुरु स्वाहा ।
मायाहृदोरथान्ते च ब्रह्मश्रीराजिते तत ।
प्रोक्त्वा राजपूजितेऽर्णाञ्जये च विजयेऽपि च ॥
गौरि गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करीति च । सर्वलो-
कान्ते वशङ्करि च सर्वस्त्रीपुरुषवशकरि सुदुर्वो-
राक्षराणि वीप्सत । माया द्विठान्तको मनुरेका-
धिकषष्टिवर्णक प्रोक्त । मन्त्रो यथा । ह्रीँ नमो
ब्रह्मश्रीराजिते राजपूजिते जये विजये गौरि
गान्धारि त्रिभुवनवशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि सर्व

स्त्रीपुरुषवशकारि सुदुर्घोर सुदुर्घोर ह्रीँ स्वाहा ।
अयुत जपेत् । जुहुयाद् घृतसम्प्लुतै पायसैर्द
शांशेन । आराधयेत्तदङ्गैर्मातृभिर्दिशोऽधिपैर्नि-
शितमना ।तिलतण्डुलकैर्लोमै स्वादुयुक्तै फलै-
श्च मधुरतरै । आज्यैररुणकुवलयैस्त्रिदिन हवन
क्रियासु वशकरीम् । नित्यमादित्य गतां देवीं
प्रतिपद्य तन्मुखो जप्यते । अष्टोत्तरशतकस्मा-
द्वशीकरोत्यचिरात् । वर्णादर्वाङ् मन्त्री प्रयो-
जयेत् । साध्यनामकर्मयुत प्रजपेद्वा हवनविधा
वांछितसिद्धिप्रदस्तदा मन्त्रा ऋषिरस्याजो
निवृट्छन्दो गौरी च देवता प्रोक्ता । स चतुर्दश-
भिस्ततो दशभिरष्टभिस्ततोऽष्टभिर्दशभिरेकाद-
शभिर्मन्त्राक्षरै क्रमादुच्यते षडङ्गविधि ।

ध्यानम् ।

अमलशशिविराजन्मौलिराबद्धपाशा-
ङ्कुशरुचिरकराब्जा बन्धुजीवारुणाङ्गी ।

अमरनिकरवन्द्या त्रीक्षणा शोणवर्णा ।
शुककुसुमयुता स्यात्सम्पदे पार्वती व ॥

ॐ राजमुखि इत्यादि मुख वश्य कुरु कुरु स्वाहा वह म त्र एव ह्रीं नमो ब्रह्मश्री राजिते इत्यादि सुदुर्घोर ह्रीं यह मन्त्र दश हजार जप करे । फिर घृतसयुक्त खीरद्वारा जपका दशांश होम करना चाहिये । होमके अ तमे अगदेवता, अष्टमातृका और दशदिक्पालोकी पूजा करके पुनर्वार स्वादयुक्त तिलत ण्डुल, मीठे फल और घृतयुक्त लाल कमलद्वारा होम करे । इस प्रकार तीन दिन होम करके सूर्यमण्डलाधिष्ठात्री देवताकी आराधना पूर्वक सूयके सामने मुख करके एकसौ आठ बार जप करना चाहिये । ऐसा होनेसे बहुत शीघ्र वशीकरण सिद्ध होता है । मन्त्रम अभिलाषित व्यक्तिका नाम लिखकर जप और होम करनेपर वाञ्छितार्थसिद्धि होती है। इस म त्रके अज (ब्रह्मा) ऋषि,निवृत्त छ द और गौरी देवता है कराङ्ग यास यह है ह्रीं नमो ब्रह्मश्रीराजिते ाजपूजिते अंगुष्ठाभ्या नम । जये विजये गौरि गा धारि तर्जनीभ्या स्वाहा । त्रिभुनशकरि मध्यमाभ्य वषट् सर्वलोकवशकरि अनामिकाभ्या हुँ सर्वस्त्री- पुरुषवशकारि कनिष्ठाभ्या वौषट् सुदुर्घोर सुदुर्घोर ह्रीं स्वाहा करतलपृष्ठाभ्या फट् । इसी प्रकार हृदयादिमे न्यास करे । देवताका ध्यान मूलमे लिखा है वहा देखो ।

मदमदपदमादौ मादयेति द्विवार ।
तदनु च पठनीय ह्री पद तत्र पश्चात् ॥
वशयपदयुता स्यान्नामरूपादिसञ्ज्ञा ।
भवति मदनमन्त्र स्वाहया सयुतोऽयम् ॥
कनकरचितमूर्त्ति कुण्डलाकृष्टचापो ।
युवतिहृदयमध्ये निश्चलारोपिताक्ष ॥
इति मनसि मनोज चिन्तयन्यो जपस्थो ।
वशयति स समस्त भूतल मन्त्रसिद्ध ॥
शतशतपरिजापात्स्यादय सिद्धिदाता ।
दशशतकुसुमाना लोहिताना च दानात् ॥
इति तु सकलकार्य वामहस्तेन कुर्या-
दुपदिशति समस्त ज्योतिरीश समन्तात् ॥
मद मद मादय ह्री वशय अमुक स्वाहा ॥

मद मद मादय मादय ह्री वशय अमुक स्वाहा । इसकानाम मदनमत्र है मन्नकी आकृती इस प्रकार है सुवर्णरचित शरीर कानोंतक खिंचाहुआ धनुष और युवतीगणके हृदयम निश्चल

अक्षि अरोपित कर रहा है। जो पुरुष इस प्रकार मदनमूर्तिकी मनमें चिन्ता करके उक्त मदनमन्त्र दश हजार जपता है वह पुरुष मन्त्रसिद्धिके बलसे समस्त भूतलको वशीभूत करसकता है। दश हजार जपकर दश हजार लाल पुष्प प्रदान करनेसे मन्त्र सिद्ध होता है। इस क्रियाका सब कार्य बाये हाथसे करना चाहिये।

चामुण्डे प्रथम जयेति कथित सम्बोधने मोहये
ज्ञातव्य वशमानयेत्यपि पद साध्यद्वितीयान्वितम्।
स्वाहान्त प्रणवादिरेष कथितैस्तत्त्वैर्महामोहने
यन्मन्त्र कविरात्मसेवितपदो नास्माद्द्वितीयोत्तरी॥

ध्यानम्।

दंष्ट्राकोटिविशङ्कटा सुवदना सान्द्रान्धकारे स्थिता
खड्गासिनिगूढदक्षिणकरा वामेन पाश शिर।
श्यामा पिङ्गलमूर्धजाभयकरी शार्दूलचर्मावृता
चामुण्डाशववाहिनी जपविधौ ध्येया सदा साधकै॥
लक्ष जप्त्वा दशांश शुक्तरुकुसुमैर्वह्निमध्ये
च होम.॥ विधिना सिद्धि ददाति।

ॐ चामुण्डे जय चामुण्डे मोहय वशमानय अमुक स्वाहा ॥

ॐ चामुण्डे जय चामुण्ड मोहय वशमानय अमुक स्वाहा । यह म न्त्र एक लाख जपकर गिग्सके वृक्षकी समिधासे दश हजार होम करना चाहिये। देवताका ध्यान मूलम लिखा है विधिपूर्वक देवताकी पूजा करके म न्त्र जपनेसे म न्त्रसिद्धि हाती ह । इस म न्त्रकी सिद्धि होनेपर वशीकरण होता है ।

ॐ नम॰ कामाय सर्वजनप्रियाय सर्वजनसम्मोहनाय ज्वल ज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय सर्वजनस्य हृदय मम वश कुरु कुरु स्वाहा ।
एतन्मन्त्रजपादेव वशीभवति मानव ।

ॐ नम कामाय सर्वजनप्रियाय इत्यादि म न्त्र जपनेसे वशीकरण होता है ।

ॐ नमो भगवति सूचि चाण्डालिनि नम स्वाहा। एतन्मन्त्रेण मधूच्छिष्टस्य पुत्तलिकां कृताञ्जलि कृतयुग्मपादां अङ्गप्रत्यङ्गसहितां कृत्वा तत्र

साध्यस्य प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा एतन्मन्त्र जपन् अङ्गारेषु पुत्तलिका प्रतापयेत् । तत साध्यो वश्यो भवति ॥

(ॐ नमो भगवती सूचि चाण्डालिनि नम स्वाहा) इस मन्त्रसे मधूच्छिष्ट (मोम) द्वारा अभिलाषित व्यक्तिकी एक प्रतिमूर्ति बनानी चाहिये । इस मूर्तिको कृताञ्जलि, युक्तपाद और अगप्रत्यङ्गसाहित बनाकर उसमे अभिलाषित व्यक्तिकी प्राणप्रतिष्ठा करे । फिर इस पुतलीके ऊपर (ॐ नमो भगवति) इत्यादि मन्त्र जपकर अँगारोकी आगमे तपावे । इससे अभिलाषित व्यक्ति वशीभूत होगा ।

इति वशीकरणम् ।

अथ गुप्तमन्त्र ।

शूकरशब्दज्ञानम् ।

पङ्कभूमिं समासाद्य तार घुरुघुरुद्वयम् ।
घुतघुत्स्वाहान्तमन्त्रोऽय जपेत्सप्तायुत बुधः ॥
घोणिरापूरयेद्यत्नात्तत· सिध्यनि नान्यथा ॥

अब शूकर शब्दसाधन कहा जाता है । कीचडके स्थानमें बैठकर (ॐ घुरु घुरु घुत् घुत् स्वाहा) यह मन्त्र सात अयुत संख्यक जपना चाहिये । इस प्रकार करनेसे वह मनुष्य शूकरका शब्द समझ सकता है और शूकरके साथ बातचीतभी कर सकता है ।

श्वशब्दज्ञानम् ।

निम्बमूल समासाद्य पूजयेद्भोजनै सताम् ।
धूपदीपैश्च नैवेद्यैर्बलिभि परमोत्तमै ॥
पूजयित्वा निशाभागे जपेदष्टायुत बुध ।
स्फि स्फि कालिवह्निकान्ता विद्यय परमोत्तमा ॥
तत सिद्धो महेशानि सर्व कुक्कुरभाषितम् ।
बुध्येद्देवि तदा सर्व तदर्थ च यथातथम् ॥

अब कुक्कुर शब्द साधन कहा जाता है । नीमके वृक्षकी जडमें बैठकर धूप, दीप नैवेद्य, बलि और अन्यान्य मनोरम उपहार द्वारा पूजा करके आधीरातमें (स्फिं स्फिं काली स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार बार जपना चाहिये । हे महादेवि ! इस प्रकार मन्त्र सिद्ध करनेपर वह साधक सहजमेंही कुत्तेका शब्द समझ सकता है ।

खञ्जनसिद्धिः ।

तार तिमिरनाश्यै च मायाबीज महेश्वरि ।
पूजयेत्परमेशानि यत्नात्तिमिरनाशिनीम् ॥
तत खञ्जनसिद्धि स्यान्नात्र कार्या विचारणा ।
खञ्जनाना ततस्तस्य दर्शन च भवेत्सदा ॥
मूर्ध्नि नीते च तत्पक्षे देवैरपि न दृश्यते ।
जानीयात्खजन शब्द सर्वेषां प्रियतामियात् ॥

अब खञ्जन (ममोला) सिद्धि कहते है (ॐ तिमिरनाश्यै ह्रीं) इस मन्त्रसे तिमिरनाशिनीकी पूजा करे । इस प्रकार पूजा करके यह मन्त्र दश हजार जपना चाहिये । इस प्रकार करनेसेही खञ्जनसिद्धि होती है । इस साधनके द्वारा साधक सदा खञ्जनका दर्शन करता है । इस प्रकार सिद्ध होकर मस्तकम खञ्जनके परव रखनेसे साधक देवताओकाभी नही दीख सकता । यह साधक सबका प्रिय होता है और सहजमें ही खञ्जनका शब्द समझ सकता है ।

शृगालसाधनम् ।

अथ वक्ष्ये महेशानि फेरूणा शब्दमुत्तमम् ।
अमावस्यादिने फेरुरेकघातप्रहारित ॥

गतप्राणोऽथ मस्थाप्य भूतले दर्भसञ्चये ।
तमारुह्य महेशानि पूजयेत्फेरुक सुधी ॥
चतुर्भुजां विशालास्या निनस्त्रामुन्नतस्तनीम् ।
तप्तकाञ्चनसङ्काशा पद्म शङ्ख गदामसिम् ।
बिभ्रती मुक्तकेशीञ्च सर्वभीतिहरा पराम् ।
इति ध्यात्वा प्रयत्नेन गन्धपुष्पैर्मनोरमै ॥
सामिषै सुरम्यैश्चैव नैवेद्यैश्च मनोरमे ।
पूजयित्वा वरारोहे जपेत्प्रणवसपुटाम् ॥
काली माया तथा काली वह्निकान्तावधि प्रिये
प्रजपेदर्द्धरात्रौ च लक्षमान शुचि पुमान् ॥
फेरु स जीवति ततो दिव्य ह्युत्पद्यते तदा ।
वर वरय भो वत्स यत्ते मनसि वर्त्तते ॥
तत स साधकश्रेष्ठो वदेदेव मनोरमे ।
वशीभूत्वा सहस्राब्दास्त्व मां पालय सर्वदा ॥
एव प्रार्थ्य वर देवि पूजयेत्तां प्रयत्नत ।

रक्तशाकान्नपिष्टेन भोजनञ्च यथोचितम् ॥
तत स तिष्ठति सदा यावदायुर्न संशय ।
तच्छयनञ्च लक्षमानञ्च हन्यां सर्वान्क्षणेन तु ।
यद्यत्सप्रार्थयेन्मन्त्री सर्वमानीय यच्छति ।
सहस्र वा शत वापि धन दद्याद्दिने दिने ॥
इच्छाभोज्य महेशानि तथैव वरसुन्दरीम् ।
आनीय क्रोशलक्षस्थ जपे यच्छति पार्वति ॥
अनागतां तथा वार्त्ता ब्रूते षाण्मासिकीमपि ।
अतीता शतवर्षीयां ब्रूते नित्य महेश्वरि ॥
शिवाना सर्ववार्ताञ्च स्वय बोधयति ध्रुवम् ।
प्रत्यह प्रजपेत्ताञ्च यत्नेन सामिषान्नके ॥
स श्रुत्वा फेरुकाणाञ्च शब्द प्रणतिमाचरेत् ॥

अब शृगाल (गीदड) साधन कहा जाता है । हे महा
गवि ! अब शृगाल साधन कहता हू सुनो । अमावस्याके
दिन एक आघातसे एक गीदडको वध करे । फिर उस

शृगालको पृथ्वीमें कुशासनपर स्थापित करे और उसपर बैठकर देवीका ध्यान करना चाहिये । जिस प्रकार ध्यान करे वह मूलमे लिखा है इस प्रकार ध्यान करके यत्न और भक्तिसहित गध पुष्पादि और आमिषयुक्त नैवेद्य द्वारा उसका पूजा करे । फिर आधीरातके समय (ॐ क्रीं क्री क्रीं स्वाहा ॐ) यह म त्र एक लाख जपना चाहिये । इस प्रकार करनपर वह गीदड फिर जीवित हो जाता है और सु दर शब्दसे साधकको सम्बोधन करके कहता है कि, हे वत्स ! तुम अभिलाषित वर ग्रहण करो । तब साधक कहे कि, हे देवि ! तुम हजार वर्षतक वशीभूत रहकर मेरी रक्षा करो । इस प्रकार प्रार्थना करके लोहितवर्ण शाक, अन्न, पीठी और अ या य नानाप्रकारके यथोपयुक्त भोज्य पदार्थ द्वारा यत्न सहित उनकी पूजा करनी चाहिये । इस भाँति सिद्धि करन पर साधक जबतक प्राणधारण करता है, गीदड तबतक वशीभूत रहता है । साधक उस गीदडसे जो मागता है गीदड तत्काल वही प्रदान करता है । नित्य वह गीदड साधकको एक सा ना एक हजार रुपया देजाता है । हे देवि ! गीदड साधकक इस प्रकार वशम हो जाता है कि, यदि कोई सु दरी स्त्री अथवा कोई अभिलाषित भोज्य एक लाख कोस भी दूर हो,

तथापि वह साधकको लाकर दे देता है गये हुए स। वषमें जो घ॰नाए सघटित हुई हे और आगामा छे मासम जो घटनाय सघटित होगी सो सब वह गी॰ड साधकके कानमे कह देता है। उस गीदडके अनुग्रहसे साधक सब गीदडोकी बात चीत (बोली) समझ सकता है। प्रतिदिन म त्र जपपूर्वक यत्न सहित मासमिश्रित अन्न द्वारा गीदडकी पूजा और जप करे। जब किसी गीदडका शब्द सुनाई देवे तो साधक उसी समय उसको नमस्कार करे।

भेकसाधनम्।

नदीतीर समासाद्य स्नातो निर्मलवस्त्रधृक्।
प्रजापति वह्निसस्थ मनु स्वरसामन्वितम्।
त्रितय तत्ततो मे मे मन्त्रमेतदुदीरितम्।
जपेद्देवि सहस्रन्तु प्रत्यह सप्तवासरान्॥
ततो भेकवरे देवि सर्वतत्त्वार्थविद्भवेत्।
अतीतानागतां वार्त्तां ब्रूते चापि यथोचिताम्॥

अब भेक (मेंडक) साधक कहा जाता है। नदीके तट पर जाकर स्नानके पीछे साफ सुथरे वस्त्र धारण (क्रौं क्रौं में में यह मन्त्र सात दिनतक जप करना चाहिये। नित्य एक

हजार बार जप करे । इस प्रकार करनेपर वह साधक सिद्ध होता है और भेक (मैडक) का शब्द समझ सकता है । भेकके अनुग्रहसे साधक सवतत्त्व समझ सकता है और भूत भविष्यत् सब घटनाओंके कह देनेम समथ होना है ।

गोधासाधनम् ।

गोधया हतया वापि अथवा बिल्वमूलके ।
गोधिका खड्गहस्ताञ्च दृष्ट्वा शान्तिमुखी शिवाम् ॥
रक्तगम्भीरनयनां रक्तवर्णशिरोरुहाम् ।
जपेल्लक्षप्रमाणन्तु गोधिकासिद्धिहेतवे ॥
सिद्धायां गोधिकायाञ्च किं न सिध्यति पार्वती ।
इच्छारूप ददात्यन्न ददाति विपुल धनम् ॥
अतीतानागतां वार्ता वर्त्तमाना तथा प्रिये ।
रक्तिशक्ती यथास्याया यद्यत्पृच्छति सर्वदा ॥

अब गोधा (गोह) साधन कहा जाता है एक गोहको मार कर उसपर अथवा बेलवृक्षकी जडमें बैठकर (ॐ गोधिका खड्ग हस्ताञ्च) इत्यादिमूल लिखित मन्त्र एक लाख जपना

चाहिये इस प्रकार करनेसे गोह सिद्ध होती है इस प्रकार सिद्ध होनेपर जगत्में उस साधकको असाध्य कोई कार्य नहीं रहता । वह मनुष्य अपनी इच्छानुसार खाद्य और बहुतसे धनको प्राप्त करता है और भूत भविष्यत् सब बातोंको जान लेता है ।

गोसाधनम् ।

गवां मूत्रेण देवेशि यावकं पाचयेद्बुधः ।
तस्माद्दिनत्रयं वापि शुद्धवासोधरः पुमान् ॥
धराबीजद्वयं देवि जपेल्लक्षप्रमाणतः ॥
पूजयेत्तां सतीं देवीं नीलवर्णां मनोरमाम् ॥
द्विभुजां सर्वभूषाढ्यां नानालक्षणलक्षिताम् ।
एवं ध्यात्वा प्रयत्नेन पश्येदेनां न संशयः ॥
तस्या गेहे सदा देवि गवां वृद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
गवां च सर्ववार्त्तां च संप्रबुद्धेन्न संशयः ॥
तस्य गेहे स्थिरा लक्ष्मीर्जायते नात्र संशयः ॥

अब गोशब्दज्ञान कहा जाता है हे शङ्करि ! प्रथम तो गोमूत्रमें यावक प्रस्तुत करना चाहिये। जिस समय प्रथम साधन करे, उस दिनसे तीन दिनतक शुद्ध वस्त्र धारण पूर्वक प्रतिदिन क

क यह ..जक्षयात्मक मन्त्र एक लाख जपना चाहिये । फिर सतो देवीका ध्यान करके पूजा करनी चाहिये । देवीकी पूजा जिस प्रकार करे यह मलम लिखा है । इस प्रकार ध्यान पूजा और जप करनेपर देवी साधकको दर्शन देती है । जो पुरुष इस प्रकार सिद्ध होता है, देवी सदा उसके घरमे वास करती है और उस साधकके घरमे प्रतिदिन गायोकी वृद्धि होती है । इस नियमसे साधना करनेपर साधक सहजमेही सब गायोका शब्द समझ सकता है और उसके घरमे लक्ष्मी अचल होकर वास करती है ।

मृगशब्दज्ञानम् ।

बिल्वमूल समासाद्य देवि गन्धादिभि शुभै ।
पूजयेत्कमलां देवी नीलवस्त्राङ्गरागिणीम् ॥
द्विभुजामम्बुजद्वन्द्वधारिणी परमेश्वरीम् ।
एव ध्यात्वा प्रयत्नेन शुद्धासनगत पुमान् ॥
कमलां कमलां माया मायां वह्निवधून्तथा ।
जपेदष्टायुत देवि कमलासिद्धिहेतवे ॥
सिद्धायां कमलायान्तु मृगशब्द सुबुध्यते ।
धनञ्च विपुल देवि भवेत्तस्य गृहे ध्रुवम् ॥

रिपुर्न जायते तस्य जायन्ते सर्वसम्पदः ।
कामिनी वशमायाति यदि रम्भासमा भवेत् ॥

अब मृगशब्द ज्ञान कहा जाता है। बेलकी जडके नीचे जाकर गंध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य इत्यादि द्वारा नाना प्रकारके उपचारसे कमला (लक्ष्मी) की पूजा करनी चाहिये। जिस प्रकार ध्यान करे वह मूलमें लिखा है। इस प्रकार ध्यान करके विशुद्ध आसनपर बैठे और (श्रीं श्री ह्रीं ह्रीं स्वाहा) यह मंत्र दश हजार आठ बार जपे। इस प्रकार करनेसे लक्ष्मीदेवी सिद्ध होती है। लक्ष्मीके अनुग्रहसे साधक मृगका शब्द समझ सकता है। जो व्यक्ति इस प्रकार सिद्धि करता है उसके यहां धनकी अडचन नहीं होती, और उसके सब शत्रु ध्वंस होते है, उसके यहां अनेक प्रकारकी समृद्धि होती है और रंभानाम्नी स्वर्गवेश्याकी समानभी स्त्री हो वह उसके वशीभूत होती है।

मेषशब्दज्ञानम् ।

महागण्डारके देवि तस्य चर्मणि चार्द्रके ।
उपविश्य जपेद्विद्या कोङ्कणा कनकप्रभाम् ॥
रक्तवस्त्रपरीधाना नानामण्डनमण्डिताम् ।
द्विभुजां सुन्दरी देवी ध्यात्वा प्रयतमानस ॥

धरा॥ ॥य देवि कामबीजद्वय तथा ।
स्वहाता कथिता विद्या जपेदष्टायुत बुध ॥
तत सिध्यति देवेशि कोङ्कणा परमेश्वरी ।
शब्दं बुध्यति देवेशि मेषाणां तत्प्रसादत ॥

अब मेष (मड शब्द ज्ञान कहा जाता है । महागैडके गीले चर्मपर बैठकर कोङ्कणाविद्याकी आराधना करे कोङ्कणाका जिस प्रकार ध्यान करे, वह मूलमें लिखा है उस प्रकार ध्यान करके ल ल क्लीं क्ली स्वाहा। यह म त्र दश ह जार आठ बार जप करे । इसीका नाम कोङ्कणा विद्या है। इस प्रकार करनेसे कोङ्कणा देवी सिद्ध होती है । कोङ्कणाके प्रसादसे साधक मेषका शब्द समझ सकता है ।

क्कालसिद्धि ।

नदीतीर समासाद्य कृतस्नानो दिवा शुचि ।
कौलिकी पूजयेद्यत्नान्नानापुष्पैर्मनोरमै ॥
मद्यैर्मांसैर्लोहितैश्च नृत्यगीतादिभि स्वयम् ।
पीत्वा कुलरस यत्नात्कुल गत्वा प्रयत्नत ॥
काली माया बालिके च कङ्काली वह्निवल्लभा ।
एतन्मन्त्र महेशानि जपेद्दिशसहस्रकम् ॥

तदायाति महादेवी कङ्कालीमधिरुह्यमा ।
साधकाय वर दत्त्वा वाहनञ्च वरानने ॥
याति वा वाहनन्तस्य नाह्य वहति सर्वदा ।
हन्ति शत्रुसहस्राणि पृथ्वी भ्रमति तत्क्षणात् ॥
बलञ्च विपुल दद्यात्सत्य सत्य न सशय ।
तारो माया रमाबीज पशुनामाग्निवल्लभा ॥
*कालिकापूजन यस्तु पशुनाम्ना जपेन्मनुम् ।
सहस्र परमेशानि तस्य शब्द प्रबुध्यति ॥

अब ककाल सिद्धिका वर्णन किया जाता है । दिनमें नदीके तटपर जाय यथानियम स्नान करे । फिर विशुद्ध भावसे यत्नसहित दिव्य पुष्प, मद्य, मास, शोणित इत्यादि उपहार द्वारा नृत्य गीतादिके सहित कुलदेवीकी पूजा करनी चाहिये । फिर कुलरस पान करके (क्रीं क्रीं कालिके ककालि स्वाहा) यह मन्त्र दो हजार जपे । जप समाप्त होनेपर देवी साधकको दर्शन देती है और अभिलाषित वर तथा यानादि अर्पण करके चली जाती है । वही देवी साधकके सबशत्रुओंका नाश कर देती है और साधकको अमित बल देती है । इस प्रकार

करनेसही कंकाल (मुर्देका खाखड) का शब्द समझमें आसकता है। इसके अतिरिक्त (आम् ह्री श्री कंकालि स्वाहा) इस मन्त्रसे कालिकाकी पूजा करके एक हजार वार जप करनेपरही कंकालसिद्धि होती है।

काकशब्दज्ञानम्।

काकपुच्छं महेशानि मूर्ध्नि संधार्य यत्नतः ।
कालिबीजं तथा काकी कालीमन्त्रोऽयमुत्तमः ॥
चितायां षट्सहस्राणि होमपूजाविवर्जितम् ।
जपेन्निशीथे देवेशि ततः सिद्धो भवेन्नरः ॥
ततः प्रभृति देवेशि सार्वज्ञं तस्य जायते ।
काकशब्दप्रबोधेन सर्वं वक्ति यथातथम् ॥
चिरजीवी भवेन्मर्त्यो नात्र कार्या विचारणा ॥

अब काकशब्द साधन कहा जाता है। मस्तकपर कौवेकी पूंछ रखकर चिताासनमें बैठकर (क्रीं काकी) यह मन्त्र छः (६) हजार जपना चाहिये। इस साधनामें पूजा वा होमकी आवश्यकता नहीं है। निशीथ कालमेंही जप करनेसे सिद्धि हो जाती है। इस मन्त्रके सिद्ध होनेपर साधक सर्वज्ञता प्राप्त

करता है और वह कौवेका शब्द समझ सकता है। कौवेके शब्दका बोध होनेपर वह साधक सब विषय सत्य सत्य प्रकाशित कर सकता है। इस प्रकार काक सिद्ध होनेपर साधक चिरजीवी होता है, इसमें कुछभी सन्देह नहीं है।

जलचरपक्षिसिद्धि।

एतन्मंत्र महेशानि श्मशाने यदि वा जपे।
षट्सहस्रप्रमाणेन पूजयेदम्बुवासिनीम्॥
तदा वारिचराणां च पक्षिणां शब्दविद्भवेत्।
एतन्मन्त्र खञ्जनसाधनोक्तमन्त्रम्॥
स्मृतिमात्रेण देवेशि पक्षिण शतश क्षणात्।
तदाज्ञावशगा सर्वे पक्षिण पूर्ववर्त्तिन॥

अब जलचर पक्षीका साधन कहा जाता है श्मशानमें बैठकर खञ्जन साधनका मन्त्र ६ हजार जप कर अम्बुवासिनी देवीकी पूजा करनी चाहिये। इस प्रकार जप और पूजा करनेपर साधक सब प्रकारके जलचर पक्षीका स्वर समझ सकता है। साधक केवल मात्र स्मरण करतेही सब प्रकारके जलचर पक्षियोंको निकट बुलाने और किंकर (दासकी) समान वशीभूत रखनेमें समर्थ होता है।

मयूरसिद्धि ।

वटमूल समासाद्य निशीथे पूजयेच्छिवाम् ।
परां चण्डि सहास्यां विपुलकुचयुगा मुक्तकेशी
विवस्त्रा नानालङ्कारपूरां शशधरशकल बिभ्रती
भीमकान्ताम् । जप्यन्तीमद्रिकार्णं वरजघनभवा
क्षोणिचक्र समुद्र न्यक्कुर्वन्ती समन्तादवनिरि-
पुगणं चर्वयन्ती भजामि ॥
एव ध्यात्वा ततो देवी गन्धपुष्पैर्मनोरमै ।
मद्यैर्मांसैर्महाभोगै पूजयित्वा यथाविधि ॥
कालीबीज समुच्चार्य पुन कालीवरानने ।
ततो मयूरशब्दस्य मन्त्रोऽय बहुसिद्धिद ॥
-अष्टायुत जपेत्पश्येद्धुनेत्तावत्सहस्रकम् ।
निम्बकाष्ठैर्हरिद्राक्तैर्बिल्वपत्रैर्मनोहरै ॥
समायाति ततो देवि मयूरगणमण्डिता ।
वरं दत्त्वा साधकाय प्रयाति परमेश्वरि ॥
मयूरशब्दविद्भूत्वा सार्वज्ञ लभते ध्रुवम् ।

यथेच्छितोक्त क्षमते विष जारयितु क्षन ॥
रिपूणां जयमाप्नोति सत्य देवि वदामि ते ।
अनेनैव विधानेन बलि दत्त्वा स्वदेहजम् ॥
पक्षिणा शब्दमात्रेण मम तुल्यो न सशय ।
पूजयेत्कालिकां देवी मद्यैर्मांसैर्मनोहरै ॥
तत सिध्यति देवेशि कुलसिद्धि सदा भवेत् ।
कुलानां शब्दविद्भूत्वा सार्वज्ञ लभते ध्रुवम् ॥

अब मयूरसिद्धि कही जाती ह । वटवृक्षके नीचे बैठकर भगवतीकी पूजा करे । जिस प्रकार ध्यान करना चाहिये वह मूलमे लिखा है । इस भाँति ध्यान करके पूजा करे । उत्कृष्ट गध, पुष्प, मद्य और मास इत्यादि अनेक प्रकारके उपहारसे चण्डीकी अचना करे । पूजावसानमे क्री क्री मयूरीका यह मत्र अष्ट अयुत सख्यक जप और अष्ट महस्र होम करना चाहिय । हलदी, नीमकी लकडी अथवा उत्तम बेलपत्र द्वारा होम करना उचित है, इम प्रकार नियमसे जप होमादिक अनुष्ठान करनेपर चडिका देवी मोरोंसे घिरकर साधकके समीप आती है और साधकको अभिलाषित वर देकर चली

जाती है । इस प्रकारकी साधना द्वारा साधक मोरकी बोली समझ सकता है और उसको सर्वज्ञत्व लाभ होता है । वह साधक इच्छानुसार विषको जारण कर सकता है और उसके सब शत्रु निहत होते है । इस विधानानुसार अपने देहके रक्त द्वारा बलिप्रदानपूर्वक देवीकी पूजा करनेपर साधक पक्षीकी बोली समझ सकता है । मद्य मास इत्यादि उपचारसे कालिकाकी पूजा करके कुलसिद्धि होनेपरही कुलशब्द बोध और सर्वज्ञता प्राप्त होती है ।

विद्याधरसिद्धि ।

माया तार गौ गो चैव पतये तदनन्तरम् ।
एतन्मन्त्र महेशानि निशीथे नु जपेत्सुधी ॥
अयुत च जपेद्देवि तत सिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ।
गन्धर्वशब्दविद्भूत्वा बलवान्पुत्रवान्भवेत् ॥

अब विद्याधर सिद्धि कही जाती है । "ॐ ह्रीं गौ गोपतये" यह मन्त्र रात्रिकालमें जपना चाहिये दश हजार जप नाही उचित है इस मन्त्रके प्रसादसे गन्धर्वका शब्द समझ सकता है । इस साधनाके प्रसादसे साधक महाबलवान् और पुत्रवान् होता है ।

कङ्कशब्दज्ञानम् ।

काम केलिकेलिद्वन्द्व काममन्त्रेण उत्तम ।
जप्त्वा सप्तसहस्रन्तु कङ्कशब्दप्रबोधनम् ॥
कङ्कालशब्दविद्भूत्वा सर्वज्ञो भवति ध्रुवम् ।
कोलकोलवरारोहे वह्निकान्ता तत परम् ॥
बिल्वमूले महेशानि जपेदयुतमानन ।
पूजयेत्कालिका देवी तत सिद्धिर्भवेद् ध्रुवम् ॥
बकानां शब्दविद्भूत्वा सर्वज्ञो जायते नर ॥

अब बक (बगला) शब्दका ज्ञान कहा जाता है बक शा द्के साधनसे सर्वज्ञता प्राप्त होती है (क्लीं केलि केलि क्लीं) यह म त्र सात हजार जपनेसे बकसिद्धि होती है। ह साधक सहजमेही बगलेका श द समझसकता है। बेलके वृक्षकी जडमे बैठकर (ॐ कोल कोल स्वाहा) यही मन्त्र दश हजार जपकर फिर कालिकाकी पूजा करे । इस प्रकार करनेसेही बकसिद्धि होती है अर्थात् साधक बगलेकी बोली समझ सकता है और उसको सर्वज्ञता प्राप्त होती है ।

चटकशब्दज्ञानम् ।

चाटु चाटु महेशानि स्फे॑ पूर्वं परमेश्वरि ।

सप्तायुत जपेद्यत्नात्कालिकामपि पूजयेत् ॥
ततोबुध्यति देवेशि चटकाशब्दमुत्तमम् ॥

अब चटक (चिडा) शब्द साधन कहा जाता है। (स्फे चाटु चाटु) यह म त्र सात हजार जपकर कालिकाकी पूजा करनसे चटक शब्द सिद्ध हो सकता है इस प्रकार सिद्ध होनेपर साधक चिडेका शब्द समझ सकता है।

शुकसिद्धि ।

मायाबीज शुकद्वन्द्वं बोधयद्वितय तथा।
वह्निकान्तावधिर्मन्त्रो जपेदयुतमानत ॥
तत शुकस्य शब्दज्ञो नरो भवति नान्यथा।
शुकस्यापि प्रसादेन महासम्पत्तिमान्भवेत् ॥
एतन्मन्त्र महेशानि निशीथे त्यक्तभोजन ।
जपेदष्टसहस्रन्तु शारिकापददानत ॥
शारिकाशब्दविद्भूत्वा सर्वज्ञो जायते नर ॥

अब शुक (तोता) साधन कहा जाता है (ह्रीं शुक शुक बोधय बोधय स्वाहा) यह म त्र दश हजार जपनेपर सहज मेही तोतेकी बोली समझ सकता है। तोतेके प्रसादसे साधक

बहुतसे धनका अधिकारी होता है। उपवासी रहकर रात्रिका लमें यह मन्त्र जपना चाहिये। इस साधनाके प्रसादसे शारिका (मैना) का शब्दभी समझ सकता है।

सारसासिद्धि ।

धराबीज समुद्धृत्य मं मं बीज समुद्धरेत् ।
एतन्मन्त्र महेशानि सप्तायुतमतन्द्रित ॥
जपेत्कमलमध्ये तु हविष्याशी जितेन्द्रिय ।
तत सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥
सारसाना रव बुध्वा सर्वज्ञो जायते नर ॥

अब सारसकी सिद्धि कही जाती है। हविष्यान्न भोजन पूर्वक विशुद्ध और एकाग्र मनसे जलमें कमलमें यह मन्त्र सत्तर हजार जपनेसे सारससिद्धि होता है। इस साधनाके द्वारा साधक सहजमही सारसकी बोली समझ सकता है और सर्वज्ञ होता है।

कपोतसिद्धि ।

स्फेकार पूर्वमुद्धृत्य हुङ्कारद्वयमुद्धरेत् ।
स्वाहान्ता कथिता विद्या जपेदयुतमानत ॥
शाल्मलीमूलमासाद्य पूजयेत्सिद्धिकालिकाम् ।

तत सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥
कपोतस्य रव देवि स बुध्यति न सशय ।
कौबेरशब्दमुच्चार्य कूर्चबीज समुद्धरेत् ॥
सिद्धिकाली प्रपूज्याथ जपेदयुतपचकम् ।
तत सिध्यति देवेशि नात्र कार्या विचारणा ॥
कपोतस्य रव देवि स बुध्यति न सशय ।
कपोतविष्ठया मूर्ध्नि तिलकेऽपि कृते बुध ॥
भूत भावि वर्त्तमान सर्व वक्ति यथातथम् ॥

अब कपोत (कबूतर) सिद्धि कही जाती है (स्फे हुँ हुँ स्वाहा) यह मन्त्र दश हजार जप करे और शाल्मली वृक्षकी जडमे बैठकर सिद्धिकालिका देवीकी पूजा करे । इस प्रकार करनेसे कपोत सिद्ध हो जाता है । वह साधक सहजमही कबूतरका शब्द समझ सकता है । अन्य प्रकारसभी यह साधना होती है । अर्थात् प्रथम सिद्धिकाली देवीकी पूजा करके (ॐ कौबेर हुँ) यह पञ्चाशत सहस्र (पचास हजार) जपना चाहिये । इस प्रकार करनेसे पारावतसिद्धि होती है । इस साधनासे कबूतरकी बोली समझ सकता है । कपोतसिद्धि कर कबूतरकी बीटद्वारा

ललाटमे तिलक करनेसे क्या भूत, क्या भविष्यत् और क्या वर्तमान तीनों कालकी घटना जान सकता है ।

वीर्यामोघीकरणम् ।

भाद्रमासि रवौ पुष्ये ग्रहणीय प्रयत्नत ।
करे बद्धा तु रात्रौ च सप्तपर्णफल शुभम् ॥
प्रत्यह लक्षमानेन प्रजपेन्निशि सयत ।
षड्भिर्वर्षैश्च सिद्धि स्यान्नात्र कार्या विचारणा ॥
तत्फल वदने स्थाप्य भवेद्धै दारसङ्गत ।
वन्ध्या वा काकवन्ध्या हि नष्टवीर्यस्तु य पुमान् ।
सुरूप लभते पुत्र दीर्घजीविनमेव च ॥
मत्रस्तु । क्काँक्काँलिल्लाँपूस पुत्रं दापय २ स्वाहा ॥

भाद्रमासीय पुष्यनक्षत्रयुक्त रविवारमे सप्तपर्ण (सतोना) वृक्षका फल लाकर बाहुमे बधनपूर्वक रात्रिके समय 'का का' इत्यादि मन्त्र एक लाख जपना चाहिये प्रतिदिन इस प्रकार जप करना चाहिये। छ वर्ष इस प्रकार करनेसे मन्त्र सिद्ध होता है। इस भाति मन्त्र सिद्ध होनेपर नष्टवीर्य पुरुष अथवा काकवन्ध्या वा वन्ध्या नारीभी सुरूप और दीर्घजीवी पुत्र प्राप्त करती है ।

बालकक्र द गनिवारककवचम् ।

रुं देवी चण्डिका पातु ह्री ह्ली शाकिनी हाकिनी।
क्ष्रीं क्ष्रीं ह्रूं फट् रोदन सवर सवर तथा ॥
कवचस्य प्रसादेन धारणाच्छ्रवणात्तथा ॥
स्थिरो भवति बालश्च सन्त्यज्य रोदन ध्रुवम् ॥

'रु देवी ' इत्यादि कवच धारण वा श्रवण करनेसे इस कवचके प्रसादसे बालक बालिकाका रुदन करना थम जाता है और ऊपरके सब दोषोंकी शान्ति होती है ।

दैवविद्यालाभ ।

क्रीं क्री क्रूं क्रूं क्रूं क्रूंस हस खफ्रें ठ ठ ठ स्वाहा।
प्रत्यहमयुत जपेत् त्रिवर्षेण सिद्धि ।

' क्रीं क्रीं ' इत्यादि मन्त्र नित्य दश हजार जपना चाहिये । तीन वर्ष जपनेसे मन्त्रकी सिद्धि होती है । यह मन्त्र जपनेसे अत्यन्त दुर्बुद्धि मनुष्यभी सुबुद्धि प्राप्त करके सहजमेंही अत्यन्त कठिन विषय शीघ्र समझ सकता है ।

षोडशीकवचम् ।

षोडशीकवचस्यास्य ऋषिर्देवो जनार्दन ।

छन्दोऽनुष्टुप् च विज्ञेय मोक्षार्थे नियो॰ ॰ र्नृत ॥

इस षोडशीकवचके ऋषि जनार्दन, छ द अनुष्टुप् और मोक्षके निमित्त इसका विनियोग होता है ।

उग्रा मे हृदय पातु कण्ठ पातु महेश्वरी ।
उज्जटा नयने पातु कर्णौ च विन्ध्यवासिनी ॥
ललाटे विशाखा पातु शाकिनी राकिनी तथा ॥
लाकिनी बाहुयुग्म मे पादौ दिक्करवासिनी ॥
अन्यान्यङ्गप्रत्यङ्गानि षोडशी पातु सन्ततम् ॥

उग्रा मेरे हृदय, महेश्वरी कठ, उज्जटा नेत्र, वि ध्यवासिनी कान विशाखा, एव शाकिनी और राकिनी ललाट, लाकिनी दोना बाहु, दिक्करवासिनी दोनों पैर और अ या य अग प्रत्यङ्गकी षोडशी देवी सदा रक्षा करे ।

धनद भोगद देवि आयुरारोग्यकारणम् ।
यशस्य नरनार्योस्तु मनोमिलनकारणम् ॥
मोक्षद विघ्ननाशञ्च नरनारीवशङ्करम् ॥

यह कवच, धनदायक, भोगदायक, आयुर्दायक आरोग्य

जनक, परमानन्द और मोक्षका देनेवाला है । इसके प्रसादसे स्त्रीपुरुषोंका परस्पर मन मिलजाता है । इसके द्वारा सब विघ्न दूर होते है और नरनारीको वशीभूत किया जाता है ।

सर्वव्याधिविघ्नप्रशमनकवचम् ।

श्रीसदाशिव उवाच ।

कवचस्य ऋषिर्देवि महारुद्रो महेश्वर ॥
छन्दोऽनुष्टुप् च विज्ञेय देवी ससारनाशिनी ॥
धर्मार्थकाममोक्षाणां विनियोगश्च साधने ॥

श्रीमहादेवजीने कहा कि हे देवि ! इस कवचके ऋषि मह रुद्ररूपी महेश्वर, छन्द अनुष्टुप्, देवता संसारनाशिनी देवी और धर्म, अर्थ, काम मोक्षके साधनमें इसका विनियोग है

ऐं क्लीं पातु शीर्षं मां शक्तिबीज तथा हृदि ।
ह्रें सौ पातु नाभिदेशे च सुन्दरी कण्ठदेशतः ॥
महेश्वरी सर्वगात्रे कौमारी दक्षिणे तथा ।
वैष्णवी पूर्वतः पातु उत्तरे सर्वमगला ॥
पश्चिमे पातु वाराही इन्द्राणी पातु नैर्ऋते ।
शून्येऽनलेऽनिले क्षेत्रे सर्वत्र भुवनेश्वरी ॥

ऐ क्लीं मे रे मस्तक, शक्तिबीज हृदय, हे सा नाभिदेश, सुन्दरी कण्ठ, माहेश्वरी सब गात्र, कौमारि दक्षिण दिशा, वैष्णवी पूर्व दिशा, सर्वमंगला उत्तर दिशा, वाराही पश्चिम दिशा, इन्द्राणी नैर्ऋत दिशा और भुवनेश्वरी शून्य (आकाश) अनल (अग्नि) तथा अनिल (वायु) एवं क्षेत्रमे रक्षा करें।

इदन्तु कवचं पुण्यं धारणाच्छ्रवणादपि।
न दुःस्वप्नो भवेत्तस्य न विभीषिकादर्शनम्॥
दूषितज्वरभीतिश्च न च पीडकपीडनम्।
संक्रामकव्याधिभयं कदापि न च जायते॥
अपस्माराद्रिरोगाणां वायून्मादादिनामपि।
स्त्रीरोगाणाञ्चैव देवेशि नाशनं कवचोत्तमम्॥
डाकिनीपिशाचीभूतदृष्टिविचारकं परम्।
बाणभयं वज्रभयं हिंस्रजन्तुभयं तथा॥
जलजन्तुभयञ्चैव क्षिप्रं नाशयते ध्रुवम्॥

इस पवित्र कवचको धारण वा श्रवण करनेसे दुःस्वप्न विभीषिक दर्शन, दूषित ज्वरका भय, अत्याचारीका पीडन,

सङ्काभ-न ...धका भय, मिरगी इत्यादि रोग, वायुरोग, उमाद रोग, डाकिनी, पिशाची, भूतदिकी द्दष्टि, बाणभय, वज्रभय, हिंसकजतुका और जलजतुका भय तत्काल नष्ट हो जाता है ।

गृहगण्डीगृहरक्षा।

ॐ ह्री चण्डे चामुण्डे भ्रुकुटि अट्टाट्ट भीमदर्शने रक्ष रक्ष चौरेभ्य बज्रेभ्य अग्निभ्य श्वापदेभ्य दुष्टजनेभ्य सर्वेभ्य सर्वोपद्रवेभ्य गण्डी ह्री ह्री ठ ठ । अष्टोत्तरशताभिमन्त्रिता गण्डी दद्यात् ॥

यह मत्र एक सौ आठ बार पढकर जिस घरके चारा ओर रेखा खेंचदीजाय, उस रेखा और घरमे चोरादिके घुसनेका भय अग्निभय, वज्रभय, हिंसकजतुभय और दुष्ट मनुष्योंका भय नही रहता ।

क्रोधशाति ।

ह्री ठी ठी क्रोधप्रशमन ह्री ही हा क्ली स स स्वाहा ॥

यह मत्र प्रथम सिद्ध करलना चाहिये। वडके वृक्षपर आरोहण पूर्वक एक पैरसे खडा होकर नित्य रात्रिमे एक हजार जपना चाहिये इस प्रकार तान वर्षमें सिद्ध होगा।

यह म त्र सात बार पढकर पहरनके वस्त्रके एक कोनेमें एक गाठ लगादेवे। फिर क्या पुरुष और क्या स्त्री जिसको क्रोध हुआ है, उसके पास जानेसे उसका क्रोध शात हो जायगा।

द्वारोद्घाटनम्।

ज्वल ज्वल उज्ज्ल उज्ज्वल द्वार उद्घाटय उद्घाटय सर्ववित् कुट्ट कुट्ट स्मिथ स्मिथ सो सो चालिदि सर्वनिकृन्तनि स्पर्श स्पर्श ह्रीँ ह्रीँ क्लीँ क्लीँ जीँ जीँ स्वाहा। अष्टोत्तरशतमामन्त्र्यस्पृशेत्।

द्वार (दरवाजा), चाहे जिस प्रकारही बद क्यों न हो, यह म त्र एक सौ आठ बार पढकर द्वारको छूनेसे तत्काल द्वार खुल जाता है। यह म त्र एक कोड जपनेसे प्रथम सिद्ध करलेना चाहिये।

हिंस्रज तुस्तम्भनम्।

ॐ हुं गं ग्लौँ हरिद्रागणपतये वरवरदसर्वजन्तु हृदयस्तम्भन कुरु कुरु स्वाहा॥

प्रथम श्मशानमे बैठकर गुप्तभावसे नित्य रात्रिमें यह म त्र जपना चाहिये। दश लाख जप समाप्त होनेपर मन्त्रसिद्धि होती है। इसके पीछे यदि कभी सिंह, व्याघ्र, भालू, गीदड,

मन्त्रविद्या।

कुत्ता, सर्प वा अन्य कोई जन्तु आक्रमण करनेमें उद्यत हो तो यह मन्त्र केवल एक सौ आठ वार पढतेही वह जन्तु पीछेको भाग जायगा।

नारीसौभाग्यकरणम्।

कृष्णां चतुर्दशीं प्राप्य पुनरन्यां चतुर्दशीम्।
प्रत्यहं प्रजपेन्मन्त्रं नारीसहस्रसंख्यया॥
आधयो व्याधयस्तस्य नश्यन्ति नात्र संशयः॥
मन्त्रस्तु। ॐ ह्रीं कपालिनि कुलकुण्डलिनि मे
सिद्धिं देहि भाग्यं देहि देहि स्वाहा।

कृष्णा चतुर्दशीसे आरम्भ करके तत्परवर्ती कृष्णा चतुर्दशीतक नित्य एक हजार 'ॐ ह्रीं' इत्यादि मन्त्र जपना चाहिये। इस प्रकार करनेपर नारीके देहमें आधि व्याधि आक्रमण नहीं कर सकती। विशेष कर वह पतिपुत्रवती और चिरसौभाग्यवती होती है।

आपन्निस्तारणम्।

मार्गशीर्षे तु पूर्णायां शिखिमूलं समुद्धरेत्।
बाहौ शिरसि वा धार्यं विवादे विजयो भवेत्॥

अगहन मासकी पूर्णिमामे चिरचिरेकी जड लाकर बाहु अथवा मस्तकपर धारण करनेसे मुकदमे वा विवादमे जय होती है ।

इच्छानुसारदेहपरिवर्त्तनम् ।

रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यां मयूरास्ये विनि क्षिपेत् ।
भृङ्गीबीज मृद् कृष्णां कृष्णांभूमौ निधापयेत् ॥
तज्जातभृगीं सग्राह्या अर्चयेद्रक्तपुष्पकैः ।
तत्पुष्पकर्णे पुरुषो मयूरो दृश्यते जनैः ॥

कृष्णपक्षीय चतुर्दशीकी रात्रिमे एक मोरका मस्तक लाकर उसमें भृगराज (भाँगरा) के बीज और काली मिट्टी एकत्र स्थापन पूर्वक काली मिट्टीमे गाडकर रखदेवे । जब इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फूल निकले तब रक्त पुष्प द्वारा उस वृक्षकी पूजा करके एक फूल ग्रहण करे यह पुष्प कानमें रखनेसे वह सबको मयूररूपी दिखाई देता है ।

तद्योगे कृष्णमार्जारमुखे चैरण्डबीजकम् ।
तज्जातैरण्डबीजानामेक वक्त्रे निधापयेत् ॥
तं प्रपश्यन्ति मार्जारं मनुष्या नात्र संशयः ॥

कृष्णपक्षकी चौदशकी रात्रिमे काले बिलावके मुखम अडके बीज काली मिट्टीके साथ बोकर मिट्टीम गाडदेवे । जब इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल लग जॉय तब उनमेसे एक फल मुखमे धारण करनेपर वह सबको बिलावरूपी दिखाई देता है, इसम सन्देह नहीं ।

शृगालश्वानमेषाजवदने वापयेत्पृथक् ।
मयूरास्ये यथा भृंगी जाता सिद्धिश्च तादृशी ॥

शृगाल, कुत्ता, मेष और बकरा इन सब जीवाका मस्तक लाकर पृथक् पृथक स्थानम भृगराज (भाँगरा) के बीज और काली मिट्टीके साथ बोदेव । जब इन सब बीजोंसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल लगे उस काल एक फल मुखम धारण करनेसे वह लोकोको उक्त शृगालादि जीवाकी समान दिखाइ देता है ।

मृता च श्वपची नारी तस्या योनौ तु खादिरम् ।
कीलक निक्षिपेत्पश्चाद्दग्ध्वा भस्म समुद्धरेत् ॥
तेनैव तिलक कृत्वा श्वपचारूपभृद्भवेत् ॥

मरीहुई व्याधस्त्रीके मूत्रस्थानमें एक टुकडा खैरकी लकडी प्रवेशित करदेवे फिर वह टुकडा निकालकर उसको जलादेवे ।

अन तर उसकी भस्मका कपालम तिलक करनेसे वह सबको याधरूपी दिखाई देता है।

शिग्रुबीजोत्थित तैल पारावतपुरीषकम्।
वराहस्य वसायुक्त शिखिमूल सम समम्॥
ललाटे तिलक तेन य करोति स वै जन।
पञ्चास्यो दृश्यते लोकैर्यथा साक्षात् सदाशिव॥

सेजनेके बीजोका तेल, कबूतरकी बीट, सुअरकी चरबी और चिरचिरेकी जड यह सब पदार्थ बराबर लेकर एकत्र पीसकर ललाटमे तिलक करे जो व्यक्ति इस प्रकार तिलक करता है वह साक्षात् महादेवजीकी समान पञ्चमुख दिखाई देता है।

सद्योहतस्य वीरस्य ग्राह्य चौरस्य वा शिरः।
तद्वक्त्रे कृष्णधुस्तूरबीज वाप्य समृत्तिकम्॥
रात्रौ कृष्णचतुर्दश्यामाषाढे भैरवं यजेत्।
नानाविधोपहारेण पुष्पधूपाक्षतादिभि॥
शिर खनेत्कृष्णभूमौ भुक्तोच्छिष्टेन सेचयेत्।
दीप रात्रौ सदा दद्यात्सूत्रवत्याज्यसंयुतम्॥
सफलन्तु भवेद्यावत्तावद्वृक्षोंश्च पूजयेत्॥

ग्राह्य कृष्णचतुर्दश्या बलिं दद्याच्च कुक्कुटम्
पञ्चाङ्ग पेषयेत्तस्य वटिका कारयेद्दृढाम् ।
ललाटे तिलकं कुर्यात्स नरो दृश्यते जनैः ॥
तादृशस्तु सहस्राक्षरूपो नैवात्र संशय ॥

सद्योहत किसी वीर पुरुष का अथवा चोरका मस्तक लाकर उसके मुखमे काले धतूरेके बीज मिट्टीके साथ बोवे। फिर औ(आषाढके महीनेकी कृष्ण पक्षीय चौदशकी रात्रिमें पुष्प धूप और अक्षतादि अनेक उपहारसे भैरव देवकी पूजा करके का० मिट्टीमे इस मस्तकको गाड देना चाहिये। फिर भोजन करनेपर कुल्लेके जलसे सींचकर रात्रिमे घीका दीपक देवे इस प्रकार जबतक इस बीजसे वृक्ष उत्पन्न होकर फल न लगे तबतक इस स्थानमे दीप दान और पूजा करे। फिर कृष्णपक्षीय चौदशकी रात्रिमें भैरवकी पूजा और मुर्गेकी बलि देकर इस वृक्षका पञ्चाग अर्थात् फल, मूल, पुष्प और छाल लेकर एकत्र पीसकर दृढ गोली बनावे यह गोली घिसकर ललाटमे तिलक करनेसे वह साक्षात् इन्द्रकी समान सहस्र लोचन दिखाई देता है।

द्रव्यविनाशनम् ।

गृह्णीयात्कदलीमूल पुष्यार्के भाद्रमासि च ।

सप्ताभिमन्त्रित देवि निक्षिपेद्रजनीमुखे ॥
सप्ताहाच्छस्यक्षत्राणां शस्य विनश्यति ध्रुवम् ।
गोमहिषीप्रभृतीना क्षीर नश्यति निश्चितम् ॥
वृक्षे क्षिप्त्वा महेशानि शुष्यति नात्र सशय ।
मन्त्रस्तु । ॐ ह्रीं शोषय शोषय मारय मारय
क्लीं झट् ह्रीं ह्रूं स स ।

भाद्रमासके रविवारमे पुष्यनक्षत्रमे केलेकी जड लाकर (ह्रां ह्रीं) इत्यादि मन्त्रसे सात वार अभिमन्त्रित करके सध्यासमय वा यके खेतमे डालनेसे सात दिनमें खेत नष्ट हो जाता है । गाय भैस इत्यादिके अगपर डालनेसे दूध नष्ट होता है और वृक्षके ऊपर डालनेसे वृक्ष सूख जाता है हे महेशानि । इसमें कुछभी सदेह नहीं है ।

नष्टद्रव्यलाभ ।

वह्निकोषातकी वज्री श्वेतार्कगिरिकार्णिका ।
वचा पाठा च निर्गुण्डी कटुतुम्ब्याश्च मूलकम् ॥
निम्बकेशरबीजानि गोमूत्रे पेषयेच्छनै ।
तेन पादप्रलेपेन नष्ट नेत्रगत भवेत् ॥

चीता, कोषातकी (तोरई), वज्री (थूहर), सफेद आव अपराजिता (विष्णुक्रान्ता) वच, पाठा (पाढ) निर्गुंडी(समा॰ कटुतूंबी (कडवी तोंबी) इन सब वृक्षोंकी जड एव नीम अ नागकेशरके बीज यह सब पदार्थ एकत्र कर गोमूत्रके साथ धी धीरे पीसलेवे । फिर इन पिसे हुए पदार्थोंका पैरोंमें लेप क नेसे नष्टद्रव्य जिस स्थानमेंही क्यों न हो दीख जायगा

गुरुदर्शनम् ।

भौमावास्यातिथौ रात्रौ गत्वा श्मशानभूमिषु
अयुतं प्रजपेत्साधुर्गुरुपादपरायण ॥
जपान्ते ध्यानयोगेन प्राप्नोति गुरुदर्शनम् ॥
मन्त्रस्तु । ह्रीं हुं गुरो प्रसीद ह्रीं ॐ ॥

मङ्गलवार अमावस्या तिथिमें रातके समय अकेला श्मशा गमन पूर्वक गुरुके चरणकमलोंकी चिंता करके (ह्रीं हुं) इत्या मंत्र दशहजार जपना चाहिये यदि गुरुको स्वर्गवासी हुए ब दिनभी हो गये होंगे तथापि वे ध्यानयोगमें साधकको दर्शन देंग

त्रिकालदर्शनम् ।

पञ्चवटीमूले रात्रौ पञ्चमुण्डासने शुभे ।
उपविश्य जपेन्मन्त्री त्रिपक्षे यतमानस ॥